* श्रीः *

लखनऊ की क़ब्र

या

शाही महलसरा।

उपन्यास।

दूसरा हिस्सा।

श्री किशोरीलाल गोस्वामि लिखित।

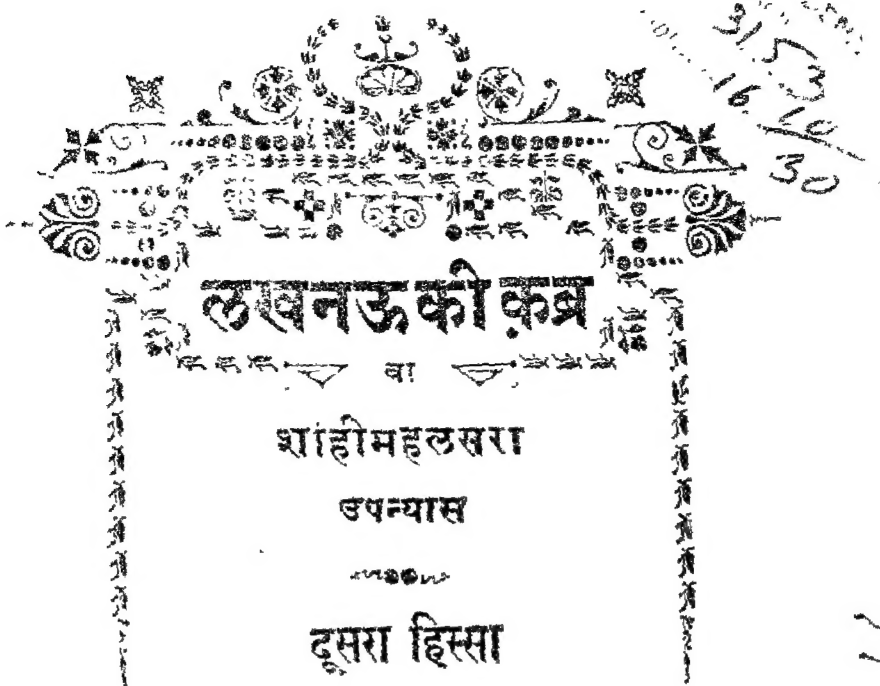
श्री छबीलेलाल गोस्वामि अध्यक्ष

श्री सुदर्शन प्रेस, वृन्दावन

द्वारा प्रकाशित।

दूसरी बार १००० } सन् १९२५ { मूल्य दस आने

। श्री ॥



लखनऊ की क़ब्र

वा

शाहीमहलसरा

उपन्यास

दूसरा हिस्सा

श्री किशोरीलाल गोस्वामी लिखित।

श्री छबीलेलाल गोस्वामी अध्यक्ष

श्री सुदर्शन प्रेस वृन्दावन द्वारा प्रकाशित।

दूसरी बार १०००] सन् १९२५ [मूल्य छ आने ।

॥ श्रीः ॥

लखनऊ की क़ब्र

वा

शाही महलसरा

दूसरा हिस्सा

पहिला बयान ।

"तिहारे सैयां घूंघर वाले बाल !" मेरे कानों में इस ठुमरी की रसीली धुन, जोकि किसी सुरीले गले की गिटकिरी में पगी हुई थी, पहुंची; जिसके पहुंचते ही मेरी बेहोशी, या यों कहूं कि नींद दूर हुई और मैंने आंखें खोलकर देखा कि मैं एक बहुत ही भड़कीले और सजे सजाये कमरे में मखमली छपरखट पर लेटा हुआ हूं और एक बहुत ही हसीन नाज़नी मेरे चेहरे के करीब अपना मुंह लाकर मुझे प्यार भरी चितवन से निरख रही है !!!

यह देख कर मैंने एकबेर फिर आंखें बन्द करलीं और कुछ देर के बाद जब फिर आंखें खोलीं तो उस कमरे में किसी को न पाया और चारों ओर बखूबी देखकर यही तसौवर किया कि यह जगह बिलकुल नई है और यहांपर मैं आज के पहिले कभी नहीं आया हूं !

मैं पलंग पर उठ बैठा और अंगड़ाई लेलेकर अपनी खुमारी दूर करने लगा। उस वक्त कुल बातें मेरे ध्यान में आने लगीं और आसमानी की खौफ़नाक शकल मेरी आंखों के सामने घूमने लगी। मैंने दिल

ही दिल में ग़ौर किया कि; याखुदा ! इस बला से मैं कब छुटकारा पाऊंगा और क्योंकर खुशी खुशी अपने घर पहुंचकर खुशियां मनाऊंगा ! लेकिन यह ख़याल होतेही मैंने दिलमें कहा कि जबतक प्यारी दिलारामका पता न लगे,मेरा घर जाने या किसी किस्मकी खुशियां मनाने का इरादा करना महज़ हिमाकत और बे फ़ाइदे है !'

गरज़ यह कि इसी तरहके ख़यालोंमें मैं देरतक उलझा रहा। उस कमरे में रौशनी हो रही थी, इसलिये सामने की दीवार पर टंगी हुई घड़ी में देखा कि तीन बज कर पैंतालीस मिनट हुए हैं यह देख कर मैंने सोचा कि अगर मैं कई दिनों तक बेहोशी के आलममें मुबतिला न रहा होऊं तो मुझे इस कमरेमें आये एक पहर से जियादह देर नहीं हुई होगी !

इसके बाद मैंने चाहाकि पलंगसे उठूं और उस सूफ़ियाने कमरे की हर एक चीज़ को बारीक नज़र से देखूं कि इतने ही में एक खटके की हलकी आवाज़ मेरे कानों में पहुंची और मैंने नज़र उठा कर देखा कि गोया वही शैतान की नानी आसमानी मेरे रूबरू चली आ रही है ! ! !

— यह देखकर एक मर्तबः तो मैं घबरा गया, लेकिन फिर अपनी पस्त हिम्मतीको दूर करके मुस्तैदी के साथ पलंग पर बैठा रहा और यह आसरा देखने लगा कि देखूं, अब यह पाजी बुड्ढी क्या रङ्ग लाती है !

मैं चुप चाप अपनी जगह पर बैठा रहा इतनेहीमें वह बुड्ढी मेरे पलंगके पायताने आकर खड़ी होगई और मुझे अपनी खूंखार आंखों से बेतरह घूर कर बोली,—

"यूसुफ़ ! यह क्या मैं ख्वाब देख रही हूं ? "

मैंने ज़रासा मुस्कुराकर कहा,—"शायद ऐसा ही हो ! "

वह—"ओफ़ अभी तक तू शाही महलसराके अन्दर मौजूद है ? "

मैं—"मुझ जैसे किस्मतवर शख़्स के लिये इससे बिहतर और कौनसी जगह हो सकती है ? "

वह, (कुदकर) " बड़े अफसोस का मुकाम है कि तेरी मौत तुझे मुतलक भूल गई है। "

मैं,—" ऐसा ही मैं भी तेरी निस्बत सोचता हूं और ताज्जुब करता हूं कि तुझ जैसी शैतान अब तक क्यों कर मलकुलमौत के निवाला होने से बच रही है ! "

वह,—" मैं तेरा खून पीये बगैर भला क्यों कर दुनियां से कूच कर सकती हूं ! "

मैं,—" लेकिन, आसमानी ! मेरा कुछ इरादाही और है ! यानी तेरे जिस्म में जईफ़ी की वजह से खून के न रहनेके सबब मैं तेरे खून का ख़ाहां नहीं हूं, लेकिन इतनी तमन्ना मुझे जरूर है कि खुदा वह दिन मुझे जल्द दिखलाए कि मैं तेरी बोटियों का ज़ायका चील कव्वों को चखा सकूं ! "

मेरी इस बात को सुनकर आसमानी शेरनी की तरह तड़प उठी और अपने हाथों को ज़ोर से मलकर कहने लगी,—" कम्बख्त, तू यक़ीन रख कि तेरा आख़िरी वक्त अब बहुत ही क़रीब है और बहुत जल्द तू मलकुलमौत का निवाला हुआ चाहता है। "

यह सुन, मैं खिलखिला कर हंस पड़ा और बोला,—" नहीं, हर्गिज़ नहीं, ऐसा कभी [illegible] नहीं सकता कि मैं दुनियां से कूच करूं और तू सही सलामत [illegible] जागती बरक़रार रहे।"

वह कहने लगी,—" [illegible] देखा जायगा। "
मैंने कहा,—" क्या देखा जायगा ? "

वह—" यही कि तू थोड़ी ही देर में गिरफ्तार होकर बादशाह के रूबरू पेश किया जायगा। इस के बाद तेरी जान एक संगदिली के साथ ली जायगी; क्या इस पर तूने अब तक मुतलक गौर नहीं किया है ! "

मैं,—" मैं ऐसी फ़िज़ूल और बेबुनियाद बातोंपर कभी गौर करता ही नहीं, और अगर ऐसा मौका आन पड़ेगा तो मैं ख़ाली थोड़ेही

मरूंगा। यानी तुझे भी अपने साथही लेता चलूंगा।"

वह,…" इसके क्या मानी!"

मैं,—" यही कि मैं बादशाह के रूबरू यह बात साफ़ साफ़ कह दूंगा कि जहांपनाह! मुझे यही कुटनी शाही महलसरा के अन्दर लेआई है।"

वह,—" इस पर यकीन कौन करेगा?"

मैं,—" बादशाह!"

वह,—"तेरी इस बात का सुबूत क्या है?"

मैं,—सुबूत मैं बादशाह के रूबरू पेश करूंगा।"

वह,—" ज़रा मैं भी सुनूं।"

मैंने इस पर दिलही दिल में सोचा कि अब इससे क्या कहूं! खैर, मैंने कुछ सोच लिया और चट कहा,—"तुझपर अभी वह बात नहीं ज़ाहिर किया चाहता।"

वह,—" तू ज़ाहिर क्या ख़ाक करेगा! कोई सुबूत हो,तब तो!"

मैंने कहा,—" खैर, यह बात तभी ज़ाहिर होगी, जब मैं बादशाह के रूबरू खड़ा होऊंगा। मगर ख़ैर, सुन आसमानी! मैं मौत से मुतलक नहीं डरता। क्योंकि अगर मैं इससे ज़राभी डरता होता तो इस दिलेरी के साथ तेरे हमराह शाहीमहल के अन्दर कभी न आता और अगर आया भी था तो अब तक कभी का बाहर निकल गया होता। लेकिन जब कि मैं इस दिलेरी और जवांमर्दी के साथ महल-सराके अन्दर अपना डेरा डाले हुए हूं तो तुझे खुद समझना चाहिये कि मैं मौत से मुतलक नहीं डरता और इस बात की उम्मीद रखता हूं कि बादशाह जब मेरा उज़्र सुनेगा तो मुझे फ़ौरन छोड़ देगा और चील कव्वों के लिये तेरा कीमियां करादेगा।"

इसका कुछ जवाब वह दियाही चाहती थी कि वही नाज़नी. जिसे मैंने आंखें खोलकर अपने पलंग के पास देखा था, या जो कि उस दरवाज़े में तख्त के ऊपर बैठी थी; यानी जिसने मुझे आसमानी

का ख़त दियाथा कमरेके अन्दर आई और आसमानीकी ओर वेतरह घूरकर बोली,-'कम्बख्त,तूमेरे कमरेके अन्दर क्या समझकर आई ?"

उस नाज़नीको देखतेही आसमानी सर्द होकर कांपने लग गई थी इसलिये लगती हुई ज़बान से बोली,—" हुजूर! इस चोट्टे को गिरफ्तार करने मैं यहां आई हूं!"

यह सुनकर उस नाज़नीने एक भरपूर तमाचा उसके बांए गाल पर जमाया जिसके लगतेही वह चक्कर खाकर कमरे के फर्श पर अपना गाल पकड़ कर बैठ गई और कुछ देरके बाद बोली,-' तो हुज़ूर" मुझे क्या हुक्म होता है ?"

यह सुनकर उस नाज़नी ने एक लात उसे मारी और कहा,— "जहन्नुम में जा।"

वह,—"हुज़ूर, अगर मैं यह जानती होती कि यह चिड़िया हज़रत के तीरे मिज़गां का निशान हो चुकी है तो इसपर मैं हर्गिज़ नज़र न डालती।"

"और न तेरी मलका ज़हूरन!" इतना कहकर उस नाज़नीने एक लात उसे लगाई और,और कहा,—

"बस, अब जल्द उठ और यहांसे अपना काला मुंहकर;औरयाद रखकि अगर अब सिवाय तैने फिर कोई शरारतकी तो यही कातिल छुरा (दिखला कर) तेरे कलेजेके पार तक पहुंचा दीया जायगा।"

गरज़ यह कि शैतानकी नानी आसमानी फ़ौरन उठी और वहांसे चलदी। उसके जाने पर मैं पलङ्गसे उठ खड़ा हुआ और बोला,— "हुज़ूर तशरीफ रक्खें!"

मेरे, उस सवाल को सुनकर वह नाज़नी खिलखिला कर हंस पड़ी और बड़ी मुहब्बत के साथ मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर उसने कहा,—

"जनाबमन! चोचले रहने दो और मुझे अपना एक सच्चा दोस्त समझकर वैसीही गुफ्तगू किया करो जैसी दोस्तोंमें हुआ करतीहै।

उस परी की यह बात सुनकर मैं बहुतही चकराया और दिलही दिलमें कहने लगा कि या इलाही ! इस अजीबोग़रीब महल्सरा में तो मुझे बहुत से दोस्त मिले ! अल्लाह्आलम ! जिसके साथ कभी की जान पहिचान भी नहीं, वह भी मेरा दोस्त बन रहा है ! खैर मैं उस परी को उसी पलंग पर बैठाने लगा, लेकिन वह उस पर न बैठकर दूसरी कुर्सी पर बैठी और मुझे पलंग पर बैठने का इशारा कर उसने कहा,—

"दोस्त यूसुफ़ ! तुम इस कम्बख्त आसमानी से ज़रा न डरना, क्योंकि यह कम्बख्त तुम्हारा कुछ नहीं कर सकती।"

इसपर मैंने शाहीमहलसरा के अन्दर आसमानी के ज़रिये से आने और सताए जाने के सारे किस्से को मुख़्तसर तौर पर बयान करके कहा,—"अब हज़रत ! खुद गौर करें कि जो आसमानी आपके पास उस दरबार में पहुंची और यहां भी आई, उससे मैं क्योंकर बेख़ौफ़ हो सकता हूं ?"

उसने कहा,—"तुम्हारी और आसमानी की सारी दास्तान मुझे मालूम है,इसी से तो मैं कहती हूं कि यहां पर वह तुम्हारा कुछ भी नहीं कर सकती।"

मैंने कहा,—"लेकिन साहब ! बादशाह सलामत तो मेरा सूराग ज़रूर ही लगाएंगे !"

उसने कहा,—"अजी,बादशाह को इन बातोंके सूराग लगानेकी न ज़रूरत है, न फ़ुर्सत है और न वक्त है ! उन्हें तो इन बातों की मुतलक ख़बर ही नहीं है कि महल के अन्दर क्या हो रहा है।"

मैंने कहा,—"लेकिन उनसे अगर किसी शख्स ने यहां पर मेरी मौजूदगी का हाल कहा तब तो कयामत बरपा होगी।"

उसने कहा,—"अव्वल तो ऐसा होहीगा नहीं,और काश अगर ऐसा हो भी तो मैं क्या गाफ़िल रहूंगी. हर्गिज़ नहीं, इसलिये तुम [illegible] हो और मुझे अपना दोस्त समझो।"

ये बातें सुन कर मैंने नाज़नीन से कहा,—"तो क्या मेरा कुछ भी हाल अभी तक बादशाह को मालूम नहीं है ?"

वह,—"नहीं, कुछ भी नहीं।"

मैं,—"लेकिन आसमानी तो आपके दरबार में मुझे बादशाह के हुक्म बमूजिब गिरफ़्तार करने आई थी न!"

वह,—"यह सब उसकी सिर्फ़ बातें और [illegible] थे, और इसकी बुनियाद कुछ भी न थी।"

मैं,—"ठीक! लेकिन उस वक्त उस जलसे में बहुतसी औरतें मौजूद थीं; अगर उनमें से किसी औरत ने बादशाह से उस दिन की वारदात का हाल कहा तो क्या होगा ?"

वह,—"अव्वल तो इतनी जुर्रत किसीकी नहीं है कि वह मेरे ख़िलाफ़ बादशाह से कोई लफ़्ज़ भी कह सके, और अगर किसीने इस किस्म की हरकत की भी तो मुझे वह हाल फ़ौरन मालूम हो जायगा और मैं [illegible] तरह उसका सारा बंदोबस्त कर लूंगी।"

मैं,—"लेकिन, जो आसमानी आपसे न दबी, वह क्या कोई बात उठा रक्खेगी!"

वह,—"वह सिर्फ़ तुम्हें धमकी देकर तुम्हें अपने हाथ में किया चाहती थी, लेकिन अब वह यह बात बखूबी समझ गई है कि मेरा तुम्हारा तअल्लुक किस तरह का है, इसलिये मुझे उम्मीद कामिल है कि अब वह हर्गिज़ इस तरह धोखे से तुमको फुसलाने का कभी ख़्वाब में भी कस्द न करेगी, और अगर करेगी भी तो नाकामयाब होगी; क्योंकि तुमको मैं ऐसी पोशीदा जगह में रक्खूंगी कि जिसका पता आसमानी क्या, बादशाह को भी न लग सकेगा।"

मैं,—"लेकिन, अगर आप मुझे इस शाहीमहलसरा की खुल-[illegible] से बाहर कर दें तो मैं आपका निहायत ममनून अहसान होऊंगी।"

वह,—"मैं तुमसे कह चुकी हूं और फिर भी कहती हूं कि तुम मुझे अपना दोस्त समझो और "आप, आप" के सिलसिले को बन्द कर

के दोस्ताना बरताव रक्खो। ख़ैर यह तो जो कुछ है, सो हई है, अब मतलब की बात यह है कि अगर तुमको दिलाराम के दस्तयाब करने की ख्वाहिश हो तो यहांसे बाहर जाने का कस्द हर्गिज़ न करो।"

इस नाज़नी की ज़बानी यह बात सुन कर मैं हैरान होगया और हैरत से पूछने लगा कि,—"क्या, तुमको दिलाराम का हाल मालूम है ?"

इस पर उसने कहा,—"मुझे तुम्हारा या दिलाराम का सारा हाल मालूम है और मैं तुम्हें यकीं दिलाती हूं कि अगर ख़ुदा ने चाहा तो मेरेही ज़रिये तुम उसे पा सकोगे।"

इतना सुनतेही मैंने प्यार के साथ उस परी का हाथ अपने हाथों में लेकर चूम लिया और कहा,—"तो क्या मिहरबानी करके इस वक्त इतना तुम बतलाओगी कि मेरी दिलरुबा दिलाराम कहां है ?"

उसने कहा,—"ज़रूर बतलाऊंगी, लेकिन अभी नहीं; क्योंकि अभी उसके हाल बतलाने में तुम्हारा और उसका बड़ाभारी नुकसान होगा, यहां तक कि, अजब नहीं कि तुम फिर उसे ताकयामत न पासको और उसकी जानोंपर आबने।"

नाज़रीन! यह एक ऐसी बेढब बात थी कि जिसे सुनकर मैंने फिर उस ज़िक्र को छोड़ दिया और इधर उधर की बात करने लगा। कुछ देर के बाद, जब मैं मामूली कामों से फ़ारिग होचुका तो उस परी के साथ मैंने खाना खाया और दिनभर चौसर गंजीफ़े में फंसा रहने के बाद रात को बड़े आराम से सोया।



दूसरा परिच्छेद ।

दूसरे दिन जब मेरी आंखें खुलीं तो मैंने अपने तईं फिर उसी पुतलोंवाली कोठरी में पाया, जिसमें कि पेश्तर मैं कुछ दिनों तक रह चुका था। इस अजीब तमाशे को देखकर मेरी तो अक्ल हैरान हो गई और मैं रह रह कर यही सोचने लगा कि या खुदा! अब तक क्या मैं ख़्वाब देख रहा था! लेकिन हज़ारहां कोशिशें करने पर भी मैं उसे ख़्वाब न मान सका, क्योंकि वह तमाशा ही ऐसा था कि जिसे ख़्वाब समझना इन्सान के लिये बिल्कुल नामुमकिन है।

ख़ैर, मैं चारपाई पर उठ बैठा और रौशनदान से आते हुए हलके उजाले में चारों तरफ़ नज़र दौड़ा कर उस कोठरी को देखने लगा। वह कोठरी बिल्कुल झारी बुहारी साफ़ थी, पलंग की चादर और तकिए के गिलाफ़ धुले थे और मेरी किताब वगैरह कुल चीज़ें करीने से एक तिपाई पर रक्खी हुई थीं। यह सब था, लेकिन आज उस कोठरी के हर चहार तरफ़ जो एक पुतले बने हुए थे, उनमें से तीन ओर के तीनों पुतलों के हाथों में तलवारें न थीं, सिर्फ़ एक उसी पुतले के हाथों में तलवारें थीं, जिधर से मैं हम्माम में जाता था।

यह हाल देखकर मुझे बड़ा ताज्जुब हुआ और मैं चारपाई से नीचे उतर कर कोठरी में उन तलवारों को खोजने लगा, पर उनका उस कोठरी में कहीं नामोनिशान भी न था। पेश्तर जब मैं उन पुतलों के क़रीब जाता था तो उनके हाथ उठते थे और वे तलवारें तानते थे, लेकिन अब तो उनके हाथों में तलवारें नहीं थीं, और न वे अपना हाथ ही उठाते थे। पेश्तर जब एक मर्तबः उन सभों के हाथों से तलवारें मैंने ले ली थीं, तब भी उन सभों ने हाथ उठाए थे और मैं उनके सिरों पर की कील ऐंठ कर उन रास्तों से कोठरियों में गया था, लेकिन आज हज़ारों कोशिशें करने पर भी मैं उनके सिरों पर की उन पेचों का न घुमा सका और न उनके हाथों को ही ज़रा हिला सका; यानी आज वे सचमुच बेजान पुतले की तरह बिना हिले डोले खड़े थे।

इन बातों को देखकर मैंने समझा कि शायद उसी परीज़ाद ने, जो कि मुझे बादशाह और सुलताना के दरबार में ले गई थी, इन तीन रास्तों को किसी हिकमत से बन्द कर दिया होगा! इसके बाद मैं पलंग के नीचे घुस कर बहुत कुछ तकीब करने लगा, लेकिन सारी हिकमत बेकार हुई और वहां पर जो सुरंग थी, उसके दरवाजेका पता मैं न लगा सका, क्योंकि उसका हाल मुझे कुछ भी मालूम न था। इसके बाद मैं उस पुतलेकी जानिब चला, जिसके हाथोंमें तलवारें थीं। उस मुकाम पर पैर रखतेही, जहां पर कि पैर रखने से वह तलवारें तानता था, मैं पीछे लौटा और साबिक दस्तूर दीवार से सटकर उसके पास पहुंचा और उसके हाथोंसे तलवारें ऊंची फिर। मैं उसी हिकमत से, जिसका बयान मैं पेश्तर कर आया हूं, हम्माम में पहुंचा।

वहां जाकर मैं क्या देखता हूं कि उसकी भी निहायत तबीयतदारी के साथ सफाई की गई है और जिन चीज़ों की वहां पर ज़रूरत हो सकती है, वे सभी चीजें निहायत खूबी के साथ करीने से रक्खी हुई हैं। वे सभी चीजें साफ़ वो सुथरी हैं और सजानेवाले की तबीयतदारी का बयान खुद ब खुद कर रही हैं।

यह सब देख सुन कर मैं निहायत खुश हुआ और ज़रूरी काम से फुर्सत पाकर खुशबूदार तेल बदन में मालिश करने लगा। इसके बाद मैं जब लुङ्गी पहन कर हम्माम में उतरा तो उस हौज़का खुशबूदार पानी मैंने उतनाही गर्म पाया, जितना कि मैं सह सकता था। यह एक नई बात थी, क्योंकि आज के पेश्तर मैंने कभी हौज़ में गर्म पानी नहीं पाया था। और इस खूबी का तो बयान मैं कर ही नहीं सकता कि वह शख्स कितना समझदार होगा जिसने इस अन्दाज़से पानी में गर्मी पैदा की है कि जो मेरे मिज़ाज के मुआफ़िक है।

ग़रज़ कि इस तौरसे गुसल करनेपर बदनकी सारी हरारत उतर गई और फ़ुर्ती के साथ ताज़गी मालूम देने लगी। मैंने उम्दे और धुले हुए उम्दः कपड़े पहिने, जो मेरे लिये वहांपर पहिले ही से मौजूद थे। बाद

इसके मैं उस डेस्क के पासवाली कुर्सी पर जा बैठा, जिसपर लिखने पढ़ने के सामान दुरुस्त थे। लेकिन अल्लाह! यह कैसी दिल्लगी है कि लिखने पढ़नेके कुल सामान तो मुहैया हैं लेकिन कलम नदारत!!! यह तमाशा देखकर मैं बेतहाशा हंस पड़ा और उठकर उस हम्माममें सूईकी तरह कलम ढूंढने लगा, लेकिन जब कि कलमदानही में कलम न थी तब वह क्या हम्माम में ढूंढ़ने पर कहीं मिल सकती थी? आखिर मैं हैरान होकर झाड़ू की तलाश करने लगा, लेकिन वह तो क्या, एक तिनका भी न मिला कि जिससे कलमका काम लिया जा सकता। फिर तो मैंने जब बहुतकुछ खोज ढूंढ करने परभी कोई ऐसी चीज न पाई कि जिससे कलमका काम लिया जासकता तो मैं देर तक कुर्सी पर बैठा उस दिल्लगीबाज की इस अजीब दिल्लगी पर हँसता रहा। यकबयक मेरे ध्यान में एक बात आई, जिसके याद आतेही मैंने अपनी बेवकूफी पर निहायत अफसोस जाहिर किया। बात यह थी कि जब कलम नहीं है तो उसका काम उंगली से क्यों न लिया जाय! यह सोचकर ज्योंही मैं दवात की तरफ हाथ बढ़ाता हूं तो क्या देखता हूं कि उसमें रोशनाई के एवज सिर्फ पानी भरा हुआ है।

अल्लाह आलम! यह देखकर मैं हंसने के बदले खिजला गया लेकिन फिर यह सोचकर मैं निहायत खुश हुआ कि वहशख्स मुझसे कहीं जियादा शऊरदार है। लेकिन अगर दवात में सिर्फ पानी ही रखना था तो फिर कलम के छिपाने की उसे जरूरत क्यों पड़ी? जान पड़ता है कि यह बात भी हिकमत से खाली न होगी। उसने कलम को कुछ समझ कर ही छिपाया होगा और उसकी यह हर्कत भी मतलब से खाली न होगी।

मैं भी पीछे हटने वाला न था, इस लिये मैंने दूसरा तरीका खत लिखने का निकला; यानी पानदान में से कत्थे और चूने को निकाल कर मैंने उस दावात में घोल कर रोशनाई तैयार की और एक चन्द कागज उठाकर उस पर अपनी अंगुली से उसी नाज़नी के नाम एक

खत लिखना चाहा, जिससे इस मुकाम पर मेरी मुलाकात हुई थी लेकिन ज्योंही मैंने अपनी अंगुली दावात में डुबोई, एक क़हकहे की आवाज़ मेरे कानों में पहुंची; जिसके सुनते ही मैंने जल्दी से अँगुली हटाली और उठकर इधर उधर देखनेलगा, लेकिन इस बात का पता मुझे न लगा कि यह आवाज कहांसे आई! इतना तो मैं ज़रूर समझ गया कि यह कहकहे की आवाज किसी नाज़नी के सुरीले गले से निकली है, लेकिन किस जानिब से वह आई, बहुत कुछ तलाश करने पर भी इसका पता न पा सका।

आखिर, झुंझला कर, मैंने उसीदावात को ज़मीन में पटक दिया हम्माम से मैं अपनी कोठरी में वापस आया! वहां आकर देखता हूं तो गरमागरम लज़ीज़ खाना तयार है।

भूख शिद्दत से लगीहुई थी इसलिये मैंने खाने की मेजके करीब कुर्सी पर बैठकर थालका ढकना खोला तो दिलको फरहत देनेवाली खुशबू सारी कोठरी में फैलगई और मुंहमें पानी भर आया। मैंने ज्योंही पुलाव की तश्तरी उठाई, उसके नीचे मोड़े हुए एक परचे पर मेरी नज़र पड़ी। चट मैंने उसे उठा लिया और उसे खोलकर देखातो उसमें बड़े बड़े हरूफ़ों में सिर्फ इतनी लिखा हुआ था,—

"आदाब अर्ज़ है!!!"

मैं इस मसखरे पन को देख कर खिलखिला पड़ा और साथ ही एक कहकहे की आवाज मुझे सुनाई दी। मैं फ़ौरन कुर्सीसे उठखड़ा हुआ और चारोंतरफ नजर दौड़ाने लगा, लेकिन किधरसे वहआवाज आई थी, यह मैं न जान सका।

लाचार, मैंने भी एक आवाज दी और जोर से पुकार कर कहा कि,—

"इस ग़मज़दे को, जान! सताना नहीं अच्छा"

लेकिन इस जुमले का मुझे कोई जवाब न मिला और मैंने भी फिर नाहक बकजाया करना मुनासिब न समझा। औरकुर्सी पर बैठकर

अपने हाथ की सफ़ाई दिखलाने लगा।

बाद खाना खानेके मैंने हुक्केपर चिलम रखकर धुवां उड़ाना शुरू किया और पलंग पर लेटेलेटे सोचने लगाकि अबमैं अपने तईं खुश-किस्मत समझूं या बदकिस्मत ! इस मर्तबः तो मैं देखता हूं कि मेरी तवाजः का इन्तेहा होगया है ! लेकिन इसका सबब क्या है ! क्योंकि एक तरफ यह खातिर और दूसरी जानिब यह कैद ! यह बात क्या है याखुदा,अगर मैं इस कैदसे छूटकरभी ऐसेही आरामके साथ अपनी जिन्दगी बसर करसकूं तो फिरमैं यही समझूंगा कि बादशाहमें और मुझमें कोई फ़र्क नहीं है। लेकिन जबतक आजादी मुझसे दूरहै और बर्बादीके दर्यामें मैं गर्क होरहा हूं,तब तक ये सब ऐशो आराम मुझे ज़हर से लगते हैं ! अफ़सोस, बेबसी की जंजीर ने मुझे इस कदर जकड़ रक्खा है कि जिसे काट कर फिर आज़ादी को गले लगाना मेरी ताकत से बाहर है।

योंहीं देरतक तरह तरहके खयालोंमें इसकदरमैं उलझा रहा कि कब मुझे नींद आगई, यह मैं नाजान सका, लेकिन जब मेरी नींद खुली तो कोठरीमें शमादान रौशनथा और खाना भी मौजूद था। मैं शमादान लेकर हम्माम में गया, लेकिन वहां जाने पर शमादान का लेजाना मुझे फ़ज़ूल मालुम हुआ, क्योंकि वहां पर भी कई चिराग़ रौशन थे, जोकि आज नई बात थी; चूंकि आज के पेश्तर रात के वक्त हम्माम में जब कभी मुझे जाने की ज़रूरत पड़ती, मैं रौशनी अपने साथ लेजाया करता था।

ख़ैर, मैं ज़रूरी कामो से फ़ुर्सत पाकर हम्माम से वापिस आया और एक किताब उठाकर पढ़ने लगा। उस वक्त तक मुझे भूख नहीं लगी थी,इसलिये खाने को तरफ मैंने देखा भी नहीं। दिनको मैं बखूबी सोचुका था,इसलिये ज़ियादह रात तकमुझे नींद न आई और मैं किताब की सैर में लगा रहा।

रात आधीसे ज़ियादहबीत चुकीथी,जब मैंने किताबको सिरहाने रख और दियेको गुलकरके सोने की ठहराई। मुझे चारपाई परलेटे

थोड़ीही देर हुई थी कि कोई खटके की आवाज़ मेरे कानों में सुनाई दी, जिसे सुनकर मैं चौंक उठा और चाहता था कि कुछ बोलूं, लेकिन यह सोचकर कि, वही दिल्लगीबाज़ नाज़नी मुझसे कुछ मज़ाक करने आई होगी, मैं ख़ामोश रहा।

फिर तो मुझे ऐसा मालूमपड़ा,गोया कई आदमी मेरी कोठरीमें चल फिर रहे हैं,यह जानकर मैं कुछ डरा,लेकिन मैं उसहालतमें,जब कि घर में अंधेरा था,किसी जानिबको भागनेकी राह नथी,मैं अकेला था और मेरे पास कोई हथियार मौजूद नथा,मैं क्या कर सकताथा! लाचार, किस्मत पर भरोसा रखकर मैं चुपचाप अपनी चारपाई पर पड़ा रहा और अजनबी शख्सोंकी हर्कत पर कान लगाए रहा।

कुछ देर बाद कुछ फुसफुसाहट सुनाई दी, जैसे आपसमें कोई बात चीत करता हो! लेकिन उस जुमले को या उसके मतलब को मैं मुतलक न समझा। फिरतो धीरे धीरे कुछ बात चीत साफ साफ सुनाई देने लगी, जिसका मतलब यह था,—

एक,—"देखो, वह मूज़ी यहीं चारपाई पर सोरहा होगा, बस चट उसे बेहोशी की दवा सुंघाकर यहां से उठा लेचलो।"

दूसरा,—"लेकिन, कहां लेचलूं, यह तो तुमने, बी! बतलाया ही नहीं?"

एक,—"इसमें बतलाने की क्या जरूरत है? इसे महलसरा के बाहर लेजाकर किसी निराली जगह में मारकर गाड़ देना।"

दूसरा,—"बिहतर ऐसाही करूंगा; लेकिन इनाम मिल जाना चाहिये।"

एक,—"आह, देर न करो और जल्द इस मुए को यहां से उठा ले जाओ, वरन फसाद बरपा होगा।"

दूसरा,—"लेकिन इनाम?"

एक,—"लाहौलबलाकूवत! अजी,मेरी बातों पर तुमको यकीन नहीं है! तुम्हारा इनाम,जोकि तुमसेकहा गयाहै,उसी जगहपर,उसी

वक्त मिल जयागा, जब तुम इस कश्श्ह्न को खपा डालोगे।"

दूसरा,—"लेकिन, बगैर पेश्तर इनाम लिये, मैं ऐसा ख़तरनाक काम हर्गिज़ न करूंगा, जिसमें अपनी जान का भी ख़ौफ़ लगा हुआ है।"

एक,—"आह, तुम इस बेशकीमत वक्त को नाहक ज़ाया कर रहे हो।"

दूसरा,—"अफ़सोस, तू मुझे कहां ले आई है! आह! आंखों पर पट्टी बँधी रहने के सबब यह मैं नहीं जान सकता कि मैं किस शकल वाली के साथ किस मुक़ाम पर आया हूं! तू मुझे चकमे देकर अपना काम निकाला चाहती है। क्यों, जब तू मुझे अन्धों की तरह इस घर के बाहर कर देगी, तो फिर क्या मुझे इनाम देने के लिये मेरे पास आएगी? हर्गिज नहीं; इस वास्ते बगैर इनाम लिये मैं इस ख़तरनाक काम में क़दम न रक्खूंगा। मैं इनाम से बाज़ आया, पस, जल्द मुझे यहां से रिहा कर और अपने काम के लिये किसी दूसरे शख्स को ढूंढ़।"

नाज़रीन! यह सुनकर वह पहिला शख्स कुछ झल्लाया और तब मैंने जाना कि वह बदकार आसमानी है और मुझे महलके बाहर ले जाकर मरवा डालने के लिये यह किसी भाड़े के टट्टू को बाहर से ले आई है! लेकिन वह टट्टू बिलकुल बुज़दिल था, या यों कहूं कि चालाक भी था। आह, यह मौका आसमानी के वास्ते बहुत ग़नीमत था, लेकिन मैं समझता हूं कि लालच में आकर वह मुफ़्तही में अपना काम निकालना चाहती थी और उसके एवज़ में एक कौड़ी भी इनाम नहीं दिया चाहती थी। मैं समझता हूं कि उस शख्स ने उसकी चालाकी बख़ूबी समझ ली थी, इसी से वह इनाम के बगैर पाए, उसके ख़ातिर ख़ाह काम करने पर राज़ी नहीं होता था।

हां, तो उस शख्स की वैसी बात सुनकर आसमानी झल्ला उठी और कड़क कर बोली,—"शैतान के बच्चे! अगर तूने मेरे हुक्म बमूजिब काम न किया तो यहां से हर्गिज़ बाहर न निकलने पाएगा और कुत्ते की मौत मारा जायगा।"

" लेकिन, पहिले मैं तो तेरा खून पीलूं। " यों कह कर शायद उस शख्स ने किसी हथियार का वार आसमानी पर किया, जिससे वह तड़प उठी और खूब जोर से चीख मारकर धम्म से ज़मीन में गिर पड़ी।

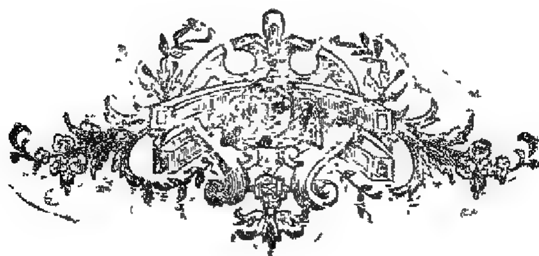
उसने कहा,—" आह, मेरे कलेजे में छुरी मारी! "

इसके बाद मेरी चारपाई के नीचे से कुछ खटके की आवाज़ आई, जैसी कि उसके दरवाज़े खोलने पर मैंने पेश्तर सुनी। इसके बाद किसी शख्स के दौड़ने की आवाज़ सुनाई दी और साथही वह शख्स, जिसने आसमानी के कलेजे में छुरी मारी थी, एक आह खैंचकर ज़मीन में गिर पड़ा और ज़ोर से कराह कर बोला,—

" आह, किस क़ातिल ने मेरे बाज़ू पर तलवार चलाई? "

इसके बाद थोड़ी देर तक उस कोठरी में बिलकुल सन्नाटा छाया रहा, फिर किसी चीज़ के घसीटने और धम्माके की आवाज़ सुनाई दी, इसके बाद चारपाई के नीचे वाली सुरंग के बन्द होने की आहट आई।

अल्लाह, यह क्या माजरा है! अफ़सोस, मैं कहां आ फंसा हूं! बस, इसी तरह के ख़यालों में देर तक मैं उलझा रहा, बाद इसके मुझे नींद आगई और सपने में भी मुझे आसमानी की नापाक रूह सताने लगी।



तीसरा परिच्छेद ।

सुबह जब मेरी नींद खुली,वक्त मामूली से ज़ियादह गुज़र गया था और मेरी कोठरी में बखूबी उजाला फैला हुआ था । आख़िर, मैं उठा और शमादान रोशन करके उस कोठरी की ज़मीन को खूब बारीक नज़र से देखने लगा,लेकिन वहां पर एक कतरा खून भी कहीं पर नज़र न आया और न यही जान पड़ा कि कल रात को इस कोठरी में कुछ फ़साद, या खूनरेज़ी होगई है !

इस तमाशे को देखकर मैं हैरान होगया और इसे भी ख्वाब समझने की कोशिश करने लगा, लेकिन मेरे दिल ने इसे मन्ज़ूर न किया और यही कहा कि यह ख्वाब हर्गिज़ नहीं है । देर तक मैं बैठा बैठा इन्हीं बातों पर ग़ौर करता रहा, लेकिन इन पेंचीली भूलभुलैयां का कुछ भी मतलब मेरी समझ में न आया । पेश्तर तो मैंने यह इरादा किया कि आज दिन भर हम्माम में न जाकर यहीं अड़ा रहूं और जो खाना लेकर आए, उसे गिरफ्तार करूं, लेकिन पेश्तर के हालात मुझे भूले न थे और यह मैं जानता था कि अगर मैं ऐसा इरादा करूंगा तो खाना लेकर कोई न आवेगा । आख़िर, मैं वक्त मामूली से ज़ियादह होने पर हम्माम में गया और वहांसे बहुत जल्द वापस आकर देखता हूं कि खाना मौजूद है ।

सो, रात के तमाशे और दिल की उदासी के सबब मेरी तबीयत खाना खाने की न हुई,लेकिन फिर यह समझ कर कि न खानेसे और भी नाताकती बढ़ेगी,मैं खाना खाने की मेज़ के पास कुर्सी पर जा बैठा और रकाबी के ढकने को खोल कर देखता हूं तो उस में एक खत नज़र आया । जब मैंने उसे उठा लिया और लिफ़ाफ़ा फाड़ कर पढ़ना शुरू किया । उस खत में जो कुछ लिखा था,उसकी नक़ल हम नीचे किए देते हैं । —

" जानेमन सलामत, "

" कल शब को किसी वजह से आपके आराम करने में खलल

पहुंचा होगा, और आपने कोई अजीब तमाशा देखा होगा, लेकिन उसकी असलियत कुछ भी न थी और दरअसल वह कुछ भी न था, इस वास्ते जो कुछ कल रात को आपने देखा सुना हो, उसका बिलकुल ख़याल अपने दिल से दूर कर दें और इस बात पर पूरा यकीन रक्खें कि आपकी मददगार दोस्त हर वक्त आपकी मदद के लिये आपके पास मौजूद रहती है। मुझे उम्मीद कामिल है कि अब आपको अपने दोस्त की सचाई पर यकीन हुआ होगा और अब आप अपने तईं हर वक्त बेख़ौफ़ समझेंगे। वक्त ज़रूरत पर आपकी दोस्त आपसे ज़रूर मिलेगी। फ़क़त।

"आपकी दोस्त, एक नाज़नी।"

पढ़ने के बाद उस ख़त को मैंने चाक कर फेंक दिया और ग़ौर करने लगा कि अल्लाह, यह तो अजीब किस्म की दोस्त नाज़नी है, जो सामने आने से मुंह छिपाती है और दूर ही से दोस्ती का दम भरती है! ख़त भी उसने ऐसे एंचपेंच से लिखा है कि जैसा चाहिए। यानी यह ख़त किसे लिखा गया, किसने लिखा, क्यों लिखा कहांसे लिखा, या उसमें किस बात के लिये इशारा किया गया, इन बातों का मतलब किसी अजनबी की समझ में कभी आही नहीं सकता। मैं उस शख़्स की अक्लमन्दी पर, जिसने इस किस्म का ख़त लिखा था, निहायत खुश हुआ और उसे दिलही दिल में शाबाशी देकर कुछ सोचने लगा।

देरतक मैं खाने की मेज़वाली कुर्सीपर बैठा बैठा तरह तरह की बातें सोचने लगा। सोचते सोचते मैंने गुस्से में आकर खाने की रकाबी को उठाकर ज़मीन में पटक दिया और दिलही दिलमें इस बात का पक्का इरादा किया कि चाहे जान जाय या रहै, लेकिन जब तक उस नाज़नी की सूरत न देखलूंगा, जो कि मेरी दोस्त बनती है, खाना हर्गिज़ न खाऊंगा।

इसके बाद मैं पलंगपर लेट रहा और देर तक तरह तरह के

ख़यालों में, जिनका बयान मैं नहीं कर सकता, उलझा रहा। फिर मैंने सोचा कि गो, मेरी दोस्त नाज़नी बड़ी समझदार है इस वास्ते खाना न खाने या उसके फेंक देने के सबब को वह खुद समझ जायगी, लेकिन फिरभी मैंने उस पर अपने दिलका हाल ज़ाहिर कर देना मुनासिब समझा। चुनांचे मैंने किताब में से एक टुकड़ा सादा कागज़ फाड़कर पान की पीक से उस पर सिर्फ इतना ही लिखा कि,

"अज़ीज़ दोस्त! अब मैंने यह पक्का इरादा कर लिया है कि जब तक आपका दीदार नसीब न होगा, मैं आपके आबोदाने से किसी किस्म का सरोकार न रक्खूंगा।"

बस, फ़कत इतनाही लिखकर मैंने उस परचे को भी वहीं पर फेंक दिया, जहां पर खाना पड़ा हुआ था; और सोचने लगा कि देखूं अब इसका क्या नतीजा निकलता है!

फिर मैं किताब देखने लगा, लेकिन दिल तो ठिकाने थाही नहीं, इसलिये उसे मैंने रख दिया और करवटें बदलना शुरू कीं। देरतक मैं इसी तरह अपने दिल के फफोले फोड़ा किया। यकबयक मैं चौंक उठा, क्योंकि मैंने देखा कि मेरी चारपाईके पास एक स्याहरू हबशिन खड़ी है!!!

चार नज़र होतेही उसने झुककर सलाम किया और मुस्कुराकर कहा,—"आदाबअर्ज़ है!"

मैं हैरत में आकर चारपाई पर उठकर बैठ गया और उसके आदाब अलकाब' का कोई जबाब न देकर एक टक उसके चहरे की तरफ़ देखने लगा।

वह चुड़ैल इतनी काली थी कि अगर उसे हिन्दुओं की काली या कोई भूतनी कहूं तो बेजा न होगा। अल्लाह! इतनी स्याहरू औरत इसके पेश्तर मैंने कभी ख्वाब में भी नहीं देखी थी!

गरज़ यह कि मुझे देर तक अपनी तरफ़ घूरते देखकर वह स्याहरू परी ज़रासा हंस पड़ी और बोली,—"जनाबेआली! आदाब अर्ज़ है!"

मैंने फिर उसके आदाब का कोई जवाब न दिया और कहा,—"तू कौन है ?"

उसने कहा,—"आपकी मददगार दोस्त।"

मैं,—"अल्लाह, तू और मेरी मददगार दोस्त!"

वह—(हंसकर) "मआज़ अल्लाह! मेरी सूरत का कोई भी ख्वाहां नहीं!"

मैं,—"खैर, यह नाज़ तो तू अपने किसी हबशी आशिक को दिखलाइयो। मुझे सिर्फ़ इतनाही बतला कि तू कौन है?"

वह,—(मुस्कुराकर) "यह तो मैं पेश्तर ही बतला चुकी।"

—"क्या बतलाया?"

वह,—"अब तो मुझे वह बात याद न रही।"

मैं,—"आह! सितम न ढाह और बतला कि तू कौन है?"

वह,—"मैं आसमानी की रूह हूं।"

यह सुनकर मैं चीखमार उठा और गुस्से से बोला,—"आह! आसमानी कंबख्त हर जगह मौजूद रहती है!"

वह,—"क्या करे, आपपर वह फ़िदा जो है।"

मैं,—"चल, हट दूर हो, नखरा नकर और बता कि तू कौन है?"

वह,—"आपकी आशिक!"

मैं,—"लाहौल बलाकूवत! तू मेरी आशिक! तौबः! तौबः! बस, जा, चलीजा यहांसे!"

वह,—"कहां जाऊँ?"

मैं,—"जहांसे आई हो!"

वह,—"मैं बिहिश्त से आई हूं।"

मैं,—"तो अब दोज़ख में जा।"

वह,—"और दिलाराम?"

मैं,—"आह, उसका नाम तू क्यों लेती है?"

वह,—"इसलिये कि वह मेरी सौत है!"

मैं,—" तुझे यहां किसने बुलाया है ? "

वह,—" आपने "

मैं,—" मैंने तुझे कब बुलाया ? "

वह,—" जब खाना पटक कर पीक से पुरजा लिखा ! "

मैं,—" क्या वह पुरजा तेरे लिये लिखा गया था ! "

वह,—" और सिवा मेरे इस जगह का मालिक दूसरा है कौन?"

मैं,—" खैर तो अब तू मुझ से क्या चाहती है ? "

वह,—(मुस्कुराकर) " एक बोसा ! ! ! "

यह सुनकर मैं झल्ला गया और चारपाई से उठकर उसे मारने दौड़ा। वह शैतान की दर्रा पहलेही से होशियार थी, इसलिये मेरे उठतेही भागी और मेरे आगे आगे दौडती हुई चारपाई का चक्कर काटने लगी। दोचार चक्कर लगाकर मैं ठहर गया और दिलही दिल में सोचने लगा कि यह कौन औरत है,जो मुझसे इस शोखी के साथ मसखरापन कर रही है ! सिन इसका सोलह सालसे जियादह नहीं मालुम देता; यह बिलकुल नौजवान और कमसिन है। आवाज़ इस की, गो, भर्राई हुई है, लेकिन ऐसा मालूम होता है, गोया यह जान बूझकर गला दबाकर बोलती हो ! मुमकिन है कि यह वही औरत हो, जो मुझे शाही दरबार में लेजाया करती थी और इस वक्त भेस बदल कर आई है ! इन्ही बातों पर मैं देरतक गौर करता रहा, पर नज़र बराबर उसीके ऊपर गड़ाए रहा। वह शैतानभी बराबर आंखें मिलाए हुए मुझे घूरा की और मुस्कुराती रही और उसके ढङ्ग से ऐसा जान पड़ता रहा कि वह खूब होशियारी के साथ खड़ी हुईहै!

आखिर, मैंने कहा,—" अच्छा, अब सचसच बतलाओ कि तुम कौन हो !"

वह,—" सचही कहदूं ? "

मैं,—" हां, सच कहो। "

वह,—" आप मेरी बातों पर यकीन करेंगे ! "

मैं,—" यह मेरी खुशी रही! दिल चाहेगा करूंगा; न चाहेगा, न करूंगा!"

वह,—" तो फिर मैं भी अगर चाहूंगी, सच कहूंगी, चाहूंगी, झूठ कहूंगी!"

मैं,—"आहमक्षाक रहने दो और मिहरबानी करके सच कहो कि तुम कौन हो!"

वह,—" तो फिर मैं कहती हूं!"

मैं,—" अल्लाह, कहोभी!"

वह,—" देखिए, ज़रा अपने दिलको सम्हालिए!"

मैं,—" आह, तोबः! अजीब शैतान से पाला पड़ा!"

वह,—" और मुझे एक हैवान से!!!"

मैं,—" या खुदा! अब मैं क्या करूं!"

वह,—" झखमारो!"

यह सुनकर फिर मुझे गुस्सा आया और मैं जोरसे उसकी तरफ झपटा, लेकिन वह शैतान की रूह पहलेही से होशियार थी, इसलिये मैं उसे पकड़ न सका और तीन चार बार चारपाईके चक्कर लगाकर फिर मैं ठहर गया और बोला,—

" अब मैं तुमसे हारा, इसलिये बराहे मिहरबानी, यह बतलाओ कि तुम कौन हो?"

यह सुनकर उसने एक अजीब ढंग से अंगड़ाई ली, जिसका कि बयान मैं नहीं कर सकता, और कहा,—

" प्यारे, यूसुफ़! मैं तेरी वफादार बीबी दिलाराम हूं!"

" दिलाराम! वफ़ादार दिलाराम!" मैंने घबराकर कहा,—" ऐं, तू दिलाराम है! काली चुड़ैल! तू दिलाराम है! अय गज़ब, तू मेरी वफ़ादार दिलाराम है! तोबः तोबः! ज़रा अपनी सूरत तो देख!"

उसने कहा,—"मैं अपनी सूरत बखूबी देख रहीहूं, क्योंकि मिस्ल आईने के तुम मेरे रूबरू मौजूद जो हो!"

मैंने गुस्से से ताव पेंच खाकर कहा,—"मेरी दिलाराम की यह सूरत है!"

उसने मुस्कुराकर कहा,—"अब तो जैसी कुछ है, वह तुम्हारे सामनेही है, लेकिन पेश्तर ऐसी न थी।"

मैं,—"हूं! तो ऐसी क्यों हुई?"

वह,—"तुम्हारी जुदाई की आग में जलते जलते!"

मैं,—"अगर ऐसा होता तो मेरी भी शकल ऐसी ही हो जाती, क्योंकि मैं भी तो दिलारामकी जुदाई की आग में भरपूर जला हूं।"

वह,—"अजी हज़रत! अगर तुम वाकई जले होते तो ज़रूर इसी सूरत को पहुंच गये होते, लेकिन ऐसा नहीं है।"

मैं,—"क्यों नहीं है?"

वह,—"यों नहीं है कि अगर तुमको उसकी जुदाई का कुछ भी ख़याल होता तो तुम शाहीमहलसरा के अन्दर रंगरलियां मनाने न आते!"

मैं,—"वह एक लाचारी अमर था, जिसका नतीजा मैं भोग रहा हूं और नहीं जानता कि इस कैद से कब छुटकारा पाऊँगा।"

वह,—"तो तुम मुझे दिलाराम नहीं मंजूर करते।"

मैं,—"नहीं, हर्गिज नहीं।"

वह,—"अगर तुम्हें यही मञ्जूर थी तो तुमने नज़ीरको क्यों मारा!

मैं,—(चिहुंककर) "किस नज़ीर को?"

वह,—"उसी नज़ीर को, जिसे मार कर उसकी छुरी वग़ैरह चीज़ें तुमने पाई थीं!"

मैं,—(ताज्जुब से) "यह हाल तुम्हें क्योंकर मालूम हुआ?"

वह,—"यह मैं नहीं बतलाना चाहती।"

मैं,—"लेकिन, नज़ीर से और तुम से क्या ताल्लुक?"

वह,—"इसे सुनकर तुम क्या करोगे।"

मैं,—"अपने जले दिल को तसल्ली दूंगा।"

यह सुनकर उसने एक क़हक़हा लगाया और कहा,—"वह मेरा

यार था, जिसके साथ मैं तुम्हें छोड़कर घर से निकल आई थी।"

आह! गोया ज़हरीला तीर किसीने मेरे जिगर में मारा! मैं ताब पेंच खाकर उस कम्बख़्त की तरफ़ फिर दौड़ा, लेकिन होशियार रहने के सबब वह फिर भाग चली और चारपाई के कई चक्कर लगाने पर फिर भी वह मेरे हाथ न आई। लाचार, मैं ठहर गया और कुछ सोच समझ कर मैंने उससे कहा,—

"अच्छा, अगर तुम दिलाराम बनने का दावा करती हो तो मेरे कुछ सवालों का जवाब दोगी?"

उसने कहा,—"बेशक दूंगी और यह साबित कर दूंगी कि मैं दिलाराम हूं।"

यह सुनकर मैंने कहा,—"अच्छा, यह बतलाओ कि मेरी और तुम्हारी पेश्तर मुलाकात कहां पर हुई?"

वह,—"मुहर्रम के मेले में, बड़े इमामबाड़े की बावली के ऊपर।"

यह एक ऐसी बात थी कि जिसे सुनकर मैं घबरागया और ताज्जुब से उसके मुंह की तरफ निहारता हुआ बोला,—"अल्लाह, यह बात तुमने किससे सुनी?"

वह,—"मआज़अल्लाह! अभीतक तुम मेरे दिलाराम होने में शक कर रहे हो!"

मैं,—"शक तो क्या, मैं तुम्हें दिलाराम हर्गिज़ नहीं मान सकता।"

वह,—"यह तुम्हारी खुशी! और ऐसीही बात पर मैं कहती हूं कि अगर तुम्हें मुझे छोड़ना ही था तो तुमने नज़ीरकी जान क्यों ली! आख़िर तुम्हारे छोड़ने पर मुझे एक का सहारा तो था!"

आह, यह बात सुनकर फ़िर मैं मारे गुस्से के भूत होगया और बोला,—"फ़ाहिशा, दिलाराम! तभी तू अपने मुंहमें कालिख लगा कर मेरे रूबरू आई है! मैं यह नहीं जानता था कि तू ऐसी फ़ाहिशा है! लेकिन ख़ैर, मैंने कुछ समझकर ही नज़ीर को कत्ल कर और उसे पहिचानकर उसकी लाश पर थूका था! बसअब तू जा और यहां

से अपना मुंह काला कर! आज से मैं कभी तेरा नाम भी न लूंगा और यही तसव्वुर करूंगा कि गोया दिलाराम मर गई!"

यह सुनकर वह खिलखिला पड़ी और बोली,—"अजी, हज़रत! तुमने बड़ा भारी धोखा खाया, जो मुझे दिलाराम समझा।"

यह सुनकर मैं चहुंक उठा और बोला,—"तो तू कौन है?"

वह,—"जी, दिलाराम की वफ़ादार लौंडी।"

मैं,—"तो तू इतनी देर तक ऐसी शरारत क्यों कर रही थी।"

वह,—इसलिये कि जिस में आपको हद से ज़ियादह गुस्सा आजाय!"

मैं,—"इसका सबब?

वह,—"यही कि जिसमें अपनी वफ़ादार या बेवफ़ा, पाकदामन या फ़ाहिशा दिलाराम के मरने की खबर सुन कर ज़ियादह ग़मगीन न हों।"

मैं,—"हैं, क्या दिलाराम अब दुनियां में बर्करार नहीं है"?

वह,—"नहीं, नज़ीर के मारे जाने की खबर को सुन कर उसने खुदकुशी करडाली।"

मैं,—"खैर जो कुछ हुआ, बिहतर हुआ, लेकिन यह तो तू बतला कि उस बावली वाले हाल को तूने क्यों कर जाना?"

वह,—"जी दिलाराम ने मरने से पेश्तर मुझ पर अपने बहुत से भेद ज़ाहिर करदिए थे, जिसमें आप को मेरी बातों पर यकीन हो और आप यह जाने कि जो कुछ मैं कह रही हूं, बिलकुल सही वो दुरुस्त है।"

मैं,—"भला दो एक और पोशीदः हाल तो तू बयानकर?"

वह,—"कौनसा हाल बयान करूं? बुगदादी ऊंटका हाल कहूं, या ज़ाफ़रानी जोड़े का, सीपकी डिबिया का हाल कहूं या पुखराज अंगूठी का; और दर्याई किश्ती का हाल कहूं, या नख़ास की लौंडी का!!!"

नाज़रीन! ये सब हालात ऐसे थे कि जिन्हें सुनकर मेरे कलेजे पर बिजली गिर पड़ी और मैं तलमलाकर ज़मीन पर गिर गया। कब तक मैं उस बदहवासी के आलम में मुर्दा रहा, इस को मुझे कुछ भी खबर न रही, लेकिन जब मेरे होश हवास दुरुस्त हुए तो मैंने क्या देखा कि वही हसीना मेरे सर को अपनी गोद में लिये हुई मेरे मुंह पर अपने आंचल से हवा कर रही है! यह देख, ज्योंही मैंने उसका हाथ पकड़ना चाहा, वह छबीली परीज़ाद हटक कर दूर जा खड़ी हुई और बोली, —

"जनाबमन! मेरा हाथ पकड़ते आपको शर्म नहीं आती और आप इस बात को भूल रहे हैं कि मैं बी दिलाराम की लौंडी हूं।"

मैंने कहा,—"खुदा जाने कि तुम खुद दिलाराम हो या उसकी कोई लौंडी! जब तक मैं इसका इतमीनान न कर लूं, यह नहीं जान सकता कि तुम कौन हो! लेकिन बातें तुमने ऐसी पोशीदः और सही सही बयान की हैं कि जिन पर मैं लब नहीं हिला सकता। इसी लिये मैं चाहता हूं कि ज़रा देखूं तो सही कि तुम कौन हो!"

यह सुन कर वह पास चली आई और बोली,—मैं समझती हूं कि तुम दिलाराम की पीठ परका वह मसा देखना चाहते होगे, जिसके दोनों जानिब दो नन्हीं नन्हीं खुदाई मछलियां बनी हुई थीं!"

यह सुनकर हैरत से मैं उसके मुहं की तरफ़ देखने लगा और बोला,—"हां, सिर्फ़ इतना ही मैं देखना चाहता हूं।"

वह,—(पास आकर) "तो, लो देखलो।"

आह, नाज़रीन! मैंने बहुत ग़ौर के साथ देखा, लेकिन उस किस्म का कुछ भी निशान उसकी पीठ पर न पाया। लाचार, मैंने उसका हाथ छोड़ दिया और वह मेरे हाथ में एक अंगूठी देकर कुछ दूर हट कर बोली,—"लीजिए, यह वही अंगूठी है, जिसे आपने दिलाराम को निकाह होने के पेश्तर ही अपनी मुहब्बत की निशानी के तौर पर दी थी। इसे आखिरी वक्त में दिलाराम ने अपनी अंगुली से अलग किया और मुझे देकर कहा कि, —"यूसुफ़ को देदेना।" पस, मैं आपके पास आई! अब मैं आपसे रुखसत होती हूं कि अब

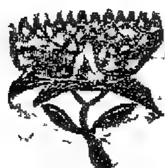
ताक़यामत आपसे मेरी मुलाक़ात न होगी।

मैंने कहा,—"यह तुम कह सकती हो कि दिलाराम घरसे क्यों गायब हुई?"

उसने कहा,—"यह तो मैं पेश्तर कही आई हूं कि वह नज़ीर के इश्क़ में दीवानी होकर उसी के साथ घर से निकली थी और जब उसने यह सुना कि नज़ीर को तुमने मार डाला तो मारे रञ्ज के अपनी अंगुली में से यह अंगूठी उतार कर उसने तुम्हें दे देने के लिये मुझे दी और आप अपने यार के ग़म में खुदकुशी की।"

नाज़रीन! इतना कहकर वह स्याहरू जमीन में उतर गई और मैं कठपुतली की तरह जहां का तहां खड़ा खड़ा उस अंगूठी को देखता, आहें गर्म खैंचता, आंसू बहाता और जिसे मैं अब तक वफ़ादार समझे हुए था, उस बेवफ़ा दिलाराम का ख़याल कर कर के अपने ज़िगर का ख़ून पी रहा था।

कब तक मैं उस हालतमें मुबतिला रहा, इसकी मुझे कुछ ख़बर न रही, लेकिन दूसरे दिन जब मेरी नींद खुली तो मैं अपनी चारपाई पर पड़ा हुआ था। किसने मुझे चारपाई पर सुला दिया था, यह मैं नहीं कह सकता। क्यों कि यह मुझे बख़ूबी याद है कि मैं ज़मीन में खड़ा खड़ा अंगूठी पर गौर कर रहा था। खैर मैंने उठकर इधर उधर टहलना शुरू किया तो देखा कि कोठरी साफ़ है और जब उस अंगूठी को फिर देखना चाहा तो उसका कहीं पता न लगा। मैंने हरचन्द अँगूठी को खोजा, लेकिन वह गायब थी! अब, नाज़रीन! आप ही बतलावें कि क्या मैं इस तमाशे को भी सरासर ख़्वाबो-ख़याल ही समझूं!!!



चौथा परिच्छेद ।

सवेरे उठकर जब मैं हम्माम में जाने के वास्ते उस पुतले के पास पहुंचा, जो कि हम्माम का रास्ता था, तो क्या देखता हूं कि आज वह पुतला भी अपने तीनों साथियों की तरह लुण्ड मुण्ड हो रहा है ! यानी उसके दोनों हाथों की तलवारें गायब हैं और उसका भी हाथ अब अपनी जगह से हिलता नहीं है ! यह अजीब कैफ़ियत देखकर मैं उसके पास पहुंचा और उसके सिर पर वाली कील ऐंठने लगा, लेकिन अब वह पेंच अपनी जगह से ज़रा न हिली और मेरी सारा मिहनत बेकार गई । यह हाल देख कर मैं बड़े शशपञ्ज में पड़ा और सोचने लगा कि ऐसी कार्रवाई किसने की, कब की और किस गरज़ से की ! बहुत कुछ ग़ौर करते करते मैंने यही समझा कि यह भी उसी अजनबी और हंसोड़ औरत की कार्रवाई है और ऐसा उसने या तो मुझे तङ्ग करने के वास्ते किया है, या किसी ख़ास ग़रज़ से !

ख़ैर, इसके बाद मैं उन बाक़ी के तीनों पुतलों के पास पहुंचा, लेकिन वहां भी मेरे ख़ातिरख़्वाह कोई बात न हुई, यानी उन तीनों के सिरों पर की भी कीलें अपनी जगह से न हिलीं । गरज़ यह कि जब उन चारों दरवाज़ों में से कोई भी दरवाज़ा न खुला और न मैंने पलंग के नीचे वाली सुरंग का कोई सूराग पाया तो घबरा कर मैं अपनी चारपाई पर बैठ गया और तरह तरह के खयालों के दर्या में गोते खाने लगा ।

मैंने दिल ही दिल में कहा कि,—"यूसुफ़ ! ले तेरी कुल उम्मीदों का ख़ात्मा अब यहीं हो जायगा और तू बे आब दाने के इसी कैद-ख़ाने में, जो कि कब्र से कम रुतबा नहीं रखता है, तड़प तड़प कर मर जायगा !"

या इलाही, अब मैं क्या करूं और क्योंकर इस बला से छुटकारा पाऊं । मुझे कोई तर्कीब ऐसी नहीं सूझती थी, जिससे मैं यहां से निकलने की राह पाता ! मैंने पहिले तो यह सोचा कि उसी रंगीली औरत ने मुझे चिढ़ाने के लिये सब रास्तों को बन्दकर दिया है, इस

वास्ते मुमकिन है कि थोड़ी देरमें वह आप आएगी और हम्माम का दरवाज़ा ज़रूर खोल देगी। लेकिन जब दिन एक पहर से ज़ियादह गुज़रा तो मेरे दिल में ख़ौफ़ पैदा होने लगा और मैंने सोचा कि क्या ऐसा तो नहीं हुआ कि वह मेरी मददगार औरत मेरे लिये किसी बला में फंस गई हो और मुझे आसमानी ने या उस के बहकाने से इस शाही महलसरा के किसी दीगर शख़्स ने इस के रास्ते को बन्द करके मेरे मार डालने का पक्का इरादा किया हो!

अल्लाह, आसमानी का ख़याल होते ही, सचमुच मेरी रूह कांप गई और मेरी आंखोंके सामने उसकी मनहूस और ख़ौफ़नाक तस्वीर खिंच गई। उस वक्त उस ख़याल के पैदा होने से मैं इस कदर घबराया कि मारे ख़ौफ़ के मैंने अपनी आंखें बन्द कर लीं और पलंग पर लेट कर सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिए।

देर तक मैं इसी उधेड़ बुन में लगा रहा, इतनेही में मेरे कानों में किसी किस्म की आहट पहुंची, जिस के पाते ही चिहुंककर मैं अपनी चारपाई पर उठ बैठा और उठने पर क्या देखता हूं कि पलंग के नीचे से निकल कर एक नकाबपोश औरत मेरे रूबरू खड़ी है। उस का सारा बदन नकाब के अंदर छिपा हुआ था, इसलिये यह मैं न जान सका कि यह औरत बूढ़ी है, या जवान; या यह मेरी पहचानी हुई है या अजनबी। थोड़ी देर तक मैं चुपचाप उसकी तरफ़ देखता रहा, इसके बाद उसने कहा.--

"यूसुफ़! तेरे सर पर इस वक्त बड़ी भारी बला आया चाहती है, इसलिये तेरी मददगार नाज़नी ने मुझे तेरे पास इसलिये भेजा है कि मैं जिस तरह हो सके, फ़ौरन तुझे शाही महलसरा के बाहर करदूं और तू सही सलामत अपने घर पहुंचे।"

नाज़रीन! उस औरत की आवाज बहुतही सुरीली और हमदर्दी से भरी हुई मालूम देती थी। गो,वह मेरी पहचानी हुई न थी,लेकिन इतना ज़रूर था कि उस आवाज़ से मैंने यह बात बखूबी जानली कि

यह एक नौजवान औरत है और मेरे साथ नेकी करने आई है!

मैंने उसकी बातों पर कुछ देर तक ग़ौर किया और फिर कहा,-"वह मेरी मददगार नाज़नी किस बला में गिरफ्तार हुई है?"

यह सुनकर नकाबपोश औरतने कहा, —"तुम शायद यह बात भूले न होगे कि उस दिन बेगमसाहब के दरबार में तुम्हें गिरफ्तार करने के लिये लुच्ची आसमानी पहुंची थी।"

मैंने कहा; —"हां,बेशक यह बात मैं नहीं भूला हूं और यहबात मुझे बख़ूबी याद है कि उस वक्त बेगमसाहब ने मुझ पर निहायत मेहरबानी की और बदमाश आसमानी ने खूबही अपने मुंह की खाई।"

नकाबपोश,-"और यह भी शायद तुम जानते होगे कि इसी कमरे में एक रोज़ रात के वक्त आसमानी एक ख़ूनी शख़्स को अपने साथ ले कर तुम्हें गिरफ्तार कर के उठा ले जाने और उस ख़ून से तुम्हें मरवा डालने की नीयत से आई थी।"

मैं बोला;—"हां, यह बात भी मुझसे छिपी नहीं है, क्यों कि उस वक्त मैं पड़ा पड़ा जाग रहा था। लेकिन, इसका मतलब मेरी समझ में न आया कि वह ख़ूनी या आसमानी अभी तक जिन्दः हैं या वे दोनों गुनहगार दोज़खरसीदा हुए।"

नकाबपोश.—"नहीं वे दोनों अभी तक ज़िन्दः हैं, क्यों कि उनको चोट हलकी पहुंची थी और उस वक्त भी तुम्हारी जान उसी नाज़नी ने बचाई थी।"

मैंने कहा.—"लेकिन,यह बात तो तुमने अब तक न बतलाई कि मेरी मददगार नाज़नी किस बला में फंसी है!"

नकाबपोश औरत ने कहा,—"अब वही कहती हूं, क्योंकि इस के क़ब्ल जो कुछ मैंने कहा है, उससे मेरा मतलब यही है कि एक तो तुम इस पोशीदः हाल सुनकर मुझ पर यकीन करो और दूसरे यह कि नाज़नी पर तुम्हारे सबब जो कुछ मुसीबत आई है, उसे बख़ूबी समझ सको।"

मैंने घबड़ा र कहा, " लेकिन तुम अब नाहक देर कर रही हो कि उसका हाल मुझ पर ज़ाहिर नहीं करतीं ! "

नकाबपोश,—" सुनो, कहती हूं । तुम्हारे यहाँ पर मौजूद रहने के पोशीदा हाल को आसमानी ने बादशाह सलामत पर ज़ाहिर कर दिया है, जिसके सबब वह तुम्हारी मददगार नाज़नी गिरफ्तार करली गई है और तुम भी हम्माम वाले रास्ते को बन्द करके यहां पर कैद कर लिए गए हो । "

यह सुनकर मैं घबरा गया और जल्दी से चारपाईसे उछल कर उस नकाबपोश की तरफ़ बढ़ा । मुझे अपने सामने बढ़ते देखकर वह और पीछे हटगई और बोली,—" यूसुफ़ ! पागलपन को दूर रक्खो और मेरे नज़दीक न आओ । घबराओ मत, अगर तुम चाहो तो मैं सही सलामत तुम्हें शाहीमहलसरा के बाहर कर दूंगी ! "

मैंने जल्दी से कहा,—" यह क्या तुम सच कहती हो ! "

नकाबपोश ने कहा,— " यह तुम्हें अख्तियार है कि मेरी बातों को सच समझो, या झूंठ ! मैं तो सिर्फ अपना फ़र्ज़ अदा करने आई थी, सो कर चुकी, अब तुम जैसा मुनासिब समझो वैसा करो । अगर तुम यहां से अपनी जान बचाकर भागा चाहते हो तो मेरे हमराह होलो, मैं तुम्हें सही सलामत यहां से निकाल दूंगी, और जो तुम्हें अपनी बदकिस्मती के सबब यहीं रहने में बिहतरी जान पड़े तो शौक से रहो, मैं अब जाती हूं । "

यह कह कर उसने बड़ी लापरवाई के साथ अंगड़ाई ली और मैंने बड़ी आज़िज़ी के साथ कहा,—

" हज़रत तुमको न मैं झूठी कहता हूं और न मैं अब यहां रहनाही चाहता हूं । बड़ी मिहरबानी तुम्हारी मुझ पर होगी, अगर तुम मुझ बदबख्त को सही सलामत इस कफ़स से छुटकारा दिलाओगी, लेकिन सिर्फ़ एक बात मैं तुम से यह पूछा चाहता हूं कि क्या तुम उस नाज़नी के कहने से मुझे यहां से निकालने आई हो । "

नक़ाबपोश,—"नहीं, मैंने हर चन्द चाहा कि उस से मैं तख़लिये में मिलूं, लेकिन वह इतने सख़्त पहरे में रक्खी गई है कि मेरा गुज़र उस के पास तक न होसका। मगर वह मेरी दोस्त है और उसी की ज़ुबानी तुम्हारा कुल हाल मुझे मालूम था, यही सबब है कि मैं बगैर उससे राय लिये तुम्हें यहां से निकालने के इरादे से आई हूं। इस में मैंने दो बिहतरी की बातें सोची हैं। एक तो यह कि तुम अगर इस वक्त यहां से भाग जाओगे तो हमेशे के लिये आज़ाद होकर अपनी ज़िंदगी खुशी से बितासकोगे; दूसरे यह कि अगर तुम्हें बादशाह यहां न पाएगा तो वह मेरी दोस्त नाज़नी भी बेकसूर साबित होकर क़ैद से छूट जायगी।"

मैंने कहा,—"लेकिन अभी तुमने यह कहा है कि मेरे यहां पर र'नेके हालको आसमानी से सुनकर बादशाह ने हम्माम वाले रास्ते को बन्द कर मुझे यहां पर कैद कर रक्खा है!"

नकाबपोश,—"हां यही ठीक है, लेकिन अभी तक बादशाह ने अपनी आंखों से तो तुम्हें नहीं न देखा है! पस, जब तुम शाही महलसरा के अन्दर न पाए जाओगे तो न तुम्हारी जान खतरेमें रहेगी और न मेरी दोस्त नाज़नी ही कसूरवार साबित हो सकेगी। इसके अलावे एक बात और भी है।"

मैंने कहा,—"वह क्या?"

नकाबपोश ने कहा,—"वह यह कि अगर मेरी दोस्त नाज़नी फिर तुमसे मुलाकात किया चाहेगीतो वह तुम्हारे मकान पर जाकर तुमसे मिलेगी। या पोशीदा रास्ते से तुम्हीं को महलसरा के अन्दर बुला लेगी। पस, अब तुम्हारा जोकुछ इरादा हो,वह मुझपर ज़ाहिर करो, ताकि उसी के मुताबिक मैं कार्रवाई करूँ।"

मैंने कहा,—"अपने इरादे के ज़ाहिर करने के पेश्तरमैं एक बात और जाना चाहता हूं।"

नकाबपोश,—"वह क्या?"

मैंने कहा,--"वह यही कि क्या तुम मेरी प्यारी दिलाराम के बारे में कुछ जानती हो ? "

नकाबपोश,--"क्या, वही दिलाराम, जो नज़ीर के साथ घर से निकल गई है ? "

यह एक ऐसी बात थी कि जिसे सुन कर मेरे सारे तन में आग लगगई और मैंने कहा,--"ओफ ? तू मेरी दिलाराम की शान में ऐसे कलमे कहती है ?"

नकाबपोश,--(हिकारत की हंसी हंस कर) " जनाब ! मु से कुसूर हुआ, मुआफ़ कीजिए अगर मैं यह जानता होता कि इस खबर को सुन कर आपके ज़िगर पर चोट पहुंचेगी, तो मैं यह हाल हर्गिज़ आप पर न ज़ाहिर करती । "

मैंने कहा,--" लेकिन ख़ैर, यह तो बतलाओ कि दिन के वक्त मैं शाहीमहलसरा के बाहर क्यों कर जा सकूंगा ? "

नकाबपोश,--" इसके वास्ते तुम कोई फ़िक्र न करो । शायद तुम्हें,जिस पोशीदे रास्तेसे आसमानी महलसराके अन्दर लाई थी, उसका हाल मालूम होगा ! "

मैंने कहा,--" नहीं, उसका कुछ भी हाल मुझे मालुम नहीं है, क्यों कि उस वक्त मेरी आंखों पर पट्टी बंधी हुई थी । "

नकाबपोश,--" नहीं, मेरी यह गरज़ नहीं है । "

मैंने कहा,--" तो क्या है ? "

नकाबपोश,--" यही कि जिस रास्ते से तुम आए हो, उसी रास्ते से बाहर कर दिए जाओगे । क्यों कि वह रास्ता इतना पोशीदा और उजाड़ जगह में है कि वहां पर दिन को भी कोई इन्सान नज़र नहीं आता । "

लेकिन, नाज़रीन ! उस मनहूस रास्ते का नाम सुनते ही; जिधर से कि मुझे चुड़ैल आसमानी ले आई थी, मेरे रोंगटे खड़े होगये और दिल ही दिलमें मैंने यह ख़याल किया कि कहीं यह औरत आसमानी

की तरफ़दार तो नहीं है जो मुझे धोखा देकर यहां से निकाल; उसके पञ्जे में फंसाया चाहती है ! लेकिन ऐसा भी क्यों कर मानूं ! क्यों कि अगर मेरी मददगार नाज़नी किसी बला में न फंसी होती तो अब तक वह ज़रूर मेरी खबर लेती और हम्माम का रास्ता हर्गिज़ बन्द न करती; जिसके बन्द हो जाने से मुझे हद दरजे की तकलीफ हो रही है ! ख़ैर; मैं इन्हीं बातों को सोच रहा था कि उस नकाबपोश ने फिर कहा;—

" तुम क्या सोच रहे हो । "

मैंने कहा;—" कुछ भी नहीं । "

नकाबपोश;—" नहीं ! ख़ैर न सही ! लेकिन अब तुम्हारा इरादा क्या है ! "

नाज़रीन ! इसपर मुझे एक बात सूझी और मैंने उस नकाब-पोश औरत को सचाई की तराजू पर तौलना चाहा । मैंने कहा,—" मैं तो यही बिहतर समझता हूं कि जो खेल किस्मत दिखलाए; उसे यहीं बैठे २ देखूं और यहां से कहीं न जाऊं ! "

मेरी इस बात को सुन कर वह ज़रा चिहुंक उठी और कुछ चकपका कर बोली,—" यह क्यों ? इस में तुमने क्या बिहतरी समझी है ? "

मैंने कहा;—" बिहतरी चाहे कुछ हो; या न हो; लेकिन मैं तब तक इस जगह से हर्गिज़ न टलूंगा, जब तक वह खुद आकर मुझसे यहां से जाने के वास्ते न कहेगी ! "

यह सुन और कुछ झिझक कर उसने कहा,—' यह तुम्हारी सरासर हिमाकत है ! भला वह क्यों कर तुम्हारे पास आसकती है; अब कि वह तुम्हारे ही सबब कैद कर ली गई है ? "

मैंने कहा,—" तो बिहतर है, मैं भी यहीं रह कर उसके लिए अपनी जान खोऊंगा । "

उसने कड़ाई के साथ कहा,—" तुम्हारी अक़्ल पर, मैं देखती हूं कि पत्थर पड़ गए हैं, वरन ऐसा बेहूदः ख़याल तुम्हारे दिल में पैदा न होता । क्या इस बात के सोचने के लिये तुममें अब जरा भी

मालूम न रहा कि तुम्हारे यहां रहने पर उसकी जान मुफ्त जायगी और तुम्हारी भी; लेकिन इस वक्त तुम अगर यहां से टल जाओ तो तुम भी बेदाग़ बच सकते हो और वह भी।"

मैंने कहा,—"इन फ़ज़ूल बातों के लिए सिर खाली करने की मैं कोई ज़रूरत नहीं समझता और यही बिहतर समझता हूं कि जब तक उस परीरू से मुलाकात न हो, यहां से मुझे कहीं न जाना चाहिए, चाहे इसका नतीजा कुछ ही क्यों न हो!"

मैंने जो कुछ सोचा था- आखिर वही हुआ! यानी मेरी बात सुन कर वह नकाबपोश औरत बेतरह चिढ़ गई और कड़क कर बोली.—"जान पड़ता है कि मौत तुम्हारी दामनगीर हुई है, यही वजह है कि इस वक्त तुम्हें अपना नफ़ा नुकसान नहीं सूझता है; पस: ऐसी हालत में मैं तुम्हारी और उस (अपनी दोस्त) औरत की बिहतरी के लिये जो कुछ मुनासिब समझूंगी करूंगी।"

मैंने कहा.—"क्या करोगी?"

उसने कहा.—"यही कि अगर तुम राज़ी से न जाना चाहोगे तो जबरदस्ती मैं तुम्हें शाहीमहलसरा के बाहर निकाल दूंगी।"

मैंने कहा.—"अगर मैं यहां से न जाना चाहूं तो तुम क्यों कर मुझे निकाल सकोगी? क्या मैं दूध पीता बच्चा हूं कि तुम मुझे गोदीमें उठा कर यहांसे ले जा सकोगी?"

उसने कड़ककर कहा.—"अपनी सहेली के खातिर मुझ से जो कुछ बन पड़ेगा, उसे मैं उठा न रक्खूंगी और जिस तरह हो सकेगा- तुम्हें यहां से निकाल बाहर करूंगी। बस अब आखिरी सवाल मेरा यह है कि तुम खुशी से जाओगे या नहीं?"

मैंने कहा.—"यह सवाल तुम्हारा बिलकुल बे बुनियाद है और इसका यही जवाब है कि मैं यहां से हर्गिज़ न जाऊंगा!"

"ख़ैर, तो देखो" यों कहकर उसने ज़ोर से सीटी बजाई, जिस की आवाज़ सुनते ही चारपाई के नीचे से एक कद्दावर हबशी जवान

निकल आया और उसने उस नकाबपोश औरत को सलाम कर के कहा,—" गुलाम हाज़िर है, इसे क्या हुक्म होता है ? "

यह सुन और मेरी ओर अंगुली उठा कर उस नकाबपोश औरत ने कहा;—" इस कम्बख्त को फ़ौरन यहां से ले जाओ और ले जा कर उसी सात नम्बर वाली कोठरी में कैद करो। "

" जो इर्शाद; " कह कर वह कम्बख्त हबशी मेरी तरफ़ बढ़ा; लेकिन मैं पीछे हट गया और उसे डांट कर बोला;—" खबरदार; मूज़ी ! अगर अपनी जान की ख़ैर चाहता हो तो दूर ही खड़ा रह और मेरे नज़दीक न आ। "

यह सुन कर वह ज़ोर से हंसा; और बोला;—" बदमाश; तू पहिले अपनी जान की तो ख़ैर मना। "

यों कह कर उसने ज़ोर से मुझे पकड़ा और कमर से रस्सी निकाल कर मज़बूती के साथ मेरे हाथ पैर बांध दिए। इसके बाद मैंने क्या देखा कि उसी सुरङ्ग से कम्बख्त आसमानी भी निकल पड़ी और उसने उस नकाबपोश औरत की तरफ़ देख कर कहा;— बस; अब आप यहां से तशरीफ़ ले जांय। "

यह सुन कर नकाबपोश औरत पलङ्ग के नीचे घुसकर सुरङ्ग में कूद गई और उसके जाने पर आसमानी ने मेरी तरफ़ ख़ूंख़ार आंखों से घूर कर कहा;—" क्यों बे बदबख्त ! अब तूने समझा कि आसमानी कितनी बड़ी ताकृत रखती है ? "

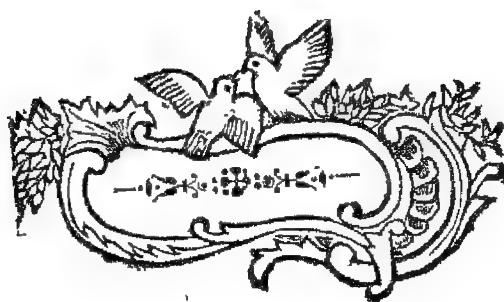
यह सुन कर मैंने उसके नापाक चेहरे पर थूका और कहा,— " बदबख्त कुटनी: तेरी शैतानी की ताकत की मैं कुछ भी पर्वा नहीं करता। "

यह सुनकर वह हरामज़ादी मुझे गालियां देने लगी और उस हबशी गुलाम की तरफ़ देखकर बोली,—" कादिर ! इस पाजी को यहां से लेचल और खन्दक में डाल दे, ताकि यह तड़प तड़प कर मर जाय और अपने गुनाहों की सज़ा पाए। "

यह सुनकर वह हबशी मुझे घसीट कर लेचला और आसमानीसे

बोला,—"लेकिन बी आसमानी ! हज़रत ने तो इसे सात नंबर वाली कोठरी में कैद करने का हुक्म दिया है।

" हज़रतकी अकल पर तो पत्थर पड़ गए हैं, लेकिन खैर, जैसा हुक्म उन्होंने दिया हो वैसा ही करो " यों कह कर बड़बड़ाती हुई आसमानी पलंग के नीचे घुसकर सुरंग में कूद गई और उसके जाने पर उस शैतान हबशी ने मेरी नाक में बेहोशी की दवा ठूंसदी. जिस सबब मैं तुरंत बेहोश होगया और फिर मुझे कुछ ख़बर न रही कि क्या हुआ !



पांचवां परिच्छेद ।

मैंने होश में आकर देखा कि जिस कोठरी में मैं इस मर्तबः कैद किया गया हूं; वह आठ हाथ लंबी; चौड़ी अंदाज़न उतनी ही ऊंची पत्थरों से बनी हुई है। गो, यह कोठरी उतनी गंदी न थी; जिस में आसमानी ने मुझे पेश्तर कैद किया था, लेकिन तौभी यह सिवा कैदियों के रखने के और किसी मसरफ़ की न थी। इस में सिर्फ एक खरहरी चारपाई बिछी हुई थी, एक ताकपर धुंधला चिराग़ जलरहा था, एक तरफ पानी की सुराही, कूजे और कई रोटियां रक्खी हुई थीं और दीवार की ऊंचाई पर छोटे २ कई ताक़ इस किस्म के बने हुए थे, जिनसे होकर साफ़ हवा आती और गंदी निकल जाती थी। उस कोठरी में चारों तरफ़ एक एक दरवाज़े थे जिन में से एक बाहर से बन्द था, दो में बड़े मोटे २ लोहे के छड़ लगे हुए थे, और उन के बाद बाहरी तरफ़ से किवाड़ बन्द थे, और चौथी तरफ़ एक बहुतही छोटी और कोठरी थी, जो ज़रूरी कामों के ख़याल से बनाई गई थी, लेकिन वह (छोटी कोठरी) भीतर से तीनों तरफ़ से बिलकुल बन्द थी। यही शायद सात नम्बर वाली कोठरी थी।

गरज़ यह कि इस क़फ़स में आकर, जिसकी बानी मुबानी आसमानी ही थी, मुझे कुछ ज़ियादह तकलीफ़ न हुई, क्योंकि कई महीने से लगातार शाहीमहलसरा के अन्दर कैद रहने के सबब मुझे तकलीफ़ बर्दाश्त करने की आदत पड़ गई थी, लेकिन आसमानी कंबख्त से मुझे कोई भलाई की उम्मीद न थी और मैंने दिलही दिल में यह समझ लिया कि अगर खुदा इस मर्तबः भी मुझे उसके हाथ से न बचाएगा तो अजब नहीं कि वह मेरे साथ बहुत बुरी तरह से पेश आएगी

मैं चारपाई पर बैठा इन्हीं बातों को सोच रहा था, इतनेही में एक तरफ़के जंगलेके पार वाला दरवाज़ा खुला, जिसकी आहट पाकर मैंने उस तरफ़ देखा तो क्या देखा कि हाथमें चिराग़ लिए हुए

आसमानी खड़ी हुई है! उसे देखकर वाकई एकमर्तबः मेरी रूह कांप उठी, लेकिन फ़िर खुदा का खयाल करके मैंने अपने दिल को मज़बूत किया और यह आसरा देखने लगा कि देखूं, अब यह आफ़त की "बुढ़िया" क्या रङ्ग लाती है!

योंही सोचता हुआ मैं चुपचाप चारपाई पर बैठा रहा, इतनेही में आसमानी ने अङ्गले के बाहर से खखार कर कहा,—"बदनसीब, यूसुफ़! तू मुझे पहचानता है?"

उसके ताने को सुनकर मैं दिलही दिलमें जल उठा और बोला,—"कुछ थोड़ा थोड़ा।"

उसने कहा,—"खैर यह गनीमत है कि तू मुझे कुछ न कुछ पहचानता जरूर है, और अगर कुछ थोड़ा थोड़ा भी तू मुझे पहचानता है तो यह बात भी तू जरूर जानता होगा कि इस वक्त तू बिलकुल मेरे कबजे में है।"

मैंने लापर्वाई से उसका जवाब दिया,—"शायद ऐसाही हो!"

वह बोली,—"क्या अभी तक तुझे इस बात पर कुछ शक है?"

मैं,—"मुमकिन है कि शायद कुछ हो!"

वह,—"लेकिन अगर ऐसा तू ख़याल करता हो तो यह तेरी महज़ हिमाक़त है।"

मैं,—"ऐसा भी हो सकता है।"

वह,—"हो क्या सकता है, हुई है! लेकिन अपनी मौत को सामने देखकर भी तेरी अक्ल पर इस किस्म का परदा पड़ गया है कि तुझे अपना नफ़ा नुकसान कुछ भी सूझ नहीं पड़ता।"

मैं,—"लेकिन, कंबख़्त! तू इस वक्त नाहक मेरा सिर चाटने क्यों आई है?"

वह,—"इसलिये कि तुझ पर यह बात मैं ज़ाहिर कर दूं कि अब तेरी जान बिलकुल मेरे कबज़ेमें है और मैं जिस तौर पर चाहूं, उसका फैसला कर सकती हूं।"

मैं,—"लेकिन मैं अपनी जानको या तेरी कुछभी पर्वा नहीं करता।

वह,—"यह सरासर तेरी बेवकूफी है।"

मैं,—"लेकिन तू नाहक हुज्जत क्यों कर रही है! मैं तो तेरे सामने मौजूद ही हूं, पस जो कुछ तुझे अपने दिलका अरमान निकालना हो, निकाल ले और यहां से अपना मुंह काला कर।"

वह,—"उन बूझक! तू अपनी इस नई जवानीको नाहक बर्बाद न कर और मेरा कहना मान!"

मैं,—(गुस्सेसे)"वल्लाह,तू क्या मेरे साथ निकाह किया चाहतीहै?"

वह,—"तू चूल्हे में जा; नालायक, पाजी! तू मेरे साथ दिल्लगी करता है?"

मैं,—"क्यों, इसमें हर्ज ही क्या है, जबकि तू शुरू से मेरे साथ छेड़खानी करती आती है!"

वह,—"खैर, मैं तुझसे सिर्फ़ दो बातें पूछा चाहती हूं!"

मैं,—"खैर, वह भी सुनूं!"

वह,—"तू सहीसलामत यहां से अपने घर लौट जाना चाहता है, या यहीं पर ज़िन्दा दरगोर होना!"

मैं,—"जो कुछ खुदा को मंजूर हो!"

वह,—"आखिर, तू अपनी भी तो कुछ ख्वाहिश ज़ाहिर कर।"

मैं,—"मैं,तुझसे कोई तमन्ना नहीं रखता।"

वह,—"तुझे झखमार कर मेरा तलवा चाटना पड़ेगा और जो कुछ मैं हुक्म दूंगी, उसे बसरोचश्म तुझे मंजूर करना होगा।"

मैं,—"वल्लाह, बुढ़ापेमें तो तेरा यह हाल है, अगर नौजवान और खूबसूरत होती तो न जाने तू कैसा सितम ढाहती!"

यह सुनकर वह झल्ला उठी और देर तक मुझे तरह तरह की गालियां देती रही। मैं मन ही मन में हंसता रहा और यही सोचता रहा कि मालूम होता है, यह कंबख्त मुझसे कोई काम लिया चाहतीहै इसी लिये यह इस किस्मकी बातें कर रही है, वरन जब कि मैं हर

तरह से इसके कब्ज़े में हूं, यह आसानी से मेरी जान ले सकती है
खैर, उसके गालियोंका सिलसिला दूर हुआ और उसने कुछ कड़ी
आवाज से कहा,—"ले, अबमें जाती हूं ? "

मैं,—"वल्लाह, अभी ! तुझे आए ही कितनी देर हुई ? "

वह,—"मैं नाहक तुझसे फिर खाली करना नहीं चाहती। "

मैं,—"ऐसाही मैं भी तो कहता हूं। क्योंकि अब तक सिवा फ़ज़ूल बकवाद के मतलब की बात तूने एक भी न कही। "

वह,—"तू सुने, तब तो कहूं!

मैं,—"मैं क्या बहरा हूं ? "

वह,—"अच्छा तो मैं कहती हूं। "

मैं,—"मैं भी सुनता हूं।

वह,—"सुन, अगर तू जीता जागता अपने घर जाया चाहता है तो जो कुछ मैं कहूं, उसे तू कबूल कर। "

मैं,—"क्या फिर किसी कागज़ पर तू मुझ से दस्तख़त कराना चाहती है ?"

वह,—"कैसा कग़ज़ ? "

मैं,—"क्या तू इतनी जल्दी भूल गई ? "

वह,—(कुछ सोचकर) "हां, ठीक है ! नज़ीर के खून के बारे में मैं तुझसे एक इकरारनामें पर दस्तख़त कराया चाहती थी लेकिन तूने उस कागज को बर्बाद कर दिया।"

मैं,—"पस, मैं पूछता हूं कि क्या अब भी तू मुझसे उसी किस्म के किसी कागज़ पर दस्तख़त कराया चाहती है ? "

वह,—"नहीं, यह कोई और ही बात है। "

मैं,—"ख़ैर सुनूं भी ! "

इसपर धीरे से उसने एक बात मुझसे कही, जिसे मैंने मंज़ूर न किया। यहां तककि उसने मुझे हर तरहसे डरा, धमका और लालच दिखला कर बहुतेरा समझाया, लेकिन जब मैंने साफ इनकार किय

तो उसने कहा,—"बस, अब मुझे तुझसे कुछ नहीं कहना है। अब मैं जाती हूं और जाकर उससे तेरा सारा हाल बयान कर देती हूं। इस के बाद तेरे लिये जैसा वह हुक्म देगी, वैसाही किया जायगा। लेकिन मैं जहां तक समझती हूं, मुझे यही जान पड़ता है कि अब तेरी जान किसी तरह बच नहीं सकती।"

मैं,—"लेकिन मैं इस कमीनेपन के साथ अपनी जान बचाना हर्गिज़ नहीं चाहता"

इसके बाद वह मुझे गालियां और तरह तरह की धमकी देती हुई चली गई और मैं चारपाई पर बैठा बैठा देरतक अपनी बदकिस्मती को कोसता रहा।

वह दिन मैंने बड़ी तकलीफ़ और अफ़सोस के साथ बिताया और रोटी या पानी की तरफ नजर उठा कर भी न देखा। वह रात भी जागते और करवटें बदलते ही बीती। दूसरे दिन तबीयत कुछ खराब मालूम हुई, इसलिये मुझ से चारपाई पर से न उठा गया।



छठवां परिच्छेद

नींद खुलने पर तमाम बदन में शिद्दत से दर्द मालूम हुआ। तबीयत निहायत बेचैन थी, मारे दर्द के सिर टूकड़े टुकड़े हुआ जाता था, बुखार तेज़ी पर था और प्यास के मारे गलेमें कांटे पड़ गए थे।

जिसको मैंने ऊपर नींद कहा है, वह दरअसल नींदही थी, या बेहोशी, यह मैं नहीं कह सकता, लेकिन इतना मैं ज़रूर कहूंगा कि जब मैं होशमें आया, उस वक्त तबीयत मेरी निहायत बेचैन थी और रह रह कर घुमटे पर घुमटे आरहे थे। यह हाल देखकर पानी पीने के वास्ते मैंने उठना चाहा, लेकिन उठा न गया; क्यों कि कमज़ोरी इस दरज़े की थी कि मैं करवट भी मुश्किल से ले सकता था।

मतलब यह कि जब मैंने उठना चाहा, मुझसे उठा न गया। उस वक्त गोया किसीने धीरे धीरे कान के पास मुंह लगाकर कहा,—

"क्या चाहिए!"

उस वक्त बेचैनी के सबब मुझे इस बात की तो कुछ ख़बर ही न थी कि मैं कहांहूं! इसलिये मैंने दबी हुई आवाज़से पानी मांगा। मेरी ख्वाहिश फ़ौरन पूरी की गई और किसीने धीरे धीरे कतरे कतरे पानी मेरे मुंह में चुआए! उस वक्त गो, उस कोठरी में धुंधली रोशनी थी, लेकिन तबीयत ठीक न रहने के सबब यह मैं न जान सका कि मैं किस मुकाम पर हूं, या मुझे किसने पानी पिलाया। था, के बाद मुझे फिर झपकी आगई और कब तक मैं उस हालत में था, इसका बयान नहीं कर सकता।

फिर जब मैं होश मे आया, तबीयत कुछ ठीक मालूम हुई और करवट भी आसानी से लेने लगा, मैं दोचार करवटें बदलकर उठ बैठा और जहां पर मैं था, उस जगह को बग़ौर देखने लगा। मैंने देखा कि वह एक कोठरी थी और मैं जिस चारपाई पर पड़ा था, उस पर सिर्फ़ एक कंबल पड़ा हुआ है। कोठरी के एक जानिब ताक़ पर

एक धुंधला चिराग़ जलरहा था, कि चारपाई के पासही एक चौकी पर पानी की सुराही और एक मिट्टी का प्याला रक्खा हुआथा और उस वक्त उस कोठरी में कोई भी नथा मैंने हाथ बढ़ाकर सुराही में से प्यालेमें पानी ढाला और कईघूंट पीकर अपने दिलको तसल्लीदी!मुझे कुछ भूख मालूम हुई, लेकिन उस कोठरी में तलाश करने पर खाने के किस्म की कोई भी चीज़ न मिली। ग़रज़ यह कि सिर्फ पानी ही से भूख और प्यास दोनों को तस्कीन दे दिला कर मैं चारपाई पर लेट गया और सोचने लगा कि मैं कहां हूं ?

देर तक तरह तरहके ख़यालों में गोते लगाने के सबब मेरा सिर घूमने लगा, इसलिये मैं आंखें बन्द करके चुपचाप पड़ा रहा। देर तक मैं इसी आलम में रहा,इसके बाद फिर मैं आंखें खोल और बैठा हो कर इधर उधर देखने लगा।

ग़ौर करते करते अब सारी बातेंमेरे ध्यान में बखूबी आगई और मैंने समझा कि मैंउसी मनहूस कोठरी में हूं, जिसमें लाकर पाजी आसमानी ने मुझे कैद किया हूं! इस बात के याद आते ही मेरी रूह कांप उठी और मैंने दिल ही दिलमें खुदावंद करीम से यह इस्तदुआ की कि वह मुझे जल्द इस कफ़स से रिहा करदे।

बात यह है कि मैं इसी किस्म की बातें सोचता रहा इतने ही में उस कोठरी के एक तरफ़ का दरवाज़ा खुला और एक नकाबपोश औरत हाथ में एक प्याला लिए हुए कोठरी के अन्दर आई। पेश्तर तो वह मुझे चारपाई पर बैठा देख कर कुछ झिझकी, फिर आगे बढ़कर उसने सुराही वाली चौकी पर प्याला रख दिया, जिसमें दूध था, और कहा,—"आज तुम्हारी तबीयत कैसी है ?"

यह सवाल सुन कर मैंने ताज्जुब किया और उससे पूछा,—"तुम्हारे इस सवाल के मानी क्या हैं ?"

उसने कहा,—"यही कि तुम निहायत बीमार थे।"

मैंने कहा,—"मुझे इस कोठरी में आए कै रोज़ हुए ?"

उसने कहा,—"उसी आज छियालीसवां दिन है!!!"

अय गज़ब! छियालीस दिन से मैं इस कोठरी में मौजूद हूं!!! लेकिन् मुझे इस की कुछ भी ख़बर नहीं है? आह,यह एक ऐसी बात थी कि जिसने मेरे कलेजे को ज़ोर से मसल दिया और मैंने उस नकाबपोश औरत से कहा,—"क्या वाकई, मैं इतने दिनों से इस कोठरी में मौजूद हूं?"

उसने कहा,—"बेशक; अगर तुमको मेरी बातों पर यकीन न हो तो इसे सही जानों।"

मैंने कहा,—"अल्लाह! लेकिन मुझे तो इसकी मुतलक याद नहीं है!"

उस ने कहा,—"तुम्हें याद हो क्यों कर! क्योंकि जिस दिन से तुम यहां आए,उसी दिनसे सख़्त बीमार होगए थे। मुझे तो इस बात की उम्मीद ही न थी कि तुम बचोगे, लेकिन मैं समझती हूं कि अभी तुम्हारे आबेहयात के प्याले के लबालब भरने में बहुत देर है।"

मैंने पूछा,—"मुझे कौनसी बीमारी हुई थी?"

उसने कहा,—"सरशाम!"

मैं,—"ऐसा! लेकिन, इस कैदखाने में मेरी दवा किसने की?"

वह,—"मैंने की।"

मैं,—(ताज्जुब से) "क्या तुम हिकमत भी जानती हो?"

वह,—"बेशक, क्योंकि शाहीमहलसरा की औरतों की दवादारू मैंहीं करा करती हूं।"

मैं,—"भला, तुमको मेरी दवा के लिये किसने मुकर्रर किया है?"

वह,—"आसमानी ने।"

मैं,—"ताज्जुब! सरासर ताज्जुब का मुकाम है कि जो आसमानी मेरे ख़ून की इस कदर प्यासी है, वही मेरी दवा के वास्ते तुमको मुकर्रर करे. और ख़ास कर ऐसी हालत में, जब कि सिर्फ़ उसी के सबब मैं इस बीमारी में मुबतिला हुआ था!"

उसने कहा,—"लेकिन, साहब, अब, तो आसमानी आपकी दोस्त मालूम देती है।"

मैं,—"यह क्योंकर ?"

वह,—"यों कि जिसकी वह तावेदार है, वह खुद तुम्हारा तावेदार हो रहा है।"

मैं,—"यह तुमने क्या कहा ?"

वह,—"क्या तुम इस बात का मतलब मुतलक न समझे !"

मैं,—"नहीं ज़रा खुलासे तौर से कहो।"

वह,—"खैर तो ज़रा दिल लगाकर सुनो।"

मैं,—"हां, तुम कहो, मेरा ख़याल इधर ही है।"

यह सुनकर वह नकाबपोश नाज़नी कहने लगी;—"जनाबमन ! आसमानी जिस नाज़नी की लौंडी है, वह कुछ मामूली औरत नहीं है। वह औरत आपकी सूरत पर आशिक़ होगई है और यही वजह है कि अब आसमानी आपसे दुश्मनी न करके दोस्ती का बर्ताव कर रही है।"

यह सुनकर मेरे ध्यान में नज़ीर के मारने से लेकर महलसरा के अन्दर आने और हर तरह की तकलीफें भोगने की सारी बातें आगई और यह बातभी याद होगई कि इस कोठरीमें मुझे लानेके बाद एक मर्तबः आसमानी जब मुझसे मिली थी, तब उसने इसी ढब की बातें मेरे साथ की थीं, लेकिन मैंने जब ऐसा काम करने से इनकार किया, तब वह मुझे गालियां देती हुई यहांसे चली गई थी। खैर, मैंने कहा,—"लेकिन हज़रत ! दोस्ती या मुहब्बत तो इस तरह के ज़ोरो ज़ुल्म के करने से नहीं दस्तयाब होसकती !"

वह नकाबपोश औरत बिल्कुल नौजवान थी, क्योंकि यह बात उसकी सुरीली आवाज़ से मुझे बखूबी मालूम होगई थी और जिस किस्म का उसका सुडौल बदन था, उससे मुझे यही ज्ञात पड़ता था कि वह औरतज़रूर हसीन होगी। खैर मैं इन बातों का ख़याल कर रहा थाकि उसऔरत ने, जो अब मेरी चारपाईके नज़दीकएक मूढ़े पर बैठ गईथी, कहा,—"लेकिन, साहब ! तुमको यह तो सोचना चाहिए कि

जिस शख्स को, यानी खुलासा यह कि, जिस नज़ीर को तुमने मारा है, वह इस औरत का कितना प्यारा होगा !"

मैंने कहा,—"बहुतही प्यारा !"

उसने कहा,—"भला, फिर तुम्हीं इस बात का इन्साफ़ करो कि अगर तुम्हारी दिलाराम को कोई शख्स मारडाले तो क्या तुम उस ख़ूनी के मार डालने का कस्द न करोगे ?"

मैंने कहा,—"आह, दिलाराम को तुम भी जानती हो ?"

उसने कहा,—"हां ज़रूर जानती हूं, लेकिन पेश्तर मेरी बात का तो जवाब दो ?"

मैंने कहा,—"हां, यह बात सही है कि मैं दिलाराम के ख़ूनी का बगैर ख़ून पीए न रहता।"

वह बोली,—"पस, अब तुम्हीं इसका इन्साफ़ करो कि फिर नज़ीर के ख़ूनी के साथ वह नाज़नी कैसा सलूक कर सकती है जिसने कि उस (नज़ीर) की जान ली हो ?"

मैंने कहा,—"बेशक वह नज़ीर के ख़ूनी के साथ वैसा ही बर्ताव कर सकती है, जैसा कि उसके ख़ूनी ने नज़ीर के साथ किया हो।"

यह सुनकर वह नकाबपोश औरत निहायत ख़ुश हुई और बाद इसके उसने कहा,—"लेकिन फिरभी जब उसने तुम्हारी सूरत देखी, तुम्हारे कसूरों को एक दम मुआफ कर दिया और तुम्हें अपने गले का हार बनाना चाहा। इतने परभी अगर तुम उसकदरदां नाज़नी की मुहब्बत की कद्र न करो और उसके एवज़ में उलटी गालियां दो तो भला यह कैसी इन्सानियत है ?

मैंने कहा,—"लेकिन, मैंने इस महलसरा के अन्दर बड़ी बड़ी तकलीफ़ें उठाईं, जो काबिल इज़हार नहीं।"

वह बोली,—" आख़िर, इसमें जनाब ! कुसूर किसका है ?"

यह बात सुनकर मैं चुप होगया, क्योंकि इसका जो कुछ जवाब होसकता है, वह मैं जानता था। पस, मुझे चुप देखकर वह औरत

ज़रासा हंस पड़ी और बोली,—"हां, हां, कहो, चुप क्यों होगए ?"

लाचार, मैंने कहा,—"भई, इसमें कुसूर तो मेरा ही है।"

यह सुनकर उसने एक कहकहा लगाया और कहा,—"अल्हम्द-लिल्लाह! ग़नीमत है कि तुमने सच्ची मुन्सिफ़ी की। क्यों साहब! जिसके आशिक़ का आप खून करें, वह अगर अपने आशिक़ के खून के बदले को न लेकर आप पर अपनी जान निछावर कर दे तो उसका एवज़ आप गालियोंसे अदाकरें! क्या यही इन्सानियतके मानीहैं?"

नाज़रीन! वाक़ई, यह एक ऐसी बहस थी, कि जिसे सुनकरमैं बिलकुल कायल होगया और कुछ भी जवाब न देसका। मुझे देरतक चुप देखकर उसने एक कहकहा लगाया और कहा,—"क्यों हज़रत! कुछ कहिए भी,जवाब तो दीजिए!"

मैंने कहा,—"साहब, आप ज़रा अपनी सूरत तो दिखलाइए तब मैं आपकी बातों का जवाब दूंगा।"

उसने कहा;—"ख़ैर; सूरत भी देख लीजिएगा; लेकिन पेशतर यह तो बतलाइए कि अब आपका इरादा क्या है?"

मैंने कहा;—"इरादा तो मेरा अब यही है कि एक मर्तबः नज़ीर की आशना की सूरत देखूं।"

वह,—"बाद इसके ?"

मैं;—"बाद इसके उसके क़दमों पर गिर कर अपने कुसूरों की मुआफ़ी चाहूं औरजो कुछ वह हुक्म दे;उसे बसरोचश्म बजा लाऊं।"

वह;—"क्या; यह आप सच कह रहे हैं ?"

मैंने कहा;—"हां; इसमें कुछभी दरोग नहीं है"

इसके बाद वह नक़ाबपोश औरत उठी और उठकर उसने मोमबत्ती जलाई फिर बत्ती हाथ में लेकर जब उसने अपने चेहरे से नक़ाब हटाई तो मैं क्या देखता हूं कि मेरी प्यारी दिलाराम मेरे रूबरू खड़ी २ मेरी ओर देखकर मुस्कुरा रही है!!!

सातवां परिच्छेद ।

दिलरुबा दिलाराम को मैं अपने सामने देख कर निहायत ख़ुश हुआ; लेकिन मुझे इस बात का ताज्जुब भी हुआकि इस शाही महल-सरा के अन्दर प्यारी दिलाराम क्यों कर आई! मैंने जो कुछ उसकी बुराई के बारे में शिकायतें सुनी थीं,—यानी उसका मुझे छोड़ कर नज़ीर के साथ निकलना वग़ैरह वग़ैरह,—इन सब बातों को मैं बिलकुल भूल गया और वाक़ई, उसे देखकर मुझे हद्द दरजेकी ख़ुशी हासिल हुई। यहां तक कि मैं अपनी उस ख़ुशी के जोश को रोक न सका और फ़ौरन एक गहरी चीख़ मार कर उसकी तरफ़ झपटा।

मैंने अपने दिल में यह सोचा कि प्यारी दिलाराम को भर ज़ोर सीने से लपटाकर मैं उसके गालों के हज़ारों बोसे लूंगा और पूछूंगा कि;—'अय बेवफ़ा; मुझसे क्या खता हुईथी, जोतू मुझे इस तरह छोड़कर चली गई थी!' लेकिन अफ़सोस! मेरे दौड़तेही; वह नाज़नी जिसे मैं अपनी दिलरुबा दिलारामही समझे हुएथा, मुझे झिड़क कर पीछे हटगई और कड़क कर बोली;—

" बस; ख़बरदार;हैवान न बनो और इन्सानके म्वाफ़िक अपनी जगह पर ज़रूर से बैठो।"

मैं उसकी इस तरह त्योरी चढ़ी हुई देखकर सहम गया और मारे अफ़सोस के हाथ मल कर और कलेजा मसोस कर मैंने कहा,—" बेवफ़ा, दिलाराम! क्या तू अब बिलकुल ही मुझे भूल गई और तूने मुझसे क़तई किनारा किया?"

मेरी बात सुन कर वह शोख़ बेतरह हंस पड़ी और कहने लगी "अजी; हज़रत! तुम इस वक़्त होश में हो कि नहीं?"

मैंने कहा,—" सच तो यों है कि जबसे तूने मुझसे किनारा किया; मेरे होशोहवास ने भी मेरा साथ छोड़दिया है।"

वह बोली,—तो क्या; तुम मुझे अभी तक दिलाराम ही समझे हुए हो?"

मैंने कहा;—"वल्लाह;तो क्या तुम दिलाराम नहीं हो!"

उसने कहा;—हर्गिज़ नहीं,—भला, मुझसे और दिलाराम से क्या निस्बत है? कहां वह एक मुसव्विर की बीबी और कहां मैं महलसरा की बेगम!"

मैं,—"लेकिन, जिस तरह मैं महलसरा के अन्दर मौजूद हूं क्या अजब है कि वह भी यहां पर मौजूद हो!"

वह,—"शायद हो! लेकिन मैं तो यह समझती हूं कि अगर वह कहीं होगी भी, तो नज़ीर के, घर होगी, क्योंकि यहां उसके आने का कोई सबब नहीं मालूम होता।"

मैं,—"नज़ीर तो अब जहन्नुम की हवा खाता होगा।"

वह,—"तो मुमकिन है कि उसीके साथ दिलाराम भी दोज़ख की आग में जलती होगी।"

उसकी ये बेढंगी बातें, जो मेरे ज़ख्मी ज़िगर पर नमक का काम दे रही थीं सुन कर मुझे निहायत रंज हुआ और मैंने उससे कहा,—"तो फिर तू कौन है?"

उसने कहा.—"मुझे क्या तुम नहीं पहचानते?"

मैंने कहा,—"मेरी पहचान को तो तू कबूल ही नहीं करती!"

वह कहने लगी,—"सुन यूसुफ़! अगर तेरी मौत न आई हो तो तू ज़रा होश में आकर शऊर से बातें कर। वर न तू 'तलाक' करनेके एवज़ में तेरी ज़बान धर कर खैंच ली जायगी।"

मैंने कहा,—"कंबख्त, जो कुछ तुझसे बने, तू अपने दिल का अरमान निकाल ले।"

वह,—"यूसुफ़, मैं फिर भी कहती हूं कि तू नाहक अपनी जान की बर्बादी न कर।"

मैं,—"दिलाराम के बगैर मैं जीकर करूंगा, क्या?"

वह,—"अफ़सोस, तू एक फ़ाहिशा औरत के वास्ते, जिसने तेरे साथ हद दर्जे की बेवफ़ाई की नाहक अपनी जान दे रहा है।"

मैं,—"लेकिन, इसका क्या सुबूत है कि दर असल वह फ़ाहिशा और मुझे छोड़कर किसी ग़ैर के साथ रंगरलियां मना रही है ?"

वह,—"सुबूत तू किस किस्म का चाहता है ?"

मैं,—"इस तरह का, कि जिससे मेरे दिल में फिर कोई शक बाकी न रह जाय और मैं यह जान लूं कि वाकई वह बदकार है।"

वह,—"अगर तेरे ख़ातिरख़ाह ऐसा ही कोई सुबूत दिया जाय तो तू क्या करेगा ?"

मैंने कहा,—"तब मैं फिर कभी भूल कर भी उस बदकार का नापाक नाम अपनी ज़बान से न निकालूंगा और जहां तक मुझसे हो सकेगा, इसी हाथ से उसका और उसके चाहनेवाले का सिर काट डालूंगा।"

उसने कहा,—"ख़ैर तो तू सब्र कर, मैं तुझसे वादा करती हूं कि तुझे दिलाराम को ग़ैर, शख़्श के साथ एक पलंग पर सोई हुई दिखला दूंगी।"

मैंने जल्दीसे कहा,—"लेकिन, कब ?"

वह,—"दोही चार रोज़ के अन्दर।"

मैं,—"ख़ैर, तो तू अब यहांसे जा और उसीदिन मेरे पास आइयो जिस दिन कि तू मुझे दिलाराम की कैफ़ियत दिखला सके।"

उसने कहा,—"बेहतर, मैं जाती हूं और जिस दिन दिलारामकी बदकारी के दिखलाने का मौका आएगा, मैं तुझे आसमानी के साथ भेजूंगी, क्योंकि महलसराके बाहर मैं हर्गिज़ कदम नहीं रखसकती।"

मैंने कहा,—"ख़ैर इस बातको मैं मंजूर करता हूं। लेकिन एक बात मैं तुमसे और पूछा चाहता हूं। क्या मिहरबानी करके उसका जवाब दोगी ?"

उसने कहा,—"पूछो, क्या पूछते हो ? अगर कोई ऐसी बात होगी, जिसके जवाब देनेमें मुझे कोई रुकावट न होगी तो उसका जवाब ज़रूर दूंगी वरना साफ़ इन्कार करूंगी।"

मैंने कहा—"मैं समझता हूं कि अगर तुम दिलाराम न होगी तो शायद वही नाज़नी होगी, जिसकी तस्वीर मैंने नज़ीर के ज़ेब में से पाई थी।"

यह सुनकर वह ज़रासी मुस्कुराई और बोली,—"लेकिन अगर मैं इसके जवाब में यह कहूं कि मैं वह नाज़नी नहीं हूं, तो क्या तुम इस बात को सही समझोगे।"

मैंने कहा,—"तब मैं यही समझूंगा कि या तो तुम सरासर झूठ बोल रही हो, या तुम दरअस्ल दिलाराम ही हो! बस सिवा इन दो बातों में से एकही मैं समझूंगा। क्योंकि यह कभी होही नहीं सकता कि एक ही सूरत सकल की कई औरतें हों!"

उसने कहा,—"क्या खुदा की शान में किसी को एतराज़ हो सकता है?"

मैं,—"यह सही है, लेकिन ऐसा कभी हो ही नहीं सकता। क्यों कि दो सूरत जो एक सी होती हैं, उनकी यही ख़ास वजह है कि वे दोनों एक साथ पैदा होती हैं।"

वह,—"क्या बाज़ बाज़ औरतोंको एकसे ज़ियादह बच्चे एक साथ पैदा नहीं होते?"

मैं,—"होते हैं लेकिन ऐसा शायद ही कभी देखने या सुनने में आता है। और अगर ऐसा होता भी है तो वे बच्चे हर्गिज़ नहीं जीते। हां एक साथ पैदा हुए दो बच्चे अकसर जी जाया करतेहैं और उनकी सूरत शकल भी बाज़ औकात बिलकुल एकही सी हुआ करती है।"

वह,—"फ़र्ज़ करो कि खुदा ने अपनी कुदरत दिखलाने के लिये एक साथ तीन नाज़नियां पैदा कीं, जिनमें से एक दिलाराम थी, दूसरी वह थी जिसकी तस्वीर तुमने नज़ीर के पास पाई थी और तीसरी मैं हूं!"

मैंने कहा,—"अजी हज़रत बस मिहरबानी करके अब आप मुझे भूलभुलैयोंमें न भुलाएं! अगर नज़ीरके धोखे आसमानी मुझे न लाई होती, उस पुलेत वाली कोठरीमें भोंचक न गईहोती, औरवहांसे मुझे

लाकर उसने यहां पर कैद न किया होता तो मैं यह ज़रूर समझता कि तुम उन दोनों नाज़नियों से अलग, यानो तीसरी हो! लेकिन नहीं, अब मैंने बखूबी इस बातको समझ लिया कि वह नकाब-पोश औरत भी आपही थीं, जिसने मुझे सात नंबरवाली कोठरीमें क़ैद करने का हुक्म हबशी गुलाम को दिया था। ओहो! एक बात में तो मैंने बड़ा भारी धोखा खाया! यानी उस पुतलेवाली कोठरीमें अबतुम मुझसे मिली थीं और तुमने अपने तईं उस औरत का दोस्त बतलाया था, जो कि मुझे उस जगह पर आराम से रक्खे हुई थी; और यह भी कहा था कि,-'मैं उसके कहने से तुम्हें महलसरा से बाहर करने आई हूं,' लेकिन फिर थोड़ी ही देरबाद तुमने यह कहा कि-'मेरी मुलाकात उस औरतसे नहीं हुई और न मैं उसकी भेजी हुई यहां आई हूं; लेकिन मेरा फ़र्ज़ है कि मैं तुमको महल के बाहर पहुंचा कर उस (अपनी दोस्त) की जान बचाऊं।' मेरे इस कहने का मतलब सिर्फ़ यही है कि उस वक्त तुमने इसी किस्म की बातें की थीं, लेकिन दिल की घबराहट के सबब उस वक्त मैं बद हवास होरहा था इस लिये तुमसे इस झूठ बोलने का सबब पूछ न सका था। मगर बात यह है कि मैं उस वक्त अगर यह तुमसे पूछता भी तो इससे कोई फ़ायदा नहीं होता, क्योंकि मैं हर तरहसे तुम्हारे कब्ज़े में था।"

इतना सुनकर उसने ताने से कहा,—"मगर अबतोमतु आज़ाद होगये न!"

मैंने कहा,-"यह तनज़ रहने दो और सुनो; इतना मैं ज़रूर कहूंगा कि तुम बड़ी चालाक औरत हो और झूठ बोलना तो गोया तुम्हारा एक महज़ मामूली काम है।"

उसने कहा,—फ़र्ज़ करो कि अब तक जो कुछ तुम बक गये, वह बिल्कुल सही है, लेकिन इससे तुम को फायदा क्या हुआ?"

मैंने कहा,—"यही कि तुम्हें मैंने झूठा साबित कर दिया।"

वह बोला,—"लेकिन इसके साबित करने से तुम मेरा क्या कर

सकते हो ? "

मैं बोला,—" यही कर सकता हूं कि तुम्हारी बातों पर कभी यक़ीन न लाऊँ और जहांतक मुमकिन हो, अपने तईं तुम्हारी लच्छेदार बातों के चकाबू से बचाऊं । "

वह,—" यह ग़ैर मुमकिन है । सुनो, मियां यूसुफ़! मेरे दिल पर नज़ीर के मारे जाने का कितना सदमा गुज़रा-इसे मैं बयान नहीं कर सकती और इस पर तुर्रा यह कि नज़ीर का ख़ूनी मेरे क़बज़े में आकर भी अभी तक ज़िन्दा है,जिसकी जान कि मैं जब और जिस तरह चाहूं आसानी से ले सकती हूं । ऐसी हालत में, जब कि मैंने तुम्हारे क़ुसूर को एकदम मुआफ़ कर के आला दर्जे की मिहरबानी की है, तुम्हें लाज़िम है कि तुम मेरी बात कबूल करो और बड़े चैन के साथ अपनी ज़िन्दगी के बाक़ी दिन बिताओ । "

मैंने कहा,—" हज़रत! आप बजा फ़र्माती हैं-लेकिन ग़ौर तो कीजिए कि मुहब्बत भी क्या ज़ोर ज़ुल्म करने से दस्तयाब होती है ! हर्गिज़ नहीं क्योंकि इसका रास्ता निराला है, इसका तरीक़ा ही कुछ और है,यह शै ही दीगर है और इसके दस्तयाब करने की सूरत दूसरी है । "

यह सुनकर वह कुछ गर्म होकर कहनेलगी,—" लेकिन मैं जिस तरह हो सकेगा, तुम को अपने काबू में लाऊंगी और अपने ख़ातिरख़्वाह तुमसे अपने दिलकी आरज़ू निकालूंगी । "

मैंने कहा,—"हज़रत, आपका किधर ख़याल है? मैं अपनी जान दे दूंगा, लेकिन आपकी बात हर्गिज़ कबूल न करूंगा । कम्बख़्त! मैं अब बखूबी यह बात समझ [illegible] एक ख़्याल की नज़र गड़ाए हुई है, यही वजह है कि तुमने मेरी प्यारी दिलाराम की नज़र के ज़रिये [illegible] उसे मार डाला है और अब मुझे मारने की फिक्र में है । अफ़सोस, मैं किस क़ातिल औरत के फेर में फंसा हुआ हूं, जिसने कि अपने दिल के अरमान निकालनेके लिये न मालूम कितने

खून शौकिया किए होंगे? अय, पाक परवरदिगार! तू कहां है? इलाही! तू कब तक मुझे इस बला में डाले रहेगा?"

इतना कहते कहते मारे गुस्से के मैं कांपने लगा और मैंने देखा कि वह बदज़ात औरत भी लाल लाल आँखें कर के मेरी तरफ़ शेरनी की तरह तक रही है! लेकिन जब कि मेरी मौत आही चुकी थी तो फिर उससे डरने से फ़ायदा क्या था? यह सोच कर मैं फिर कहने लगा,—

"अय बदनसीब औरत! मेरा दिल इस बात की गवाही देता है कि तेरी और दिलाराम की एकसी सूरत होने की कोई ख़ास वजह ज़रूर है! मुमकिन है कि तुम दोनो एकही मां के पेट से पैदा हुई होवो; लेकिन ख़ैर, अब तेरे दिल में जो आवे, सो कर, क्योंकि मैं मरने से नहीं डरता, मगर इतना तो बतादे कि दिलाराम में और तुझ में कौन रिश्ता है और तूने उसका क्या किया?"

उसने एक गहरी सांस ली और बड़े गुस्से के साथ कहा,—"बदबख़्त, अब मैं तेरी किसी बात का जवाब न दूंगी और बहुत जल्द तुझे तेरी अजल के सुपुर्द कर दूंगी। बस, अब तू बख़ूबी गौर करले और जो तुझे अच्छा जान पड़े, वह कर; लेकिन इतना मैं फिर भी कहती हूं कि नाहक तू अपनी जवानी बर्बाद न कर और ज़बरन मौत का निवाला न बन।"

मैंने कहा,—"लेकिन, बगैर दिलाराम के मैं जी ही कर क्या करूंगा?"

वह कहने लगी,—"दिलाराम के निस्बत तो मैं तुझसे कह चुकी हूं कि मैं तुझे उसकी बदकारी का तमाशा दिखला दूंगी।"

मैंने कहा,—"लेकिन नहीं, अब मैं वह देखना नहीं चाहता, क्योंकि उसे तूहीने जान बूझ कर ख़राब किया होगा। बस, वह बिल्कुल बेकसूर है और मैं उसे और उसके गुनाहों को तहेदिल से मुआफ़ करता हूं और यही आरज़ू रखता हूं कि ख़ुदा भी उसकी ख़ताओं को मुआफ़ करे और बिहिश्त में उसे मुझसे ज़रूर मिलावे।"

वह बोली,—"खैर खुदा तो तुझे उससे पीछे मिलावेगा, मगर मैं अभी तुझे उससे मिला सकती हूं, अगर उस फ़ाहिशा को तू कबूल करना चाहे।"

मैंने कहा,—"नहीं मैं अब तेरी एक भी बात सुनना या मानना नहीं चाहता, बस अब तू चुप रह और यहां से फौरन चली जा।"

"खैर, तू अब 'चाहे खज़र' का मज़ा चख," यों कह कर उसने सीटी बजाई, जिसकी आवाज सुनकर एक कद्दावर जवान को, जिसके चहरे पर स्याह जालीदार नकाब पड़ा हुई थी, साथ लिए हुई कंबख्त आसमानी आ पहुंची आतेही उसने मुझे बड़ीही हिकारत की नजर से देखा और उस नकली दिलाराम की तरफ़ मुख़ातिब हो कर कहा,—"कहिये, अब हुज़ूर का क्या इरादा है?"

नकली दिलाराम,—"अफ़सोस, मैं निहायत रुसवा हुई।"

आसमानी,—"लेकिन मैंने हुज़ूर को बहुत समझाया था।"

नकली दिलाराम,—"खैर, मैंने अपनी ज़िद का खासा नतीजा पाया, लेकिन इसका एवज़ मैं ज़रूर इस ज़िद्दी से लूंगी।"

आसमानी,—"इसके क्या मानी? क्या, अभी कुछ और अरमान बाकी है?"

नकली दिलाराम,—"नहीं, अब कुछभी बाकी नहीं है (नकाबपोश जवान की तरफ देख कर) "अयूब! तू इस बदज़ात की मुश्कें बांध कर इसे 'चाहेखज़र' की तरफ़ ले चल।"

इसपर—"जो इर्शाद," कह कर गुलाम अयूब ने आसानी से मेरी मुश्कें चढ़ालीं और मुझे घसीट कर वह उस छोटी सी कोठरी में घुसा, जिसका बयान मैं कर आया हूं। मेरे पीछे पीछे हाथ में जलता हुआ पलीता लिए हुए आसमानी और वह खूनी नाज़नी भी थी। उस कोठरी में पहुंच कर उस गुलाम ने सामने ताक में बने हुए एक मेढ़क की आंख में एक ताली लगा कर तीन बार बाईं ओर को घुमाई और झट ताली खैंचली। ताली खैंचते ही एक छल की आवाज़ हुई और वहां का, यानी

उस दीवार का पत्थर ज़मीनके अन्दर घुस गया। सामने एक सुरंग नज़र आई,जिसके अन्दर वह गुलाम मुझे घसीट लेगया और पीछे से वे दोनों औरतें भी हाथों में मशाल लिए पहुंचीं।

रौशनी के उजाले में मैंने देखा कि वह सुरंग पांच हाथ लम्बी चौड़ी और ऊंची थी और उसके एक तरफ़ एक कदआदम लोहे का पुतला बना हुआ था। गरज़ यह कि मुझे उस पुतले को दिखला कर आसमानी ने अयब से कहा,—" हां, जल्द इस पुतले के ताले में ताली भर दे।"

इतना सुनते ही अयबने उस पुतलेसे दोहाथ दूरही पर,ज़मीन में बिछे हुए एक पत्थर के सूराख़ में ताली लगाकर सात दफ़े घुमाई, फिर निकाल ली।

अल्लाह, अय यह क्या ग़ज़ब! आह मैं क्या देखता हूं कि अब तो उस पुतले के जिस्म में से निकल निकल कर हज़ारों ख़ञ्जर बड़ी तेज़ी के साथ चक्कर लगाने लगे और यही जान पड़ने लगा कि इस पुतले का सारा जिस्म सिर्फ़ ख़ञ्जरों हीं से बना हुआ है!!!

आह, ग़ज़ब! इस अजीब तमाशे को देखकर मेरे होश हवास जाते रहे और कलेजा हाथों उछलने लगा। मेरे सारे बदन का ख़ून सूखकर जम गया और तमाम बदन से पसीने की बूंदें टपकने लगीं।

किस्सह कोताह, उस ख़ञ्जर वाले पुतले को दिखला कर उस नकली दिलाराम ने मुझ से कहा,—" देख, यूसुफ़! यह कैसा अजदः पुतला है? सुन कम्बख़्त! अब तू इसी पुतले से बांधा जायगा, उसके बाद जब इसके ताले में ताली भरी जायगी तो ये सारे ख़ञ्जर इसी तरह तेज़ी के साथ घूमकर तेरी बोटियोंके टुकड़े टुकड़े उड़ाएंगे और बड़ी तकलीफ़ के साथ तेरी जान निकलेगी।"

" अल्लाह, अल्लाह, अय पाक पर्वरदिगार, तू कहां है? आह, अब मैं मरा!" यों कहकर मैं तुरत ग़श खाकर वहीं गिर गया और फिर मुझे इस बात की कुछ भी ख़बर न रही कि क्या हुआ!!!

आठवां परिच्छेद

मैं जब होश में आया, अपने तईं एक उम्दः सजे सजाए कमरे में छपरखट पर,मख़मली तोशक पर सोए हुए पाया। वह कमरा खूब लम्बा चौड़ा तो न था, लेकिन बहुत छोटा भी न था। वह बारह हाथ लम्बा, आठ हाथ चौड़ा,करीब आठ हाथ के ऊंचा और पुख़्तः बना हुआ था। उसकी लम्बाई की सतह में दोनों तरफ़ पांच पांच दरवाज़े और चौड़ाई की सतह में दोनों तरफ़ तीन तीन दरवाज़े थे।

यह कमरा निहायत तबीयतदारी के साथ सूफ़ियाने ढङ्ग से सजा हुआ था। ज़मीन में कालीन का फ़र्श था; एक जानिब को मसनद बिछी हुई थी और एक तरफ़ वह छपरखट था, जिस पर मैं सोया हुआ था। छपरखट पर गुदगुदा मख़मली गद्दा बिछा हुआ था; जिस पर रेशमी चांदनी थी और तकिए भी मख़मली थे, जिन पर रेशमी गिलाफ़ चढ़े हुए थे।

कमरे में, जा बजा, करीने से तिपाइयों पर खिलौने, इतरदान, पानदान,शराब की बोतलें और प्याले,पानी की सुराही और गिलास और चौसर, शतरञ्ज, गञ्जीफ़े वगैरह सजे हुए थे और एक तरफ़ बिल्लौरी फ़ानूस में शमादानी जल रही थी।

इस अजीब ठाठ को देखकर मैं दंग हो गया और घबराहट में आकर पलंग पर बैठा होगया। मैं नज़र दौड़ा कर कमरे के चारों तरफ ग़ौर से देखने लगा, लेकिन जिस चीज़ को मैं तलाश कर रहा था, उसका उस कमरे में कहीं नामोनिशान भी न था। मालूम हो कि मैं कुछ गाने बजाने से शौक रखता था। सो मैंने चाहा कि अगर यहां पर सितार या बीन हो तो उसे बजाऊं और कुछ अलापूं; लेकिन, इस किस्म की कोई चीज उस कमरे में न थी,जिसका गाने बजाने से किसी किस्म का ताल्लुक़ हो! आख़िर, मैं पलंग से नीचे उतरा और टहल टहल कर कमरे की कैफ़ियत देखने लगा। उस कमरे में जो सोलह दरवाज़े थे, वे सब आबनूस लकड़ी के बने हुए थे, और सबके सब बाहर से बन्द थे। मैंने हर एक दरवाज़े

की बखूबी जांच की, लेकिन कोई दरवाज़ा भीतर से बन्द न था, इस लिये खुल न सका। इसके बाद मैं कमरे की सजावट को बग़ौर देखने लगा। देखते देखते मेरी निगाह वहां पर लगी हुई तस्वीरों पर गई और मैं रोशनी हाथ में लेकर उन तस्वीरों को ग़ौर से देखने लगा!

अल्लाह आलम! तस्वीरें क्या थीं, बला थीं! ऐसी उम्दः ऐसी बेशक़ीमत, इतनी बड़ी और ऐसी बेशर्म तस्वीरें मैंने, मुसव्विर होने पर भी अपने हाथ से कभी नहीं बनाई थीं! वेसब तस्वीरें सिर्फ़ हसीन औरतों की थीं, सब क़दआदम थीं, और सब दिल के फ़ड़काने वाली थीं!!! मैंने हर एक तस्वीर को बारीक नज़र से बग़ौर देखना शुरू किया, क्यों कि यह तो मेरा काम ही था!

कमरे में कुल सोलह तस्वीरें लगी हुई थीं, जो सभी एकसे एक बढ़कर थीं और इस क़ाबिल थीं, कि अगर उनका बनाने वाला मुसव्विर मेरे सामने होता तो मैं उसका हाथ चूम लेता और दिल ही दिल में उसे अपना उस्ताद समझता। ग़रज़ यह कि उन तस्वीरों को बारी २ से देखते देखते मेरी निगाह एक तस्वीर पर आ पड़ी, जिसे देखते ही मैं चीख़ मार उठा और मेरे हाथ से बत्ती छूट कर फ़र्श पर आ गिरी। लेकिन मैं बहुत जल्द सम्हला और मैंने अपने उमड़ते हुए दिल को तसल्ली देकर बत्ती फिर हाथ में लेली, जो कि फ़र्श पर गिरने पर भी नहीं बुझी थी और न फ़र्श में आग ही लगी थी; हां, कई क़तरे मोम के ज़रूर फ़र्श पर गिर गए थे।

नाज़रीन शायद इस बात को जानना चाहते होंगे कि यह तस्वीर किसकी थी, जिसको देखकर मैं इस क़दर चौंक उठा था! ख़ैर, सुनिए, बतलाता हूं, वह तस्वीर मेरी दिलरुबा दिलाराम की थी; या उस नाज़नी की थी, जो नक़ाबपोश बन कर मुझे पुतलीवाली कोठरी में से उठवा लाई थी।

क़िस्सह कोताह! मैं देर तक उस नाज़नी की सूरत को बग़ौर देखा किया, जिसमें, दिलाराम से कोई फ़र्क़ न था और अगर मैं दिलाराम की सूरत की एक नाज़नी और न देख लेता तो फिर उस

तस्वीर को दिलाराम की तस्वीर मान लेने में मुझे कोई भी शक न रह जाता।

इसी किस्म की बातें मैं सोच रहा था कि यकबयक मेरा ख़याल बदल गया और मैं सोचने लगा कि ऐसा भी हो सकता है कि नज़ीर के साथ दिलाराम निकल आई हो और उस (नज़ीर) ने दिलाराम को बादशाह की ख़िदमत में पेश कर दिया हो! इस लिये कि अगर दिलाराम बादशाह को अपनी मुट्ठी में कर लेगी तो उस (नज़ीर) को ख़ूब दौलतदुस्तयाब होगी। यही सबब है कि दिलाराम शाहीमहल-सरा के अन्दर है और आसमानी कुटनी के साथ इसके पास नज़ीर आता जाता था, जो मेरे हाथों मारा गया और उसके एवज़ में मैं शाहीमहलसरा के अन्दर आ गया!

मुमकिन है कि दिलाराम ने किसी हिकमत से अपने उस निशान को भी मिटा डाला होगा, जिसे एक मर्तबः मैंने देखना चाहा था, लेकिन कोई भी निशान इस (दूसरी) दिलाराम के जिस्मपर नज़र न आया। बस, जो कुछ हो, यह दिलाराम ही है, वरने आसामानी के ज़ुल्म से यह मेरी जान क्यों बचाती और आशिक (नज़ीर) के ख़ूनी (मुझ) को किस तरह मुआफ़ करती! अब यह मुझसे ज़ोरू ख़सम, के रिश्ते को न रख कर 'आशिक माशूक' के रिश्तेको कायम किया चाहती है, यही वजह हैकि यह चालाकी से अब मेरे आगे दिलाराम नहीं बनना चाहती।

अगर मेरा सोचना सही हो और वाकई यह दिलाराम ही हो तो अब मुझे इसके साथ क्योंकर पेश आना चाहिए?

यह एक ऐसा सवाल मैंने अपने दिल से किया कि जिसपर वह देर तक ग़ौर करता रहा और आख़ीर में उसने मुझे जो कुछ जवाब दिया, उसका मतलब यही है कि मैं उसके साथ, उसके बमूजिब दोस्ती करलूं, और कुछ दिन तक इसके साथ ऐशो आराम करूं, इस से मुमकिन है कि उसकी हरकतों, ख़सलतों, ख़ासियतों और आदतों

से मैं यह बखूबी जान लूंगा कि दरअसल यह दिलाराम है,या नहीं।

आखिर,येही सबबातें मैं देरतक सोचता रहा और दिलहीदिल में मैंने पक्का इरादा करलियाकि अब मैं उसके खातिरख़ाह काम करूं गा और उसे हर्गिज न चिढ़ाऊंगा।

इसके बाद मैंने हाथकी मोमबत्ती,जोअब बहुत कम रह गई थी, बुझाकर एक तरफ़ फेंकदी और एक तिपाई पर बैठकर दोघूंट पानी पीया। फिर उठकर कमरेमें टहलने लगा और सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये?

मतलब यह कि देरतक मैं पागलोंकी तरह कमरे में टहलता रहा फिर आकर छपरखटपर लेट गया। मुझे लेटे थोड़ीही देर हुईथी कि धीरे धीरे, बहुतही धीरे, कमरे का दरवाजा खुला और एक नाज़नी अंदर आई। अन्दर आकर उसने भीतरसे दरवाजेको बन्द करलिया और इधर उधर नज़र दौड़ाकर वहमेरे जानिब आनेलगी। उसे अपनी तरफ़ आते देखकर, यह जानने के लिये कि यह यहां आकर क्या करती है मैंने अपनी आखें इस ढङ्गसे बन्द करली कि जिसमें कि वह मुझेसोया हुआ समझे और मैं जरा जरा खुली हुई आंखोंसे यह देख सकूं कि वह क्या करती है।

गरज़, वह मेरे पलङ्ग के पास आई और झुककर मेरे चहरे की तरफ देखनेलगी उस वक्त मैंने बिल्कुल आखें बंदकरली थीं और देर तक उन्हें बंद ही रक्खा था। मुझे उसकी गरम गरम सांस मालूम हुई, जिससे मैंने जाना कि उसका मुंह मेरे मुंह के बिल्कुल पास आ गया है फिर एक किस्मकी बहुतही हलकी और निहायत मीठी आवाज मेरे कानों में आई, इसके बाद सन्नाटा हो गया, लेकिन मैं देरतक आखें बंद करके चुपचाप खुर्राटे भरता रहा।

कुछ देरके बाद मैंने बहुत ही धीरेसे जरा सी आंखें खोली और देखा कि वह नाज़नी शमादान के करीब खड़ी हुई कोई कागज देख

उसकी सूरत देखी। देखतेही मैंने पहचान लिया कि यह कौन नाज़नी है!

नाज़रीन, इस बात को भूले न होंगे कि जब मैं आसमानी के साथ शाहीमहल्लसरा के अन्दर दाखिल हुआ था और मुझे एक अन्धेरी कोठरी में छोड़ कर वह गायब हो गई थी, तब यही नाज़नीं हाथमें रोशनी लिए मेरे सामनेआई थी! यही मुझे अपने आलीशान कमरे में लेगई थी और इसी के कमरे के अन्दर से मैं पहिले पहिल आसमानी की कैद में पड़ा था। उस कैदसे भी मुझे इसीने छुड़ाया था और मुझे गोल इमारत के अन्दर रक्खा था। यह देख कर मैं निहायत खुश हुआ और मैंने चाहा कि उठकर उसके पास चलूं कि उस कमरे का वही दरवाज़ा, जिधर से कि वह औरत आई थी, बहुतही धीरे से खुला और एक दीगर औरत ने कमरे के अन्दर आकर दरवाज़े को भीतर से बन्द कर लिया। वह औरत धीरे २ उस नाज़नी की तरफ़ बढ़ने लगी, लेकिन उसकी निगाह मेरे जानिबथी। जब वह कुछ करीब आई उसके चेहरे पर उजाला पड़ा तो मैंने पहचान लिया कि यह वही बांदी है, जिसके साथ मैंने दोस्ती कर ली थी और जिसकी वजह से मुझे निहायत आराम मिला था।

यह देखकर मैने खुदा का शुक्रिया अदा किया और समझा कि अब मैं आसमानी या दिलाराम के कब्ज़े से बाहर हूं।

अल्‌गरज़, वह लौंडी मेरे पलंग के पास आकर आगे बढ़ी और उस नाज़नी के पास जाकर खड़ी हो गई, जो बड़े गौर से कोई परचा पढ़रही थी। वह यहां तक उस कागज़ के पढ़ने या उस में की लिखी हुई बात पर गौर करने में गर्क हो रही थी कि उसे कमरे के दरवाज़े के खुलने या लौंडी के आने की मुतलक आहट न मालूम हुई। यह देख उस लौंडी ने आगे बढ़और झुक कर सलाम कियाऔर कहा,—"हुजूर, ठीक है।"

लौंडीकी बात सुनकर वह नाज़नी कुछ चिहुंक उठी और उसकी

तरफ़ देखकर बोली,—"क्या है ?"

लौंडी ने सिर झुका कर अदब से कहा,—"हुज़ूर ने मुझे हुक्म दिया था कि—"

नाज़नी ने जल्दी से बात काट कर कहा,—"हकीम इब्राहीम से नुसखा लिखा कर जल्द ला।"

लौंडी,—"जी हां; लेकिन, हकीम कहता है कि जब तक मैं रोगी को देख न लूंगा, दवा हर्गिज़ न दूंगा।"

नाज़नी,—(त्योरी चढ़ा कर) "न देगा! क्या तूने अशर्फ़ियों की थैली उसे नहीं दी ?"

लौंडी,—"हज़रत! उसने थैली वापस करदी और कहा कि,— "मैं मरीज़ के देखे बगैर अशर्फ़ी भी न लूंगा। आख़िर मैं वापिस चली आ रही हूं।"

यों कह कर उस लौंडी ने अशर्फ़ियों से भरी हुई थैली अपने कुरते के जेब में से निकाल कर उस नाज़नी के आगे रखदी।

नाज़नी ने कहा,—"बुड्ढा पागल होगया है क्या, जो उसने अशर्फ़ियां भी न लीं!"

लौंडी ने कहा,—"हुज़ूर, वह झक्की तो हई है! लेकिन बातों ही बातों में उसके मुंह से दो बातें इस किस्म की निकल गईं कि जिस से मैं समझती हूं कि उसका कान आसमानी ने ज़रूर भरा है और आसानी से उसे कोई गहरी रकम मिली है या मिलने वाली है।"

यह सुनकर वह नाज़नी मसनद पर जाबैठी और लौंडी को बैठने का इशारा करके बोली,—"उस शैतान के बच्चे ने क्या कहा ?"

लौंडी,—"उसने मुझे झिड़कार कर कहा कि,—"तू तो मुझे शाही महलसरा की लौंडी जान पड़ती है और जिस के लिये तू 'अफ़लातूनी' नुसख़ा मांग रही है, वह शख्स तेरा शौहर न होकर, जैसा कि तू बयान करती है, ज़रूर 'मरीज़-उल्-इश्क़' होगा!" फिर उसने कहा कि,—"इतनी अशर्फ़ियां तो मुझे राह चलती भिखमंगिने

दे जाया करती हैं !" बस, इसके बाद उसने मुझे दुत्कार कर अपने घर से निकल जाने के लिये कहा; लाचार, मैं वापस चली आई।"

यह सुनकर वह नाज़नी सिर झुकाए हुई देर तक कुछ सोचती रही; फिर उसने गर्दन उठाई और कहा,—"तेरा खयाल बहुत सही है! इसे मैं भी तसलीम करती हूं कि उस कंबख्त हकीमको आसमानी ने फकीरिन बन कर कुछ दिया होगा और बहुत कुछ देने की लालच दी होगी, तो कुछ भेद की बातें भी ज़रूर ज़ाहिर की होंगी।"

लौंडी,--"जी, बजा इर्शाद है !"

नाज़नी,—"ख़ैर, मैं आसमानी और हकीम, इन दोनों से इस शरारत का बदला लेलूंगी। लेकिन, हकीम की इन बातों पर ग़ौर करने से तो मुझे ऐसा शक होता है कि शायद आसमानी ने यह बात जान ली है कि उसके कैदी को मैं कैदखाने से उड़ा लेआई हूं।"

लौंडी,--"जी, हुज़ूर का फ़र्माना बिलकुल दुरुस्त है। वाकई, बात ऐसी ही है। मैं अर्ज़ ही करने वाली थी।"

नाज़नी,—"क्या, बात है ?"

लौंडी,—"मैं जब हकीम के घर से निकल कर सामनेवाली एक गली में घुसी तो मुझे ऐसा जान पड़ा कि कोई नकाबपोश औरत जोकि वहां पहिले ही से खड़ी होगी, मुझे देख कर तेज़ी के साथ आगे चलने लगी। तब तक मेरा खयाल नहीं बदला था, लेकिन जब वह रह रह कर पीछे फिर फिर कर मेरी तरफ़ देखने लगी तो मेरा खयाल बदल गया, और मैंने तेज़ीके साथ आगे बढ़कर उसका पीछा किया। उस गली में गो, अंधेरा था, लेकिन दुतरफ़ा मकानों के दर्वाज़ों से होकर कुछ रोशनी आ जाया करती थी, इसीसे उसकी हर्कतों को मैंने देखा और उसका पीछा किया। क़िस्सहकोताह, वह उस गली से जब बाहर हुई तो पीछे फिर कर देखती हुई महलसरा की तरफ चली, मैं भी उसके साथ साथ पीछे ही पीछे थी। यहां तक कि चोर दरवाज़े से जब वह महलके अन्दर घुसी तो मैंभी उसके

पीछे घुसी और जब सातवीं ड्योढ़ी पर ख़ाजेसरा ने उसे पहचान कर और " बी, आसमानी " कह कर दो एक दिल्लगी की तो मैंने समझ लिया कि यह कंबख़्त आसमानी ही थी।"

नाज़नी,—" तूने आसमानी से कुछ छेड़ छाड़ न की ? "

लौंडी,—" जी, सुनिए, अर्ज़ करती हूं। आसमानी के बाद मेरा नम्बर आया और जब ड्योढ़ी के अन्दर घुसी तो देखती क्या हूं कि अपने मनहूस चेहरे पर से बोरका हटा कर आसमानी दीए के नज़दीक खड़ी है! मैंने उसे देख कर भी न देखा और कदम आगे बढ़ाया तो उसने तनाज़े से कहा,—" अजी बी! बहुत दूर से धावा मारे चली आरही हो, ज़रा दम तो लेलो! वर न बीमार हो जाओगी और तबीबों की तलाश करोगी।" यह सुन कर मुझे गुस्सा चढ़ आया और मैंने कहा,—"लेकिन तुम्हारी बहकावट में पड़ कर कोई तबीब मेरी ख़बर लेगा, तब तो ? "

इस पर उसने कहा,—"वाह, दोस्त! बड़ी दूर की कौड़ी लाई!"
यह सुन कर मैंने एक भरपूर तमाचा उसे मारा, जिससे,—"हाय तौबः" कह कर वह अपना सर थाम कर बैठ गई और मैं हुज़ूर की ख़िदमत में चली आई।"

यह सुन कर उस नाज़नी ने अपने गले से एक मोती का हार उतार कर उस लौंडी के गले में डाल दिया और कहा,—" मैं तेरी इस कार्रवाई से निहायत खुश हुई, जिसका यह इनाम है! अगर तू पाजी आसमानी के दांत खट्टे कर सके तो मुंहमांगा इनाम पाएगी।"

" जो हुक्म, हुज़ूर" कह कर वह लौंडी उठी और धीरेसे कमरे का दरवाज़ा खोल और उसे बाहर से बंद करके चली गई। उसके बाद वह नाज़नी देर तक पलंग पर बैठी बैठी कुछ ग़ौर किया की। उसका चेहरा मेरे छपरखट के सामने था, इसलिये मैंने उसके चेहरे के उतार चढ़ाव पर बख़ूबी ग़ौर किया और समझा कि मैं फिर भी आसमानी की बद नज़रों से छिपा हुआ नहीं हूं!!! "

नवां परिच्छेद ।

आख़िर, लौंडी को रुखसत करके थोड़ी देर बाद वह परीजमाल मसनद से उठी और मेरे छपरखट की तरफ़ आने लगी। नाज़रीन! आपको याद होगा कि नाम न जानने के सबब मैं इस नाज़नी को पेश्तर 'परीजमाल' ही कह कर पुकारता था। चुनांचे जब वह मेरे पलंग के नज़दीक पहुंची, तब मैं तेज़ी से उठ खड़ा हुआ और अदब से 'आदाबअर्ज़' कर के पूछा,—"मिज़ाज-ई-शरीफ़!"

वह मुझे इस तरह उठते देखकर शायद कुछ खुश हुई और आदाब का ज़बाब देकर कहने लगी,—"हां, भई, यूसुफ़! खुदा के फ़ज़ल से मैं खुश और ज़ियादहतर खुशी तो मुझे इस बात से है कि तुम फिर मेरे पास मौजूद हो! अल्लाह, मैं तो तुम्हारे वास्ते बड़े पसोपेश में थी और मैंने तुम्हारी तमाम शहर में बड़ी तलाश कराई थी, लेकिन जब तुम्हारा सुराग़ कहीं न लगा तो लाचार, मैं हाथ मलकर रहगई। भला, मुझे इसकी क्या खबर थी कि अभी तक तुम 'महलसरा' के अन्दर ही मौजूद हो!!!"

मैंने कहा,—"साहब! मुझ ग़मज़दे की मुसीबतों का हाल कुछ न पूछिए! नहीं मालूम कि मौत कम्बख्त मुझे क्यों भूल गई, जो इतने सदमें उठाने पर भी जान तन से जुदा नहीं होती!"

उसने कहा,—यूसुफ़, अफ़सोस न करो, सब्र करो और ग़ौर तो करो कि वही पेश आएगा, जो कुछ कि पेशानी में है!"

मैंने कहा,—"ख़ैर, मैं अब पेश्तर आपसे यह अर्ज़ करता हूं कि हज़रत बराहे मिहरबानी बैठ जांय और अगर कोई हर्ज़ वाक़ः न हो तो चंद लहज़ः कुछ बात चीत करें!"

यह सुन कर एक कुर्सी खैंचकर वह बैठ गई और मुझे ज़बर्दस्ती पलंग पर बैठा कर कहने लगी,—"दोस्त, यूसुफ़! क्या तुम पहिले के रिश्ते को भूल गए; जो फिर "आप—आप" के सिलसिले के

ज़ाती करते हो! अर्जी, दोस्ती में 'आप' लफ़्ज़ हर्गिज़ जायज़ नहीं है।"

मैंने हंस कर कहा,—"और, यह तुम्हारी ऐन मिहरबानी है, वरन बंदा तो इस काबिल भी नहीं है कि तुम्हारी जूतियों तक भी रसाई पासके; मगर ख़ैर, यह तो बतलाओ कि मैं तो उस छूरियोंवाले पुतले के आगे बेहोश था, फिर यहां क्यों कर आगया?"

परीजमाल ने कहा,—"यह एक खुदा की मिहरबानी थी कि ऐन मौके पर मुझे मेरी लौंडी ने इस बात की खबर दी और कहा कि,—"आप का यूसफ़ महलसरा के अन्दरही मौजूद है और उसकी जान 'चाहे खंजर' से ली जारही है।" बस, इतना सुनते ही मैंने किसी हिकमत से तुम्हें जल्द वहांसे छुड़ा मंगाया और यहां पर बड़ी हिफ़ाज़त के साथ रक्खा।"

मैंने कहा—"अलहम्दुलिल्लाह! लेकिन, मुझे यहां पर आए कै दिन हुए?"

वह,—"सिर्फ़ सात दिन!"

मैं,—"एक हफ्तः!!!"

वह,—"हां, ताज्जुब न करो, क्योंकि तुम इतने काहिल और सुस्त होगये थे कि अगर बड़ी हिफ़ाज़त और मुस्तैदी के साथ तुम्हारा इलाज न किया जाता तो अजब नहीं कि तुम्हारे दुश्मनों की जानों पर आ बनती। लेकिन शुक्र है खुदा का कि तुम बच गए और बहुत जल्द अच्छे हुए।"

मैं,—"तो क्या, जिस दिन मैं यहां पर लाया गया था, उसके बाद आज ही मैं होश में आया हूं?"

वह,—"नहीं, होश में तो तुम उसी रोज आगये थे, लेकिन हकीम की यह राय थी कि जब तक तुम्हारे दिलमें पूरी ताकत न पहुंच ले, तुम होश में न लाए जाओ; क्योंकि अगर दिल की कमज़ोरी की हालत में तुम होश में आते तो बीमारी के बढ़ने का खौफ़ होता। चुनांचे उस दवाके साथ इस अन्दाज़ से तुमको शराब पिलाई जाती

थी कि जिसमें तुम बख़ूबी होश में न आ सको। आज भी तुम्हें बदस्तूर दवा के साथ शराब पिलाई गई थी, लेकिन शुक्र है ख़ुदा का कि दिल में पूरी ताकत आने से शराब का ज़ोर जाता रहा और तुम होश में आ गए। बस, यही तुम्हारे यहां पर लाए जाने का किस्सा था, जो तुम्हारे आगे मुफ़स्सिल बयान किया। अब मेरी राय यह है कि थोड़े दूध के साथ एक दवा तुम पीओ और सो रहो; फिर सुबह को, और जो कुछ बातें तुम्हें करनी होगी, कर लेना।"

मैंने कहा,--"साहब! ऐसा न कहो, अब तो बंदा जब तक भर-पेट बातें कर के अपने दिल का बोझा हलका न कर लेगा, आपकी एक न सुनेगा। अच्छा, यह तो बतलाओ कि इस वक्त दिन है, या रात; और कै बजने का वक्त है?"

उसने कहा,--"इस वक्त रात है,और तीन बजने में थोड़ी ही देर है"

मैं,—"भला,तुम कब तक यहां ठहर सकती हो?"

वह,--"मैं, अगर कोई तुम्हारा काम हो तो, सुबह तक बराबर ठहर सकती हूं।"

मैं,—"इसमें कोई हर्ज तो न होगा?"

वह,—"नहीं, कोई हर्ज न होगा; क्योंकि बादशाह सलामत तो शिकार के लिये कई दिनों से लखनऊ से बाहर गए हुए हैं, इसलिये मैं आसानी से यहां ठहर सकती हूं। और अगर कोई ऐसी ही ज़रूरत आएगी तो मेरी लौंडी फ़ौरन मुझे ख़बर देगी।"

मैं,—"आप बादशाह के हमराह नहीं तशरीफ़ ले गईं?"

वह,—"मैं जाती तो ज़रूर, लेकिन तुम्हारी वजह से लाचार, न जासकी और 'तबियत नासाज़' का बहाना करके रह गई! आख़िर मैं जाती तो तुमको किसके सुपुर्द कर जाती?"

मैं,—"अच्छा, पेश्तर आप यह तो बतलाएं कि, आप असली हैं, या नकली?"

मेरी बात सुन कर उसने मुझे घूर कर देखा और भौंवें तान कर

कहा,—"फिर " आप आप ! " मगर ख़ैर ! लेकिन ' नकली ' और ' असली ' के क्या मानी ? "

मैं,—" क्या तुम इतनी जल्दी उस बात को भूल गईं ! अजी दोस्त, जिस गोल कमरे में तुमने मुझे पेश्तर कैद किया था, उसमें एक रोज़ एक औरत बिल्कुल तुम्हारीसी ही सूरत बना कर मुझे मारने आई थी। "

वह,—" आह, उस बात को तो मैं बिलकुल भूलही गई थी, लेकिन अब सारी बातें याद हो आईं। "

मैंने कहा,—" तो आपने उस औरत का पता ज़रूर लगाया होगा कि दरअसल वह औरत कौन थी ? "

वह,—" हां, कुल बातों का पता मैंने लगा लिया। यानी मेरी सूरत की औरत बन कर जो आई थी, वह नज़ीर की आशना थी जिसकी बदौलत आसमानी तुम्हारे खून की प्यासी होरही है और तुम महलसरा के अन्दर इतनी तकलीफें भोग रहे हो ! "

मैं,—"और आपकी लौंडी ने जो यह ख़बर दी थी कि,—"जहां. पनाह आरहे हैं वह ख़बर कैसी थी ? "

वह,—" बिलकुल गलत ! यानी उसी बदकार की एक लौंडी, मेरी लौंडी की सूरत बनकर वहां पहुंची थी और वह बात उसीने कही थी, जिसे सुनकर मैं सन्नाटे में आगई और चट मैंने एक कल दबाकर वहां का चिराग गुल कर दिया। इसके बाद जब मैंने वहांसे तुम्हें उठा लेजाने के लिये तुम्हारी पलंग पर हाथ बढ़ाया तो उस पर तुम्हारा कहीं पता ही न था !!! "

मैंने कहा,—" हां, चिराग गुल होतेही किसी मज़बूत कलाई ने मुझे पकड़ कर बेहोश कर दिया, फिर जब मेरी आंखें खुलीं तो मैंने अपने तईं आसमानी की कैद में पाया। "

इसके बाद फिर जितने दिनोंतक मैं उस परीजमाल के पास से गायब रहा, और उतने दिनोंतक जो कुछ मुझपर बीता था, उसका

मुफ़स्सिल हाल मैंने उसे सुना दिया, जिसे सुनकर उसने कहा,--

" लेकिन, यूसुफ़, महलसरा के अन्दर वैसी कोठरी के होने का हाल मुझे ज़रा भी मालूम नहीं है, इसलिये यह मैं नहीं बयान कर सकती कि वह कोठरी महल के किस हिस्से में है और वहां पर तुमको किस औरत ने रक्खा था। जैसा कि तुमने बयान किया, उससे तो यही जान पड़ता है कि वह औरत तुम्हारी दुश्मन न थी, लेकिन फिर वह दरअस्ल कौन थी, यह मैं नहीं कह सकती। लेकिन सुनो तो, जब कि उस मुक़ामपर आसमानी और उसकी बेगम पहुंच गईं; तो मुझे ऐसा मालूम पड़ता है कि हो न हो, वहां पर उसी बेगम ने तुमको रक्खा होगा और जब तुम उसके झांसे पट्टी में न आए होगे तो फिर उसने तुम्हें तकलीफ़ देने की नीयत से वहां से दूसरे मुकाम पर पहुंचाया होगा!"

मैंने उसकी इस किस्म की बातें सुनकर कहा,--" मुम न है कि जैसा तुम कह रही हो, दरअस्ल बात ऐसी ही हो!"

उसने कहा,--" उसमें एक सुबूत और भी है, यानी, मेरे पास जब तुम पेश्तर थे, तब भी तो वही नालायक बेगम मेरी सूरत बदलकर तुम्हें अपने दाम में फंसाने आई थी!"

मैंने जल्दी से कहा,--" वल्लाह, आपने बहुतही सही फ़र्माया, और अब मुझे इस बात का पूरा यकीन होगया कि वही बेगम कभी तो मुझे आराम देती है और कभी तकलीफ़ पहुंचाती है।"

वह,--" और यह बात तभी तक है, जब तक तुम उसके दाम में नहीं फंसते; क्योंकि जिस दिन तुम उसके चकमे में फंस गए, उसी दिन कातिल औरत अपना दिली अरमान निकाल कर तुम्हें फ़ौरन मार डालेगी।"

इतना सुनतेही मेरा ख़याल उस ख़त की तरफ़ गया, जिसे मैंने, उसी गोल इमारत में, जिसमें कि पेश्तर इसी परीजमाल ने मुझे रक्खा था, चहारदरवेश नामी किताब के अन्दर से पाया था! मैंने चाहा कि उस ख़त के बारे में इससे कुछ सवाल करूं, लेकिन फिर यह समझ

कर मैं चुप रह गया कि अभी इससे कुछ न कहना चाहिए और देखना चाहिए कि अखीर तक यह औरत मेरे साथ कैसा बर्ताव करती है। और अब मुझे जहां तक हो, इससे भी बखूबी बचे रहना चाहिए, ताकि जान बची रहे; क्योंकि मुमकिन है कि यह हूर भी मुझसे अपना मतलब निकाल कर मार डाले, जैसा कि उस ख़तमें लिखा हुआ था !!!

मुझे कुछ देर तक चुप देख कर यह औरत उठी और उठ कर उसने मुझे एक दवा खिलाई और दूध पिलाया; फिर कहा,—" अब तुम मज़े में सोओ, खुदा ने चाहा तो कल शब को फिर मैं तुम से मुलाकात करूंगी। "

मैंने कहा,—" क्या दिन के वक्त मुलाकात नहीं होगी ? "

उसने कहा,—" नहीं दिन के वक्त मैं लोगों की नज़रों से गायब रहना मुनासिब नहीं समझती।

मैंने कहा,—" लेकिन, यह तो बतलाओ कि यहां पर तो आसमानी न आयगी ? "

वह,—" मुमकिन तो ऐसा ही है कि यहां वह कंबख़्त न आसके, लेकिन अगर वह इस मर्तबः इधर आवगी तो फिर जिन्दी लौटकर यहांसे वापस न जासकेगी, क्योंकि इस कमरेमें आनेके लिये सिर्फ एक ही रास्ता है, जो मेरे ख़ास कमरे के अन्दर से है, जहां पर पहिले पहिल तुम गये थे। "

मैंने कहा,—" खैर तो अब शायद दवाने कुछ असर किया, क्योंकि नींद आने लगी, इसलिये मैं सोता हूं। "

उसने कहा,—" बेहतर, सोओ, मैं भी अब जाती हूं। "

इतना कहकर उसने मुझसे हाथ मिलाया और मैं पलङ्गपर आकर लेट रहा। लेटते ही मुझे नींद आगई और फिर मुझे नहीं मालूम कि परीजमाल कब उस कमरेके बाहर गई, क्योंकि जब तक मैं जागता था, वह उस कमरे के अन्दर ही मौजूद थी।



दूसरा परिच्छेद ।

मेरी आंखें जब खुलीं, मैंने देखा कि वह लौंडी मेरे सिरहाने खड़ी खड़ी मुझे टकटकी बांधकर देख रही है!!! उसे देखते ही मैं उठ बैठा और आंखें मल, अंगड़ाई ले और दो चार जंभाई लेकर मैंने उस लौंडी से कहा,—

"आज, ऐ हुस्न की गुमनाम! तुमसे दो दो बातें करने का मौका मुझे मिला है। क्या मैं उम्मीद करूं कि इस वक्त तुम मेरे साथ कुछ बात चीत कर सकोगी?"

मेरी बात सुन कर उसने गर्दन झुका ली और फिर ज़रा मुस्कुरा दिया और कहा—"हुज़ूर, आप जैसा शख्स मुझ नाचीज़ लौंडी के साथ क्या बातें करेंगे?"

मैंने कहा,—"बीबी, तुम लौंडी जिसकी होगी, उसकी होगी, मैं तो तुम्हें अपना दोस्त समझता हूं और यह बात मेरे बर्ताव से शायद पेश्तर भी तुमपर रौशन होचुकी होगी।

उसने कहा,—"जनाब, यह आपकी ऐन मिहरबानी है कि आप मुझपर इतनी नज़र रखते हैं वरन मैं एक महज़ नाचीज़ बांदी के अलावे और कुछ नहीं हूं।"

मैंने कहा,—"यह तो तुम मेरे ज़ख्मी जिगर पर नमक छिड़कती हो! क्या तुम मेरे बर्तावको बिल्कुल भूल गईं! अफ़सोस, आज तुम "तुम लफ़्ज़' छोड़कर फिर 'आप, आप' के सिलसिले को क्यों शुरू करती हो?

यहकहने लगी,—"हज़रत, मैं एक निहायत गमज़दः और फ़लक की सताई हुई हूं, इसलिये आप मुझ बदबख्त पर रहम कीजिये और इस नीमबिस्मल को कत्तई कत्ल न कीजिये।"

मैंने कहा —"अफ़सोस, अफ़सोस, तुम सीधी बात को जान बूझकर नाहक पहेली बनारहीहो और साफ़ नहींकहती किमेरा ऐसा क्याक़सूर है जिसकी वजह से तुम इस कद्र मुझ से नाराज़ हो!"

वह;—"आपपर, और नाराज़ ! अह, तौबः !; भला मेरी इतनी मजाल है कि मैं आप से नाराज़ होऊं ?"

मैंने कहा,—"हां तो तुमने पेश्तर मुझसे इतनी मुहब्बत बढ़ाई थी; और कहां अब आज बातों ही बातों तुम मुझ से इतनी अलग हो रही हो !।"

उसने कहा,—"मैंने ! क्या मैंने आपसे मुहब्बत बढ़ाई थी ! मआज़ अल्लाह ! यह आप कह क्या रहे हैं ?"

मैं,—"ओफ़,तो क्या तुम वह न थीं,वह कोई दूसरी ही नाज़नी थी,: जिसने पेश्तर, जबकि मैं गोल इमारत में था, तुम्हारी सूरत बन कर पेश्तर तो मुझ से खूब मुहब्बत बढ़ाई थी; लेकिन जब मैंने उस के कहने बमूजिब दिलाराम को तलाक़ देना मंज़ूर न किया तो वह झुंझला कर और मुझे डरा धमका ख़फ़ा होकर चली गई थी ।"

मेरी बात सुनकर उसके चहरे ने कई रङ्ग बदले और उसने बड़े तअज्जुब से कहा;—"ओहो; अब मैं सब मतलब समझ गई ! आह, यूसुफ़! तुमने भई बड़ा भारी धोखा खाया; क्योंकि मैं बदगुमान थी !

मैंने ताज्जुब से कहा,—"तो क्या, जैसे तुम्हारी अलफ़ाकी सूरत बनकर कोई मक्कार आई थी, वैसेही तुम्हारी सूरत भी किसी गैरने बनाई थी ?

वह,—बेशक, "ऐसाही हुआ था और यह सारा फ़साद तुम्हें धोखे में डालने के लिये ही किया गया था !"

मैं,—"तो अब मैं क्योंकर जानूं कि उसवक़्त तुमसे मेरी क्या क्या बातें हुई थीं, और तुम्हारी सूरत वाली मक्कारके साथ क्या ?"

वह;—"उस वक़्त मेरे साथ तो आपकी कुछ भी बात नहीं हुई थी, क्योंकि मक्कारोंके मना करदेने से मैं आपसे बोलती ही न पाई । हां,आप मुझसे अक्सर छेड़छाड़ किया करते थे, लेकिन मैं अहतियात [illegible] हूं यही ठीक समझती हूं कि मैं उनसे आपसे कभी बोली भी न थी । इतने दिनोंके बाद आज वह [illegible]

बातें कीं. इसकी भी कोई वजह खास है।"

उस लौंडी की बात सुनकर मैंने घबराकर पूछा,—"तो क्या, वाकई' यह जो कुछ तुम कहरही हो' सही है ?"

उसने कहा'—" बेशक, अगर आपको मेरी बातोंपर यकीन हो!'

नाजरीन उस लौंडीकी बातें सुनकर मैंने दिलही दिल में कहा,—"इलाही, यह क्या माजरा है! आह, मैंकिसबलामें आकर फंसगयाहूं!

मुझे गौर करते देखकर वह लौंडी जरा मुस्कुराई और कहने लगी,—"क्या आप मिहरबानी करके उन बातों को मेरे आगे जाहिर कर सकते हैं, जिन्हें कि आपने मेरी हीसूरत शकलवाली लौंडी से पेश्तर कही थीं।

इस पर मैंने मुख़्तसर तौर पर वह सारा दास्तान कह सुनाया जिसे उसने गौर से सुना और कहा,—"अल्लाह, अल्लाह, उस हरामज़ादी ने आपको बेतरह धोखादिया, लेकिन खैर, यह जानकर मुझे निहायत खुशी हुई कि आप मुझे इतना प्यार करते हैं।"

मैंने कहा,—"थे, क्या, बल्कि यों कहो कि हैं ! वो गुमनाम ! अबतो तुम बराहे मिहरबानी अपना नाम बता दो, और कोई ऐसा निशान मुझे बता दो, जिसमें तुम्हें पहचानने में मुझे आइन्दे धोखा न खाना पड़े और उस नकली हरामज़ादी को मैं आसानी से पकड़ सकूं।"

मेरी बातें सुनकर उसने कहा,—"साहिब ! आपको अगर मेरे नाम सुनने से तस्कीन हो तो सुन लीजिये,—मेरा नाम जोहरा है, लेकिन, देखियेगा,—खबरदार, भलका के कबरू मुझे इस नाम से हर्गिज न पुकारियेगा। वरन मेरी और आपकी जान की खैर नरहेगी। और दूसरी बातके जवाबमें मैं सिर्फ इतनाही निशानकाफी समझती हूं कि जब तक मैं आप से आकर यह न कहा करूं कि, लो दोस्त, तुम्हारी लौंडी जोहरा आगई, तब तक तुम मुझ से हर्गिज़ किसी किस्म की बात चीत न करना और बस यही तरीका

ऐसा है कि तुम नकली ज़ोहरा को आसानी से गिरफ्तार कर सको। मैं लेकिन मलका के सामने मैं आपसे हर्गिज़ न बोलूंगी, इस लिये उस वक्त तुम भी ख़ामोश रहना, और इस रोज़ को हर्गिज़ उस पर ज़ाहिर न करना, वर न, बहुत बुरा होगा। लो अब ':लफ़्ज़ आप ' छोड़ कर निहायत शोरी 'तुम' वाले सिलसिले को ज़ारी करती हूं।"

उसकी बातें सुनकर मैं निहायत खुश हुआ और इसलिये कि तनहाई की हालत में एक खूबसूरत नाज़नी से दोस्ती का होजाना मैंने गनीमत समझी! बाद इसके मैंने उसका हाथ खैंचकर अपने बराबर पलंग पर बैठा लिया और चाहा कि उसे गले लगाकर अपने जले हुए दिलको कुछ ठंडा करूं, लेकिन उसने मेरा हाथ झपका और ज़रा त्योरी बदलकर कहा,--

"सुनो मर्द, मुहब्बत के दर्मियान इतनी जल्दी ठीक नहीं, क्योंकि अभी तुम मुझे और मैं तुम्हें बख़बी दोस्ती की तराज़ू में तोललें और पूरा पूरा एकरार करलें, तब जो कुछ होनाहो, सो हो! क्योंकि मर्द की ज़ात निहायत ' एहसान फ़रामोश ' होती है, बस जहां उसका मतलब पूरा हुआ कि फिर वह लालची भौंरे के मिसाल नई कली की खोज में दीवाना हो जाता है और अधखिली, या रसलूटी हुई कली की फिर कुछ पर्वा नहीं करता।"

मैंने कहा,--"हां, यह तुम्हारा सोचना बहुत सही है, और जिस तरह तुम चाहो मुझे आजमा लो और अपना दिल भर लो। मैं हर तरह से तुम्हारी दिलजमई कर देने के लिये तैयार हूं।"

उसने कहा,—"ख़ैर तो सुनो, पहिले तो असल बात यह है कि तुम मुझसे रंडी का सा सरोकार रक्खा चाहते हो, या मुझे अपनी बीबी बनाने की ख्वाहिश रखते हो?"

मैं,—"नहीं, रंडी से सरोकार रखना शराफ़त बईद है, इसलिये मैं शरा के बमूजिब निकाह पढ़वा कर तुम्हें अपनी बीबी बनाऊंगा।"

वह,—बेहतर, मैंभी यही चाहती हूं लेकिन इसमें कई बातें जो

पेचीद: हैं, उनको अभी ज़ाहिर कर देना मैं ज़ालिम समझती हूं।"

मैं,—"हां, हां, जो कुछ बातें तुम्हारे दिल में हों, उन्हें अभी ज़ाहिर करके तय करलेना मुनासिब और ज़रूरी है।"

वह,—"उनमें से एक बात तो यह है कि निकाह की रस्म तभी पूरी हो सकती है, जबकि हम तुम दोनों इस 'महलसरा' के बाहर हो सकें।"

मैं,—"लेकिन, यह तो मेरे अख़्तियार के बाहर बात है। अगर ऐसा मैं कर सकता होता तो अब तक कभी का यहांसे बाहर निकल गया होता।

वह,—"लेकिन तुम आगे मुझसे शादी करने पर आमाद: तो होलो, फिर मैं बो आसानी तुम्हें महलसरा के बाहर निकाल ले जाऊंगी।"

मैं,—(जल्दी से) "अगर ऐसा तुम कर सको तो मैं अभी चलने के लिये तैयार हूं।"

वह,—"लेकिन ठहरो और जल्दी न करो। सुनो, तुम्हे यहां से निकाल कर मैं क़ाज़ी ज़मीलुद्दीन के घर लेजाऊंगी और वहां से निकाह पढ़ाकर तुम्हारे साथ किसी दूसरे मुल्क में जाकर रहूंगी क्योंकि जैसी हालत तुम्हारी है, और जिस लिये तुम महलसरा के अन्दर कैद हो, यह कभी मुमकिन नहीं है कि लखनऊमें तुम आराम से एक दिन भी रह सको।"

मैं,—"यह सब मुझे मंजूर है।"

वह,—लेकिन पेश्तर मेरी बात तो सुन लो! मैं एक गरीब नाचीज़ लौंडी हूं,पस, मेरे पास दौलत का नामोनिशान भी नहीं है, जिससे मैं तुम्हारी किसी किस्म की मदद कर सकूंगी, सो तुमने मेरे और अपने गुज़ारे के लिये कौन सी तजवीज़ की है, जिससे जिन्दगी के दिन आरामोचैन के साथ पूरे हो सकें।"

ज़ोहरा ने यह एक ऐसी बात कही कि जिसे सुनकर मैं सन्नाटेमें आगया। क्योंकि नाज़रीन मेरी हालत से वाक़िफ़ हैं कि दिलाराम के साथ मैं किस तरह गुज़ारा करताथा। और ज़ोहरा की बातें सुन

कर मैं चुप होगया और देर तक मैने कोई जवाब न दिया। यह देख कर उसने कहा,—

"बस, एक बात और कह कर मैं अपनी बात पूरी करूंगी और वह यह है कि अगर तुम्हारी दिलाराम कभी मिल जाय तो तुम शौक से उसे अपने घर रख लेना उस हालत में मैं जैसी ख़िदमत मैं तुम्हारी करती रहूंगी वैसी दिलाराम की भी करूंगी, यानी तुम दोनोंकी लौंडी होकर मैं रहूंगी। बस, अब मुझे कुछ नहीं कहना है, लेकिन इतना सुनना जरूर है कि तुम अब क्या कहतेहो।

मैने कहा,—" बी जौहरा, खुदा जानता है कि तुम्हारी बातोंसे मैं निहायत खुश हुआ और ज़ियादहतर खुशी मुझे इस बात से हुई कि तुम दिलाराम से सौतियाडाह नहीं रखतीं,लेकिन कोई पशोपेश की बात है तो यह है कि मेरी हालत बहुतही ख़राब है और मुझे एक मुद्दत से अपने घर की कुछ भी खबर नहीं है कि वह किस सूरत में है।"

इस पर उसने कहा,—" उसका हाल अगर दिल चाहे तो मुझसे सुनो।"

मैने कहा,—"यह तो बड़ी खुशी की बात होगी, अगर उसका हाल तुम्हारी जबानी मैं सुनूंगा।"

वह बोली,—" लेकिन वह हाल सुनने पर वह खुशी अफ़सोस के साथ बदल जायगी।"

मैं,—" चाहे कुछ भी हो, लेकिन जानती हो तो उसका हाल तुम जरूर सुनाओ।"

वह,—" मैंने गोल इमारत के अन्दर से तुम्हारे गायब होने पर मलका के हुक्म बमूजिब तुम्हारा जब पता लगाया तो मुझे मालूम हुआ कि तुम्हारे मकान का अब निशान भी बाकी नहीं रह गया है और उसकी जगहपर एक खुशनुमा मसजिद बनी हुई है। बस,सिर्फ इसीबातके ज़ाहिर करने के लिये मैं इस वक्त तखलियेमें आईथी,जैसा कि मैं ऊपर कह आई हूं कि मैं इसवक्त तुमसे किसी खास सबब से

मिलने आई हूं।"

यह सुनकर मुझे निहायत अफसोस हुआ, जिसका बयान मैं नहीं कर सकता, लेकिन उस सदमे को मैंने दिल को मज़बूत करके बर्दाश्त कर लिया और ज़ोहरा से कहा,--

"यह सुनकर, कि अब मेरे घर का नामोनिशान भी बाकी नहीं रह गया, मुझे निहायत अफ़सोस हुआ।"

इसपर उसने जल्दी से कहा,--"यह बात मैंने पेश्तर कह दी थी।"

मैंने कहा,--"खैर सुनो, मुझे इतना घमंड ज़रूर था कि मेरे पास एक मकान भी है, सो अल्लाह ने उस घमंड के शीशे को भी चकनाचूर कर दिया, लेकिन इतनी खुशी मुझे ज़रूर हुई कि मेरे घर की जगह पर खुदा घर (मसजिद) बन गया। गो, यह कार्रवाई ज़रूर आसमानी की जानिब से की गई होगी, लेकिन इतना एहसान उसका मैं ज़रूर मानूंगा कि उसने वहां पर मसज़िद बनवादी।"

उसने कहा,--"यह कार्रवाई भी उसकी चालाकी से खाली नहीं है। क्योंकि यों तो तुम अपने घर के वास्ते दरबार में उज़्र भी कर सकते थे और शायद उस पर दरबार कुछ इन्साफ भी कर सकता था, लेकिन अब मसज़िद के खिलाफ़ न तुम लब हिला सकते हो और न दरबार इसपर कान देसकता है।"

मैंने कहा,--"ठीक है, लेकिन खैर! ऐ ज़ोहरा अब मैं तुमसे क्या कह सकता हूं! बेशक मुझे अपने घर पर निहायत घमंड था। गो, मैं कुछ ज़रदार शख्स न था, लेकिन हज़ारों रुपए के मुतफ़र्रिक़ असबाब मेरे पास थे, सैंकड़ों रुपये की तस्वीरें लिखी हुई तैयार थीं और गुज़ारे के लायक और भी बहुत से सामान थे। गो, रुपए पैसे तो उतने न थे, जो कुछ था, उसकी बदौलत जहां मैं जाता, वहीं मिहनत करके आसानी से दो पैसा कमा खाता, लेकिन अब मैं लाचार हूं और सिवा इसके और क्या कह सकता हूं कि ऐ ज़ोहरा!

अब मैं तुम्हारे काबिल हर्गिज़ नहीं रहा। अफ़सोस, अफसोस !!!"

यों कहते कहते मेरी आंखें डबडबा आईं और गला रुंध गया। मैंने अपनी आंखें नीची करलीं और फ़िक्रके दर्या में मैं ग़र्क हो गया। मेरी हालत देखकर जोहरा ने बेतकल्लुफ़ीके साथ अपनी बाहें मेरे गले में डाल दीं और अपनी ओढनीके आंचल से मेरी तर आखें पोंछकर कहा,—

"प्यारे, यूसुफ ! सिर्फ़ तुम्हारी मुहब्बत की बानगी देखने के वास्ते मैंने अपनी गरीबी तुम पर जाहिर की थी, लेकिन वह सिर्फ़ एक बातथी। दर असल मैंने मलका की खिदमत करके इतनी दौलत अपने पास जमा कर ली है कि जिसकी बदौलत किसी गैर शहर में जाकर हम तुम उस अमीरानः ठाटसे अपने दिन बितायेंगे कि जिस तरह बड़े बड़े अमीरोंके दिन निहायत ऐशो आरामके साथ कटतेहैं।"

लेकिन, मैंने उसकी इस हर्कत, या, बातका कुछ भी जवाब न दिया और आंसू बहाने लगा। उसने लगातार मेरी नम आखें पोंछीं, तसल्ली दी, और कहा,—

"भई,यूसुफ़ ! औरतों की तरह मर्दोंको आंसू न बहाना चाहिये और दिलेरी के साथ कमर कसकर गम की तरद्दुद से लड़ने के लिये हरवक्त मुस्तैद रहना चाहिये। मैंनेतो सिर्फ तुम्हारी मुहब्बतकी थाह लेने के वास्ते इस ढङ्गकी बातें कीं थीं अगर मैं ऐसा जानती कि इन बातों से तुम इतने ग़मगीन होगे तो मैं हर्गिज न कहती।"

मैंने अपने दिलको मसल कर और आंखें पोंछ कर कहा,—"ज़ोहरा, मैं तुम्हारे काबिल नहीं हूं।"

जोहरा कहने लगी,—"वल्लाह, अब ये नखरे! अजी दोस्त, मेरी दौलत क्या तुम्हारी नहीं है? फिर वह भी इतनी है कि ज़िससे तुम एक नहीं सौ घर ख़रीद कर सकोगे और अमीरानः तौर से गुजारा कर सकोगे। फ़िर जब कि तुम्हारी ज़िन्दगी ऐश में कटैगी तो तुम मुसव्विरी के वास्ते वक्त ही कहां पाओगे! और अगर शौक़िया वह काम किया भी चाहोगे तो चाहे जितने सामान आसानी से खरीद

द लेना। अब यह बतलाओ कि तुम अब कब यहां से चलोगे और निकाह करने के बाद किस शहर में चलकर रहोगे ?"

मैंने कहा,—"ओफ़ यह कैसी शर्म की बात है कि मैं बीबी की दौलत से ऐशो आराम करूं ?"

उसने कहा,—"क्यों हज़रत ! अगर तुम्हारी बीबी अपने मायके से अगर कुछ दौलत पाती या लाती, तो क्या तुम उस दौलत को भी इसी हिक़ारत की नज़र से देखते !"

मैंने कहा,—"प्यारी ज़ोहरा ! मैं कायल हुआ; बस अब तुम मुझे जियादा शर्मिंदा न करो और जो कुछ कहो, मैं करनेके वास्ते तैयार हूं।"

उसने कहा,—"तो अब कब चलोगे !"

मैंने कहा,—"प्यारी मैं तो अभी चलने के लिये तैयार हूं।"

वह बोली,—"तो बहतर है, चलो; लेकिन ठहरो और सुनो ! इतनी जल्दी ठीक नहीं; आखिर मुझे भी तो अपने माल को, जो इधर उधर बिखरा हुआ है; इकट्ठा करके साथ लेना है। पस, जबमैं हर तरहसे तैयार हो लूंगी और मौका देखूंगी, तुम्हें यहां से निकाल ले चलूंगी।"

मैंने कहा,—"बेहतर, लेकिन जहां तक हो सके, जल्दी करनी चाहिये क्योंकि इस कफ़स से अब मेरा जी एक दम ऊब गया है।"

वह,—"हां, जहां तक होसकेगा, मैं जल्दी करूंगी, लेकिन मौका भी तो हाथ आना चाहिये, क्यों कि मलका के महल से होकर जाना पड़ेगा, इस लिये जब तक मौका हाथ न आए, सब्र करना पड़ेगा।"

मैंने कहा,—"क्या किसी हिकमत से मलका को बेहोश करके अपना काम नहीं निकाला जा सकता ?"

यह सुनकर उसने मेरीओर न मालूम किस मतलबसे मुस्कराकर देखा और कहा,—"यहतो तुमने बहुतही सही कही, ऐसा ही किया जायगा और इस कार्रवाही से, मैं समझती हूं कि मौका बहुत जल्द हाथ आएगा।"

मैंने कहा—"बस फिर क्या पूछना है ! इस कफ़स से छूटते ही

मैं काजी जमालुद्दीनके घर चलकर तुम्हारे साथ निकाह करूंगा और बाद इसके देहली मे चलकर रहूंगा।"

यह बोली,—"नहीं, देहली में रहना ठीक नहीं! क्योंकि हमारे तुम्हारे गायब होने पर मलका मेरी और आसमानी तुम्हारी तलाशमें तमाम दुनियां छान डालेगी। अब, देहली आगरे का ख़्याल दिल से दूर करके किसी ऐसे शहरमें चलकर कुछ रोज़तक इस तौर से अपने तई छिपाकर रहना चाहिये कि जिस में किसीको अपने पास जियादा दौलत होने का शक न रहे और किसी आफत मैं न फ़ंसना पड़े।"

इस मस्लहत को सुनकर मैंने उसकी अक्लमंदीको दिलही दिल में सराह और कहा,—"बेशक, तुम्हारा ख्याल बहुत दुरुस्त है और हम लोगो को अपनी हालतपर गौर करके ऐसाही करनाभी चाहिये लेकिन बात यह है कि तब फिर मैं कुछ दिनों तक मुसव्विरी भी न करूंगा; क्योंकि इससे जल्द गिरफ्तार होजाने का डर बना रहेगा और बग़ैर रोजगार के भी किसी नए शहर में रहना अपने सर-पर बला लेनी है।"

जोहरा ने कहा,—"यह तो सही है, लेकिन इससे क्या? तुम दूसरा पेशा करना!"

मैंने कहा,..."दूसरा पेशा मैं जानता नहीं।"

यह सुनकर जोहरा खिलखिला उठी और कहनेलगी,—"दूसरा पेशा मैं बतलाती हूं—तुम दरज़ी की दूकान करना!"

यह सुनकर मुझे हंसी आगई और मैंने उसकी तरफ देखकर कहा,—"वल्लाह,पेशा तो खूब तजवीज किया तुमने!नतीजा इसका यह होगा कि लोगों को मुझपर बहुत जल्द शक होजायगा।"

जोहरा बोली,—"कुछ न होगा, मैं सीना जानती हूं; बस, तुम्हारा काम मैं करूंगी और उम्मीद करतीहूं कि तुमको भी मैं बहुत जल्द इस फन में होशियार कर दूंगी। क्योंकि इन्सान को चाहिये कि गर्दिश के दिनों को आसानी से काटने के लिये वह कई हुनरों में पहिले ही से जानकारी रक्खे और एक ही हुनरपर मौकूफ़ न रक्खे

आखिर, उसकी इस सलाहको मैंने कबूल किया और पूछा कि—"किस शहर में चलने से बिहतर होगा ?"

उसने कहा,—"निज़ामकी दारुल्सल्तनत हैदराबाद एक निहायत दिलचस्प शहर है। समझती हूं कि इससे बहतर दूसरी जगह हम लोगोंकी हालत के म्वाफ़िक मौजूद नहोगी। लेकिन, ख़ैर, जैसा होगा देखाजायगा। अब मैं जाती हूं, क्योंकि सुबह हुआ चाहती है और मैं मलका के पास से बहुत अरसे से गैरहाजिर हूं।"

यों कह कर वह उठी, मैं भी उठा और मैंने उसका हाथ थामकर कहा,—"बी, ज़ोहरा, मुझे भूल न जाना।"

उसने मेरे हाथ को बड़ी मुहब्बत के साथ चूम लिया और हंस कर कहा,—" भूलजाना बेवफ़ा मर्दों का काम है, न कि वफ़ादार औरतों का ! ! !"

मैंने कहा खैर, यह तो बतलाओ कि जब तुम यहां आई थीं, तब रात कितनी बाकी रह गई थी ? "

उसने कहा,—" एक पहर।"

मैं,—" तो तुम दो बजे के वक्त यहां आईं ? "

वह,—"हां, दो बजेके बाद! क्योंकि तबतक मलका सोई न थी। पस ज्योंही उसकी आंखें लगीं; मैं यहां आई और बहुत देरतक ठहरी ख़ैर, अच्छा हुआ कि तुम सरीखा खूबसूरत शौहर मैंने पाया, जिसकी मुझे कभी ख़्वाब में भी उम्मीद न थी। लेकिन, प्यारे, यूसुफ ! देखना भई, ख़बरदार मलका के रूबरू इसराज़ को न खोल देना और उसके सामने मेरी तरफ देखना भी मत।"

मैंने कहा,—"तुम ख़ातिर जमा रक्खो, ऐसी बेवकूफ़ी मुझ से हर्गिज़ न होगी।"

क़िस्सहकोताह, वह चली गई औरमैं पलङ्गपर लेटकर तरह २ के खयालों में उलझ गया। न मालूम मैं कब तक उन्हीं खयालों के चक्कर में फंसा रहता, लेकिन उससे मुझे जल्द फ़ुर्सत हुई। क्यों कि

उसी वक्त मेरे कानों में एक सुरीली तान पहुंची, जो किसी नाज़नी के सुरीले गले से निकल रही थी। उस सुरीली तानकी आवाज़ को सुनकर मैं पलंग परसे उठ बैठा और कान लगाकर सुनने लगा। वह एक गज़ल थी, उस कमरेके बाहर की तरफ़ गाई जाती था। गाना तो बहुत साफ़ सुनाई देता था लेकिन वह गज़ल किस नाज़नी के गले से निकल रही थी, इसे मैं पहचान न सका। अगर नाज़रीन सुनना चाहें तो सुनलें, उस गज़ल को मैं नीचे तहरीर किए देता हूं,—

" बेक़रारी से बहुत हाल है अबतर अपना।
मिस्ल सीमाब तपां है दिले मुज़तर अपना॥

मुर्गे दिल हलक़ए गेसू में हुआ है अपना।
फंस गया दामे मुहब्बत में कबूतर अपना॥

सैकड़ों ख़ून हुआ करते हैं नाहक़ हर रोज़।
आप निकला न करें खैंचकर खंज़र अपना॥

दिलका बोसा लबेतर नहीं मिलता ऐख़िज्र।
आबे हैवां से है महरूम सिकन्दर अपना॥

नक़द दिल ज़ुल्फ़ के सौदे में गया ऐ आज़िज़।
होगया इश्क़ में नुक़सान सरासर अपना॥"

अल्लाह, यह कौन नाज़नी है, जो इस तरह अपने दिली ग़म को इस तरह ज़ाहिर कर रही है!!! या खुदा, अब तक तो इस कमरे में बाहर की कोई भी आवाज़ नहीं सुनाई दी, लेकिन आज क्या है कि यह गज़ल सुनाई दी! कहीं यह नाज़नी भी तो मेरी आशिक नहीं है और मुझे अपना इश्क़ दिखाने के लिये यह गज़ल सुना रही है!!! और जो हो, लेकिन इस गज़लकी आवाज़ उस जानिबसे नहीं आरही थी, जिधर उस परीजमाल का कमरा था, यानी जिस रास्ते से मलका और उसकी लौंडी आया जाया करती थीं।

ख़ैर, मैं देर तक कमरे में टहलता हुआ, इन्हीं बातों पर ग़ौर करता रहा, फिर आकर पलंगपर लेट रहा, लेकिन मनहूस ख़यालों ने मेरी जान न छोड़ी।

ग्यारहवां परिच्छेद ।

मैं देर तक इसी किस्म के ख़यालों में उलझा हुआ पलंग पर पड़ा रहा फिर उठा और कमरे के बगल वाली एक कोठरी में जाकर मामूली कामों से फ़ुर्सत पाई । फिर आकर मैं मसनद पर बैठ गया और शमादान को नज़दीक रख और आलमारी में से एक किताब लेकर पढ़ने लगा । देर तक मैं किताब देखता रहा, इतनेही में एक खटके की आवाज़ सुनकर मैं चौंका और देखा कि वही मेरी प्यारी और मलका की लौंडी कमरे के अन्दर आई और मेज़ पर खाना रख कर चली गई । मैं उसकी तरफ़ टकटकी बांध कर देखता रहा, पर उसने मेरी तरफ़ ज़रा नज़र न की और खाना रखकर तुरन्त वापस चली गई । मैंने चाहा कि उसे पुकारूं और कुछ बात चीत करूं लेकिन यह समझ कर ख़ामोश रहा कि देखूं यह खुद मुझसे बोलती है या नहीं । लेकिन जब वह मेरी तरफ़ बगैर देखेही चली गई तो मैं ताज्जुब करने लगा और सोचने लगा कि अभी कुछ देर पहिले तो यह मुझसे इतनी घुलघुल कर बातें कर गईथी और निकाह वो भागने के बारेमें बिल्कुल सलाह पक्की कर गईथी, लेकिन फिर तुरतही इसका दिल क्यों फिर गया कि बोलना तो दूर किनार, बगैर चारचश्म किएही वापस चली गई ! इस बात पर जितना मैं ग़ौर करता, उतना ही मुझे उस पर शक होता और मैं सोचता कि क्या असली लौंडी यही है और अभी कुछ देर पहिले जो मुझसे शादी की बात पक्की कर गई थी, वह नकली थी !

फिर मैंने सोचा कि नहीं, यह बात कभी होही नहीं सकती ! किसी ख़ास सबब से ही यह इस वक्त मुझसे न बोली होगी और अच्छा हुआ कि मैं भी इस वक्त इससे कुछ न बोला । क्योंकि इसने मुझे समझा दिया है कि,—'जबतक मैं खुद न बोलूं, मुझसे न बोलना और जब तक मैं यह न कहूं कि,—" लीजिये आपकी लौंडी हाज़िर है," तब तक मुझे असली न समझना ।'

गरज़ यह कि मैं इन्हीं बातों पर ग़ौर करता था कि इतनेही में फिर एक लड़के की आवाज़ से मेरा ख़याल बंट गया और सर उठाकर देखा तो क्या देखा कि वही परीजमाल, यानी मलका चली आरही है !

यह देख कर मैं किताब पटक कर जल्दी से उठ खड़ा हुआ और आगे बढ़ 'आदाबअर्ज़' करके बोला,—" वल्लाह, मुझे तो इतनी जल्दी आपके दीदार नसीब होने की उम्मीद न थी !"

उसने मुस्कुराकर और 'आदाब' का जवाब देकर मेरा हाथ थाम्ह लिया और कहा,—" हज़रत ! तुम 'आप आप' के सिलसिले से बाज़ न आओगे ?"

मैंने कहा,—" ख़ैर, अब ऐसी ख़ता कभी न करूंगा।"

वह बोली,—"अच्छी बात है। अच्छा, अब अपनी दूसरी बात का जवाब सुनो ! बेशक, मैंने दिन के वक्त आने का कोई पक्का वादा नहीं किया था, लेकिन मौक़ा हाथ आगया, इस लिये एक लहज़े के लिये आगई। लेकिन यह क्या, (घूम कर) अभी तुमने खाना नहीं खाया !"

मैंने कहा,—" क्या खूब ! अभी तो लौंडी खाना रखकर रवानः हुई है !"

वह,—"ख़ैर, तो पेश्तर खाना खालो।"

मैं,—"लेकिन आज तो मैं अकेला खाना न खाऊंगा।"

यह सुन कर वह हंस पड़ी और बोली,—" तो बिहतर है, चलो मैं ख़ुशी से तुम्हारा साथ दूंगी, क्योंकि अभी तक मैंने भी खाना नहीं खाया है।"

यह सुन कर मैं निहायत ख़ुश हुआ और उसे खाने की मेज़ के पास ले गया। हम दोनों आमने सामने कुर्सियों पर बैठ गए और निहायत लज़ीज़ और उम्दः खाना खाने लगे। बीच बीच में तफ़री दिल्लगी और चोज़ की बातें भी होती रहीं, लेकिन मैंने ज़ियादहतर वक्त खाने की तारीफ़ ही में बिता दिया।

ख़ाना खा चुकने के बाद हम दोनों कालीन पर आ बैठे; क्यों कि मलका ने बहुत हुज्जत की, लेकिन उसके सामने मैं मसनद पर न बैठा।

आखिर, वहभी कालीनके फर्श परहीमेरे सामने बैठगई और बोली,-

"अगर दिल चाहे तो शतरञ्ज लाऊं!"

मैंने कहा,—"क्या हर्ज है।"

इसपर उसने उठकर एक आलमारी खोली और उसमें रक्खी हुई एक घड़ीकी सुई घुमादी। फिर आलमारी बंदकर औरआकर बैठगई।

मैंने पूछा,—"घडी की सूई हिलाने से क्या मतलब निकलेगा?"

उसनेकहा,--इसका हाल मैं तुम्हें बतलाती हूं, लेकिन तुम कभी इस सूई के घुमाने का इरादा न करना।"

उसने इतना ही कहा था कि कमरे का दरवाज़ा खुला और वही लौंडी आपहुंची। उसे देखतेही परीजमाल ने कहा,--"मेवे, शराब और शतरञ्ज निकाल,।"

"जो इर्शाद," कहकर लौंडी ने एक संदली तिपाई पर सोने की तश्तरी में तरह तरह के मेवे, शराब की बिल्लोरी सुराही, ज़मुर्रद के प्याले और गजक की रकाबी क़िते से चुनदी और हाथी दांत के बने हुए शतरंज के मुहरे लाकर रख दिए।

कुल इन्तज़ाम होजाने पर बेगम ने उसकी ओर देखकर कहा,—"और ते। सब ठीक है न?"

लौंडी ने कहा,--"जी हां, हुज़ूर!"

बेगम,--"ख़ैर ते। अब तू जा और मेरी जब ज़रूरत समझियो, घड़ी की सूई हिलाकर इत्तिला दीजियो।"

"जे। हुक्म," कहकर लौंडी,फ़ौरन वहां से चली गई और परीजमाल ने शतरंज बिछाकर कहा,—"लो, मेवे के साथ थोड़ी थोड़ी शराब भी चलती जाय और खेल भी होता रहे।"

मैंने कहा,—" तो बिस्मिल्लाह कीजिए।"

यों कहकर मैंने प्याला भरकरउसे दिया,जिसेपीकरउसने प्याला भरकर मुझे दिया! फिरतो थोड़ी मेवा खाखाकर शराब हम दोनों पीने लगे और शतरंज शुरू हुई। लेकिन यह खेल इतना बेढब है कि

इसके खेलने वालेकी अजीब हालत होजाती है और हर तरफसे फैले हुए दिल को बटोर कर बगौर खेल खेलना पड़ता है। यही वजह थी कि मेरा दिल उस वक्त इस काबिल न था कि मैं बगौर शतरंज खेल सकता, इसलिये मुझे उम्मीद कामिल थी कि मैं हार जाऊंगा; लेकिन ऐसा न हुआ और एक घंटे के बाद वह बाजी मैंने जीती ! मैंने खेल के वक्त इतना जरूर समझा थाकि मलका मुझसे अच्छा खेलतीहै, लेकिन फ़िर वह क्यों हारी ! इसी बात पर मैं ग़ौर करने लगा।

मैंने सोचा कि या तो इसने जान:बूझकर बाजी हारी है, या इस वक्त इसका भी दिल ठिकाने नहीं है ! ख़ैर जो हो; बाजी ख़तम होने बाद उसने कहा,—"वल्लाह, तुम तो दोस्त ! निहायत उम्दः शतरंज खेलते हो !"

मैंने कहा,—"अजी, लाहौल पढ़िये ! भला, बंदा इस खेल को क्या जाने, तिसपर आपके आगे ! यह तो आपकी ऐन मेहरबानी थी कि आपने जान बूझकर बाजी हार दी। "

इस पर मलकाने एक क़हक़हा लगाया और कहा,—"अल्लाह ! हजरत को बातें बनाने तो खूब आता है ! लेकिन, जनाब, यह तो बतलाइए कि अगर आप इसी आरामोचैन के साथ हमेशः अपनी जिन्दगी बसर करना चाहेंतो मैं समझती हूंकि बहुतही बिहतर हो!"

मैंने कहा,—"आह, मुझसे फिर गलती हुई ! मुआफ़ करना ! तोबः तौबः मैंने फिर 'आप' कह डाला ! "

वह बोली,—"खैर मेरी बातका जबाब दो। "

मैंने कहा,—"माहेलका यह मेरी खुश किस्मती का बाइस है कि तुम मुझ नाचीज़ पर इतनी मिहरबानी रखती हो! लेकिन सुनो और सोचो तो सही कि लाख आरामोचैन रहने पर भी मैं उस मुर्दे से कहीं गया, बीता हूं, जो कब्र में पड़ा सो रहा है और कभी सूरज वो चांदका उजाला नहीं देखसकता। तुम्हारी यह बिहिश्तसी ख़्वाबगाह भी मेरे लिये जेलखाने से किसी क़दर कम नहीं है क्या सोनेकी तौक़

बेड़ी, तौक बेड़ी नहीं कही जासकती ऐसी हालत में यह आराम वैसाही है, जैसा कि सोने के पिंजड़े में बन्द किए हुए जानवर पाया करते हैं। हां, अगर आज़ादी के साथ मुझे सिर्फ़ तुम्हारा दीदार ही नसीबहो और आबोदानेके लिये मैं दरदर मारा फिरूं तो इस आराम से उस आज़ादी के आराम को मैं करोड़ दर्जे बढ़कर समझूंगा।"

मेरी बातों को वह शायद ग़ौर से सुनती रही; क्यों कि जब तक मैं कहता रहा, वह सन्नाटा मारे हुई टकटकी बांधकर मेरी तरफ़ देखती रही; बाद मेरी बात ख़तम होने के उसने कहा,—

"प्यारे यूसुफ़, यह तुम्हारा फर्माना बजा है और मैं भी यही चाहती हूं कि तुम आज़ाद कर दिये जाओ।

मैंने कहा,—"अल्लाह, वह कौनसा दिन होगा, जब मैं खुलीहुई ज़मीन में आज़ादी से घूम सकूंगा।"

उसने कहा,—"वह दिन बहुत जल्द आया चाहता है। यानी अब सिर्फ़ तुम्हारे ही हाथ आज़ादी है!"

मैंने जल्दी से कहा,—"मेरी आज़ादी मेरे हाथ क्योंकर है?"

उसने कहा,—"सुनो मैं बतलाती हूं ——"

वह इतनाही कहने पाई थी कि घड़ी की घंटी बज उठी, जिसके बजते ही वह उठ खड़ी हुई और बोली,—"दोस्त इस वक्त अब मैं जाती हूं। अगर मौका हाथ आया तो रात को फिर मुलाकात करूंगी।"

मैंभी उठ खड़ा हुआ और बोला,—"आह, अफ़सोस, कैसे बेमौके घंटी बजी! अफ़सोस, अभी खुदा को मुझे इस कैद से रिहा करना मंज़ूर नहीं है।"

उसने कहा,—"नहीं, नहीं, ऐसी बात नहीं है। मैं फिर मिलकर तुमसे इस बारे में बातें करूंगी।"

मैंने कहा,—"मगर तुम जहां तकहो जल्द आना, क्योंकि आज की बात से मैं बहुत ताज्जुब में हूं।"

उसने कहा, "घबराओ नहीं; मैं जल्द आनेकी कोशिश करूंगी।"

यों कहकर और हाथ मिलाकर वह चलने लगी तो मैंने कहा,—"इस घड़ी की सुई घुमाने की बात तुमने न बतलाई ?"

उसने कहा,—"इस बात को भी मैं फिर तुमसे कहूंगी, इस वक्त अब एक लहज़ः मैं नहीं ठहर सकती।"

यों कह कर वह तेजी के साथ उस कमरे से बाहर होगई और किवाड़ ज्योंका त्यों बन्दहो गया। मैं उसी सजे हुएकमरे में अकेला रह गया,—लेकिन अकेला क्यों, मेरे हमेशा के साथी—'रंजोअलम' तो मेरे साथ थे ही!!!



ग्यारहवां परिच्छेद।

परीज़माल के जाने के बाद मैं अपनी किस्मत को कोसता हुआ मसनद पर आ बैठा और शमादानके उजाले में उसी किताबको फिर खोलकर पढ़ने लगा- लेकिन इस वक्त दिल न लगा और लाचार हो मैंने किताब हाथसे धर दी। देर तक मैं अपनी निराली उधेड़ बुन में लगा रहा और फिर मसनद पर ही लेट रहा। शायद मैं कुछ देरतक सोता रहा; इतने ही में मेरे तलवे में किसी ने गुदगुदाया।

मैं चट पैर खैंच कर उठ बैठा और देखा कि सामने वही खूबसूरत लौंडी बैठी हुई है!!!

उसने अपनी कातिल आंखोंसे मुझे बेतरह घायल करके कहा,—"तुम तो दोस्त! खूब सोना जानते हो!"

मैंने कहा,—"आखिर;क़ैद और तनहाई की हालत में सिवा सोने के और आराम क्या दे सकता है?"

उसने कहा;—"लेकिन; मैंने तुम्हारी नींद में खलल पहुंचाकर अच्छा न किया।"

मैंने कहा;—"नहीं; मैं तो तुम्हारी राहही तकता था! यह बहुत अच्छा हुआ कि तुम आगईं!"

उसने कहा;—"लेकिन तुम्हें पेश्तर इस बात की शिनाख़्त कर लेनी थी कि मैं असली हूं या नकली!!!"

मैंने कहा,—"आह, शिनाख़्त! हां, ठीक है! मुझे तो इस बात की याद भी न रही, लेकिन इसमें मेरा क्या कुसूर है! वह जुमलातो तुम्ही को कहना चाहता था।

उसने कहा,—"लेकिन अगर मैंने उस जुमले के कहने में गलती की थी तो तुम्हें मुनासिब थाकि जब तक मैं वह जुमला न कहलेती, तुम मुझ से हर्गिज़ बात न करते!"

मैंने कहा,—"हां यह मेरी गलती ज़रूर है।

उसने कहा,—"यही सबब है कि तुम्हारे इम्तहान लेने की नीयत से ही मैंने पेश्तर वह जुमला न कहकर बातों का सिलसिला शुरू कर दिया था।"

इसके बाद उसने वह जुमला कहा, जिससे मैंने जाना कि वह असली है, नक़ली नहीं। यह जान कर मैंने कहा,—"क्यों, बीबी खाना रखने जब तुम आई थीं, तब तो तुमने अच्छी तोतेचश्मी ज़ाहिर की थी।"

यह सुन कर वह ज़रासा मुस्कुराई और कहने लगी,—"आख़िर क्या करती! अगर मैं ज़रा भी तुमसे नज़र मिलाती तो मेरा दिल मेरे कब्ज़े में न रहता और शायद तुम भी मुझसे कुछ छेड़ छाड़ करने लग जाते, लेकिन वह मौक़ा ऐसा न था कि उस वक्त कुछ दिल्लगी मज़ाक किया जाता; क्योंकि बेगम यहां आनेके लिये तैयार थीं। यही वजह है कि इस वक्त मैंने अपने नन्हे से कलेजे पर सिल रखकर उस वक्त तुम्हारी तरफ़ नज़र नहीं की थी! लेकिन, प्यारे यूसुफ़! मैं इस बात से निहायत खुश हुई कि तुम ने उस वक्त अपने कौल बमूजिब मुझसे एक भी बात न की और जब मैं बेगम को बुलाए हुए आई थी उस वक्त भी तुम ने मेरी तरफ़ निगाह नहीं डाली थी।"

मैंने कहा,—"आख़िर, मुझे अपने कौलोक़रार और तुम्हारी मुहब्बत का भी तो पूरा पूरा ख़याल है!"

वह,—"ठीक है, तुम्हारी इसी दियानतदारी पर तो मैं हज़ार जान से फ़िदा हो रही हूं।"

मैं,—"तो अब देर क्यों कर रही हो! आओ यहां से निकल चलें और ज़िन्दगी वा जवानी का मज़ा चक्खें।"

उसने कहा,—"दुरुस्त है, मैं उसका पूरा पूरा इन्तज़ाम कर चुकी हूं और ख़ुदा ने चाहा तो आजही शब को यहां से तुम्हें अपने हमराह लेकर भाग चलूंगी।"

इतना सुनते ही मैंने जोश में आकर उसे ज़ोर से मसनद

पर खैंचकर कलेजे से लगा लिया और उसके गुलाबी और मुलायम गालों के बोसे लेने लगा। उसने भी इस गुस्ताख़ी का भरपूर बदला चुकाया और फिर मुझसे अलग हो और मसनद के नीचे उतर कर कहा,—"आह, आज तुमने मुझे बेतरह ठगा!"

मैंने कहा,—"हां, ठीक है; उलटा चोर कोतवाल को डांटे! लेकिन तुम मसनद के नीचे क्यों जा बैठीं?"

वह,—"यह जगह बेगम के बैठने की है।"

मैं,—"लेकिन इस वक्त वह यहां है कहां?"

वह,—"चाहे नहो, लेकिन यह मुझे मुनासिब नहीं कि तुम्हारे बराबर बैठूं।"

मैं,—"वल्लाह, ये नखरे रहने दो। आख़िर, इतना हिजाब कब तक कायम रहेगा?"

वह,—"जब तक बाक़ायदे निकाह न होलेगा।"

यों कहकर उसने एक क़हक़हा लगाया, इतनेहीमें वह घंटी बज उठी, जिसके सुनतेही वह घबराकर उठ खड़ी हुई और मेरे बहुत कुछ पूछते रहने पर भी एक बात का भी जवाब न देकर वह तेज़ी के साथ कमरे के बाहर निकल गई।

दरवाज़ा ज्योंका त्यों बन्द होगया और मैं फिर तनहां रह गया। घंटी की आवाज़ सुनतेही, ज्योंही वह घबरा कर उठी थी, मैंने उससे नीचे लिखे कई सवाल किए थे,—

"हैं, यह घंटी किसने बजाई?"

"क्या तुम बेगम के ज़ाहिर में यहां आई हो?"

"यह घंटी किस हिकमत से बजती है?"

"अब कब मुलाक़ात होगी?"

"अगर, तुम बेगम की भेजी हुई आई हो तो किस काम के लिये आई हो, मुझे बतलादो, जिस में अगर बेगम पूछे तो मैं उससे वही बात बताऊं!"

नज़रीन ! येही सवालात मैंने उससे किए थे, लेकिन उसने शायद मेरी एक बात भी न सुनी होगी, क्यों कि वह निहायत तेज़ीके साथ उठी और बेतरह घबराकर मेरे हाथ से अपनी ओढ़नी के दामन को छुड़ाती हुई भाग गई।

उस के जाने पर फिर मैं पहिले की तरह उलझनों में उलझ गया और सोचने लगा कि यह क्या माज़रा है।

यह क्या माज़रा है कि बेगम भी मुझे आज़ाद करना चाहती है और लौंडीभी,लौंडो जिस तरहासे आज़ाद करना चाहतीहै वहतो मैं उसकी ज़ुबानी सुन चुका हूं, मगर बेगम का क्या इरादा है, इसे भी एक मर्तबः ज़रूर सुन लेना चाहिये ! शायद अगर बेगम का तरीका लौंडी से अच्छा हो तो मैं ऐसी ज़रदार बेगम को छोड़ कर एक ना चीज़ लौंडी के फंदे में क्यों फसूं ! क्योंकि गो. यह लौंडी खूबसूरत है और मुझसे मुहब्बत भी रखती है, लेकिन बेगम की खूबसूरती या दौलत को वह नहीं पासकती। मैं लौंडी से सिर्फ़ आज़ादी पाने की लालच से मुहब्बत कर रहा हूं, अगर बेगम की आज़ादी का तरीका उमदः हो तो मैं उसी को कबूल करूंगा और लौंडी को भी किसी ढबसे नाराज़ न करके अपने कब्ज़े में करूंगा, क्योंकि इसे नाराज़ करने में मेरी बिहतरी नहीं है, तो मैं जबतक बेगम का इरादा जान न लूं, इस लौंडी के साथ हर्गिज़ न भागूंगा। मैं पलंग पर पड़ कर तबीयत नासाज़ होने का नखरा करता हूं और आज शब को खाना न खाऊंगा। क्योंकि बेगम के साथ खूब भर पेट खाना खा चुका हूं। लाओ, तब तक बची हुई मेवा और शराब को भी खा पी डालूं।

इसी किस्म की बातें दिलही दिल में सोचकर मैंने मेवे खाकर शराब पी डाली और फिर सोचने लगा—

लेकिन अगर बेगम मुझे इस शर्त पर आज़ाद करे कि जब वह चाहे मुझे किसी छिपे रास्ते से महल के अन्दर बुलावे तो मैं इस तरीके को मंज़ूर न करूंगा, क्योंकि इस में एक दिन मेरा भी वही नतीजा होगा, जैसा कि मेरे हाथ से नज़ीर का हुआ है ! हां,

वह खुद अगर मेरे घर आकर मुझसे मिलना मंज़ूर करेगी तो मैं खुशीसे उसकी दोस्ती कबूल करूंगा और आज़ाद होकर इस लौंडी —इस खूबसूरत लौंडी को अपनी बीबी बनाऊंगा। मैं समझता हूं कि इस तरीकेसे दौलत खूब हाथ आएगी और इस बातको यह लौंडीभी शायद दिलसे पसंद करेगी। वह चुपचाप यहांसे निकलकर मेरेयहां आरहेगी और मैं उसे छिपाकर अपने यहां रक्खूंगा। लेकिन अगर इस लौंडीका कहना सचहो और कंबख्त आसमानीके मारे मैं इस शहरमें बेखटके न रह सकूं तो फिर लाचार लौंडी ही की बात मानना पड़ेगी और मैं उसके साथ किसी गैर मुल्क में, जैसीकि सलाह उस के साथ हुई है, भाग जाऊंगा और चैनसे अपनी औकात बसरी करूंगा।

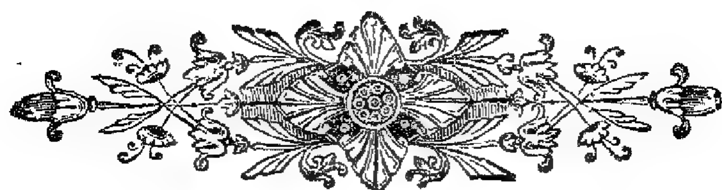
आह,मैं यह क्या अनाप शनाप बकने लगा! ओफ़! नाज़रीन! उस वक्त मैं बिलकुल पागल होरहा था,तभी इतनी बातें मैं बकगया। आखिर, इन फ़ज़ूल बातों में सिर खपाने से मैं बाज़रहा और पलंग पर जाकर लेट रहा। और सोचा कि अगर यह लौंडी आजही मुझे भागने के लिए कहेगी तो मैं बीमार होने का बहाना करके इनकार कर जाऊंगा। लेकिन, जब कि मैं इस बला की कैद से छूटकर खुदा के फ़ज़ल से आज़ाद होताहूं तो फिर क्यों न जहांतक जल्द होसके, यहां से भागूं। यहां से भागकर उस लौंडी, उसकी दौलत, अपने इल्म और अपनी किसमत पर सब्र करूं और आफ़त की क़ैद से छुटकारा पाऊं!!!

आह, फिर वही ख़याल! लाचार, घबरा कर मैं पलंग से नीचे उतर पड़ा और उस अलमारी के पास गया,जिसमें वह सजीव घड़ी थी। मैंने उस आलमारी को खोला और बेगम के मना करनेपर कुछ अमल न करके उसकी सूई को तेज़ी के साथ घुमा दिया!!!

फिर मैं कमरे में चहलकदमी करने लगा और इस बात के जानने के लिये तैयार हुआ कि देखूं, इस सुई के घुमाने का क्या नतीजा होता है!!!

क्योंकि इतना मैंने बग़ैर बेगमके बतलाएही जान लियाथा कि हो न हो, इस घड़ी का तार बेगम के ख़ास कमरे में लगा हो ! पस ऐसीही एक घड़ी वहांभी मौजूद हो, और इसमें हिकमत यह रक्खी गई हो कि यहां की सूई घुमाने से वहां की घड़ी की घंटी बजती हो और वहां की सूई घुमाने से यहां की घंटी।

क़िस्सह कोताह, अपने दिल ही दिल में उस घड़ी की हिकमत को सही या ग़लत, जो कुछ हो, समझ कर मैं उस कमरे में टहलने लगा और दिलही दिलमें यह कहने लगा कि देखूं अब इस सूई के घुमाने का क्या नतीजा निकलता है ! ! !



बारहवां परिच्छेद।

देरतक मैं कमरे में टहलता और तरह तरह के ख़यालों में ग़ोते खाता रहा, लेकिन उस कमरे में बेगम या उसकी लौंडी, इन दोनोंमें से एक भी न आई। योंही जब एक घंटे से ज़ियादह वक्त गुज़र गया तो मैं बहुत ही घबराया और मैंने चाहा कि फिर जाकर उस घड़ीकी सूई हिला दूं, लेकिन ऐसा मैं न कर सका; क्योंकि जिस आलमारी में वह घड़ी थी, वह (आलमारी) न जाने क्यों कर हज़ार कोशिश करने पर भी मुझसे न खुल सकी। तब मैंने दिलही दिल में यह तसौवर किया कि सुई घुमाने की आहट उस परीज़माल को ज़रूर लगी है और तब उसने किसी हिकमत से इस आलमारी को भीतर से बंद कर दिया है! यह जान कर मैं दिलही दिल में निहायत शर्मिन्दः हुआ और अफ़सोस करने लगा कि नाहक मैंने ऐसी बेव-कूफ़ी क्यों की और उसके बग़ैर हुक्म, मना करने पर भी सुई क्यों घुमाई! लेकिन अब तो जो तीर अपने हाथसे निकल गया था, उसके वास्ते अफ़सोस करना लाहासिल समझ कर मैं मसनद पर बैठकर किताब देखने लगा, मगर दिल न लगा और कुछ देरतक इधर उधर के पन्ने उलट पुलट कर मैंने किताब धरदी।

मैं यही समझे हुए था कि ठीक वक्त पर जब खाना लेकर वह लौंडी आएगी तो उसी से इस सुई के घुमाने के बारेमें कुछ पूछताछ करूंगा और अगर वह मुझे लेकर आजही यहां से भागना चाहेगी तो अब बग़ैर कुछ आगा पीछा सोचे उस के हमराह होऊंगा। लेकिन अफ़सोस! मेरे अंदाज़ से, क्योंकि घड़ी वहांपर नथी, रात आधीसे ऊपर पहुंची, मगर वह परीज़माल या उसकी लौंडी खाना लेकर न आई। लेकिन मुझे इस बातकी पूरी उम्मीद थीकि उदूलहुक्मी करने, यानी मना करने पर भी सुई घुमाने से नाराज़ होकर अगर वह परीजमाल शायद न आएगी तो उसकी लौंडी तो ज़रूरही आएगी!

लेकिन अफ़सोस, वह भी अभी तक न आई, जिसने आज ही मुझे लेकर यहां से भागनेका पक्का इरादा मेरे सामने ज़ाहिर किया था !

मैं बहुत देरतक जागा किया, लेकिन उन दोनों नाज़नियों में से जब एक भी न आई और मुझेभी नींदने बेतरह सताया तो मैं लाचार हो, पलंग पर जाकर सो रहा और जब भरपूर नींद ले लेने पर मेरी नींद खुली तो उस वक़्त दिन, मामूली से बहुत ज़ियादह चढ़ आया था। मैं झट पट मामूली कामोंसे फ़ुर्सत पाकर कमरेमें टहलने लगा और देर तक चहलक़दमी करता रहा, लेकिन उन दोनों में से किसी की सूरत नज़र न आई।

आह, तब तो मैं अफ़सोस कर और हाथ मल कर रह गया, लेकिन कोई न आया! मुझे उम्मीद कामिलथी कि चाहे बेगम नाराज़ी के सबब यहां बिल्कुल न आवे, लेकिन उसकी लौंडीतो खानापहुंचाने ज़रूरही आयगी; लेकिन नहीं, वहभी न आई और उसकी राह तकते तकते दोपहर गुज़र गया। उसवक्त मुझे भूख शिद्दतकी लगीहुई थी, इसलिये मैं उस संदली तिपाई की तरफ़ बढ़ा, जिस पर मेवे और शराब की सुराही रक्खी हुई थी लेकिन, अफसोस, उनमें मेवे का एक दाना और शराब की एक बूंद भी न थी। यह देखकर मैंने दिल ही दिल में यह तसौवर किया कि मुमकिन है कि कल नशेके आलम में मैंने ही कुल मेवे वो शराब खा पी डाली होगी।

इसके बाद मैं पानीकी सुराहीके पास गया; मगरवहभी खालीथी और उसमेंभी एकबूंद पानीका नाम नथा। या खुदा! इन नाज़नियों पर खुदाकी मार! तौबःतौबः! इसतौतचश्म और क़ातिल औरतों से खुदा बचावे कि ये ज़रासी बातमें इस क़दर आंखें बदल लेतीहैं कि जिसका दिल से प्यार करें, उसी के खूनके पीने के वास्ते तैयार हो जाती हैं। अफ़सोस! कहां इस क़दर मुहब्बत कि 'तुम' छोड़कर 'आप' न कहो; और कहां ऐसी बेमुरौवती कि अब ज़रासे क़ुसूरवाली सुई चुभा देनेसे मैं अब भूखों प्यासों के मारा जाता हूं!!!

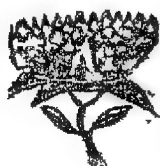
अल्लाह, इस जिन्दगीसे तो मौत करोड़ दरजे बढ़कर आराम देने वाली है! वे लोग बहुत ही खुश-किस्मत हैं, जो बड़े आरामके साथ मिट्टी के अन्दर टांग फैलाये हुए सोरहे हैं। आह, अब मैं क्या करूं और क्यों कर अपने तईं इस बला से छुड़ाऊं।

नाज़रीन, मैं तमाम दिन इसी उधेड़बुन में लगारहा और दिलही दिल में इस बातपर ज़ोर करता रहा कि गोल इमारतमें चहारदरवेश नामी किताब के अन्दरसे जिस मज़मून का एक ख़त मैंने पाया था, मालूम देता है कि मेरी जान भी अब उसी सङ्गदिली से लीजायगी और बग़ैर आबोदाने के तड़प तड़पकर मरनेके बाद मेरी लाश उसी गोल इमारत के कूएं में, या उस तालाब में; जिसमें कि एक रोज़ मैं डुबाया गया था, डालदी जायगी!!!

आह, इस ख़याल के दिल में पैदा होते ही मेरी रूह कांप उठी और सामने खड़ी २ मुसकुराती हुई अजल मेरा मुंह चिढ़ाने लगी। अभीकुछ देर पहिले मैं खुदासे मौत मांगरहा था, लेकिन जब वाकई मौतका ध्यान हो आया तो मेरी रूह कांप उठी और मैं निहायत आजिज़ी के साथ अपनी मदद के लिये खुदा को पुकारने लगा।

देखते देखते शामभी हुई, लेकिन अबतक मैं बग़ैर आबोदाने के सो रहा और मुझे एक शायर की ग़ज़ल का वह मिसरा याद आया कि,— "इस कफ़स के कैदियों को आबोदाना है मना"!!!

योंही जब तड़पते तड़पते आधी रात भी ढल चली तो मैं अपनी अजल को गले से लगाने के लिये तैयार हुआ और पलंग पर आकर पड़ रहा!!!



तेरहवां परिच्छेद ।

दूसरे दिन जब मैं सोकर उठा और मामूली कामोंसे मैंने फुर्सत पाई तोदेखा कि लज़ीज बोताज़ा खाना तैयार है।यह देखकर मैंनिहायत खुश हुआ और खुदा का शुक्रिअदा करके बड़े शोकसे मैंने खाना खाया। मारे भूख के पेटमें चूहे उछल रहे थे, इसलिये मैंने खूब नाक तक ठूंसकर खाना खाया और बाद इसके खुशबूदार पानी पीकर पेटपर हाथ फेरने लगा ।

इसके बाद मैं खानेकी मेजके पाससे उठकर मसनदके पास गया, वहां आज मैंने एक नई बात देखी। यानी ताज़ा किया हुआ हुक्का रक्खा हुआ था और भरी हुई सिलम तयार थी। मैं सच कहरहा हूं कि जब मैं सोकर उठा था, उस वक्त वहांपर हुक्का हर्गिज नथा; क्यों कि सोकर उठने के बाद. मैं मसनद पर आकर बैठा था, लेकिन जब मैं मामूली कामों से फुर्सत पाकर कमरेमें वापस आया था उस वक्त सिवा खानेकी मेजके मेरा खयाल किसी दुसरी तरफ नहीं गया था। यही वजह है कि मैंने हुक्केको नहीं देखा था। मैं जहां तक समझता हूं, हुक्का भी उसी वक्त ताज़ा करके रक्खा गया होगा, जब खाना लाया गया होगा !

यह एक नईबात थी,क्योंकि जबसे मैं महलसरा के अन्दर आया हूं आज पहलाही मौका ऐसा आया है कि हुक्का मुझेनसीब हुआ है। गो, मुझे इसकी जियादह आदत नथी और न मैं इसका आदी था, वरन मैं खुद इसका उस वक्त आसानी से इन्तजाम कर सकता, जब मैं पुतलों वाली कोठरी में था और जहां पर मुझे हर एक बात का आराम था। खैर मैं,गो,हुक्के का शौकीन न था,लेकिन इससे मुझे कतई इन्कार भी न था, इसलिये दो चार कश मैंने शोक से लगाये और निहायत नफ़ीस और खुशबूदार तम्बाकूने मेरादिल फड़काद़िया

कुछ देरतकतो मैं हुक्का गुड़गुड़ाता रहा,फिर मुझे शरारत सूझी और उठकर मैं उस आलमारी के पास पहुंचा, जिसमें वह अजीब

खड़ी थी। लेकिन वह आलमारी बंद थी, जिसे मैं हज़ार कोशिशें करने पर भी न खोल सका। उसमें बहुत कुछ देखभाल करने पर भी कोई खटका या ताला मुझे नज़र न आया और न यही मेरी समझ में आया कि यह किस हिकमत से बन्द की गई है!

आखिर, जब मैं उसे खोल न सका तो उस कमरे के हरएक दर-वाज़े की जांच करने लगा, लेकिन वे सब बंद थे और सिवा उस कोठरी के, जिसमें जाकर मैं हाथ मुंह धोता और गुसल करता था और कोई दरवाज़ा खुला न था। उस कोठरी में भी, जिस में कि मामूली कामों से फुर्सत पाता था तीन तरफ संगीन पत्थरों की दीवारें बनी हुई थी लेकिन फिर क्यों कर उसकी सफाई होती थी और कौन किधर से आकर पानी भर जाया करता था, इसका मतलब मेरी समझ में न आया।

इतना तो मैंने जरूर समझा था कि इस कोठरी मेंआने की राह इसी पत्थर की संगीन दीवार से ही ताल्लुक रखती होगी, लेकिन मैंने बहुतेरा सिर खपाया, लेकिन मेरी समझ में कुछ न आया।

मैं किस्से कहानियों में तिलस्म की बहुतेरी बातें पढ़चुका था इसलिये मुझे शाहीमहलसरा की इमारतों के तरीके देख कर कुछ जियादह ताज्जुब न हुआ, लेकिन इतना जरूर हुआ कि क्या इस किस्म की इमारतों के बनवाने का सिर्फ यही मतलब है कि मज़लूमों को बेगमें मनमाना जुल्म करें और मुझ सरीखे बदनसीब इस बेरहमी के साथ सताए जाया करें!!!

आखिर, मैं देर तक कमरे में टहला किया, फिर पलंग पर जाकर लेटा, बाद उठकर मसनद पर बैठा और किताब देखने लगा और योंही सारा दिन बर्बाद होगया। शाम हुई, मैंने चिराग़ रोशन किया और वहशियों की तरह कमरे में देर तक टहलता रहा फिर मैंने दिल ही दिल में यों सोचा कि अब पलंग पर पड़ कर सोने का बहाना करना चाहिये और जागते रहकर यह देखना चाहिये कि रात

के वक्त आज कोई खाना पहुंचाने आता है या नहीं! गो,मुझे भूख न थी, क्योंकि दिन के वक्त मैंने इस क़दर पेट भरा था कि अब दुबारे खाने की मुतलक़ ज़रूरत न थी, लेकिन सिर्फ़ इसी ख़याल से मैंने यह बात सोचीकि देखूं इस वक्त कोई खाना लेकर आता है;या नहीं!

आख़िर ख़ुदा का नाम लेकर मैं पलंग पर जा लेटा और आधी आंखें बन्द करके उस दरवाज़े की तरफ देखता रहा, जिधरसे बेगम और लौंडी आया करती थीं। लेकिन अफ़सोस! मेरा सोचना सब फ़ुज़ूल हुआ और खाना देने तो क्या, कोई सुबह के खाने के जूठे बरतन उठाने भी न आया! लाचार, आधीरात तक मैं सिर मारकर सो रहा और सुबह जब सोकर उठा तो देखा कि मेज़के ऊपर ताज़ा खाना रक्खा हुआ है!!!

यह देखकर मुझे निहायत गुस्सा आया और मैं उठकर मसनद पर जा बैठा और कलमदान में से एक परचा कागज़ का लेकर उस पर यह लिखा कि,—" जब तक मेरी ख़ता मुआफ़ न की जायगी और मुझे आपका दीदार नसीब न होगा,मैं अबसे खाने में हाथ भी न लगाऊंगा और बग़ैर आबोदाने के तड़प २ कर मर जाऊंगा।"

बस, यह लिख कर उस पुरज़े को मैंने खाने की रकाबी में रख दिया और गुसल करने के वास्ते कोठरी में चला गया। वहांसे जब मैं एक घन्टे के बाद वापस आकर मसनद पर बैठा तो मेरी नज़र कलमदान पर रक्खे हुए एक परचे पर पड़ी। वह मैंनेउसे उठा लिया और देखा तो उसमें सिर्फ़ इतना ही लिखा था,—

" तुम्हारी शरारत का यह नतीज़ा है, तुम्हारी उदूलहुक्मी का यह बायस है और तुम्हारी गुस्ताख़ी का यह इनाम है कि तुमसे कत्तई किनारा किया गया। अब तुम किसीके दीदार देखने या इस क़ैद से छुटकारा पाने की ताज़ीस्त उम्मीद न रक्खो और याद रक्खो कि चाहे तुम बग़ैर आबोदाने के तड़फ तड़फ कर मर भी जाओ, लेकिन इससे तुम्हें कोई फ़ायदा न होगा और भूख वह चीज़ है कि इन्सान उसे किसी तरह बर्दाश्तही नहीं कर सकता।"

मैंने उस ख़त के पढ़तेही मारे गुस्सेके टुकड़े टुकड़े कर डाले और लात मार कर खाने के सामान को मेज़के ऊपर से फ़र्शपर फेंक दिया। मैंने भी दिलही दिल में इस बात का पक्का इरादा कर लिया कि देखूं आन आनेपर इन्सान क्योंकर आबोदाने से किनारा करता और खुशी से अपनी जान दे डालता है!

बस, पक्का इरादा करके, यानी मरने के लिये बिल्कुल तयार हो कर मैं कमरे के फ़र्शको उलट कर ज़मीनमें बैठ गया और कुल कपड़े उतार कर सिर्फ़ एक लुंगी रहने दी। उस वक्त मुझे निहायत आराम मालूम हुआ, जब मैं खुदा की याद में मशगूल हुआ और तहे दिल से उस पाक परवरदिगार की इबादत करने लगा। फिर किधर दिन जाता है किधर रात जाती है, इसकी कुछ ख़बर मुझे न रही! कमरे में अंधेरा है, या रोशनी की गई है, इसकी तरफ़ मेरी ज़रा तवज्जह न थी और न इसी बात का मुझे उस वक्त खयाल था, कि मैं कौन हूं, कहां हूं, किधर हूं, क्या कर रहा हूं, किस हालत में हूं और मेरी दिली ख्वाहिश क्या है!!!

इसी तरह खुदा का इबादत करते मुझे कै दिन गुज़रे, इस की मुझे कुछ भी ख़बर न रही। इतने ही में मैं क्या देखता हूं कि कोई शख्स मेरे कंधे पर हाथ रखकर यों कह रहा है कि,—"अय अज़ीज़ यूसुफ़! क्यों नाहक अपनी जान खोकर खुदाके गज़बमें पड़ा चाहता है! उठ, नहा, धो, खा, पी, और सब्र के साथ अपनी किस्मत का तमाशा देख! इस मौके पर ज़िद करने से सिवा नुकसान के फ़ायदा कुछ भी तेरे हाथ न लगेगा। ओह, आज चार रोज़ हुए कि तूने एक क़तरा पानी भी अपने मुंहमें नहीं डाला। यह तेरी सरारत वेवकूफी और हिमाकत है।"

नाज़रीन चाहे, इस बात पर यकीन करें या न करें, लेकिन मैं सच कहता हूं कि मैंने ऊपर लिखी हुई बात सुनकर आंखें खोलदीं